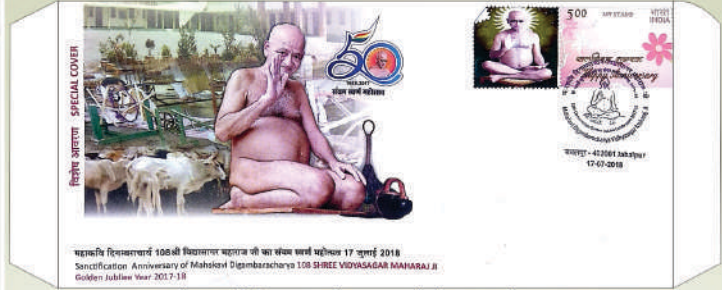


इस विशेष आवरण को संत शिरोमणि दिगम्बरचार्य श्री विद्यासागर जी मुनि महाराज के 50वां संयम स्वरूप महोत्सव के उपलक्ष्य में सोनी जी की नसियां मार्ग, अजमेर राजस्थान के माध्यम से दिनांक 30 जून 2018 को राजस्थान डाक परिमण्डल भारतीय डाक विभाग के परिमण्डल शाखा द्वारा 5/- रुपये में जारी किया गया।



महाकवि दिगम्बरचार्य 100वीं विद्यासागर महाराज जी का संयम स्वरूप महोत्सव 17 जुलाई 2018
Sanctification Anniversary of Mahatma Dharma Darshan Darshan 100 SHREE VIDYASAGAR MAHARAJ JI
Golden Jubilee Year 2017-18

संकलन - मुनिश्री अभयसागरजी, प्रभातसागरजी एवं पुण्यसागरजी महाराज

इस तरह की और भी जानकारी इस लिंक पर देखें व पढ़ सकते हैं - knowledge.sanskarsagar.org

दि. वार	तिथि	नक्षत्र	तीर्थकर कल्याणक
फरवरी 2021			
16 मंगलवार	पंचमी	रेवती	17 फरवरी : भगवान विमलनाथ ज्ञान कल्याणक
17 बुधवार	षष्ठी	अश्विनी	21 फरवरी : भगवान अजितनाथ तप कल्याणक
18 गुरुवार	षष्ठी	भरणी	22 फरवरी : भगवान अजितनाथ जन्म कल्याणक
19 शुक्रवार	सप्तमी	कृत्तिका	24 फरवरी : भगवान अभिनन्दननाथ जन्म तप कल्याणक
20 शनिवार	अष्टमी	रोहिणी दि/रा	25 फरवरी : भगवान धर्मनाथ जन्म तप कल्याणक
21 रविवार	नवमी	रोहिणी	02 मार्च : भगवान पद्मनाभ मोक्ष कल्याणक
22 सोमवार	दशमी	मृगशिरा	04 मार्च : भगवान सुपाश्वनाथ ज्ञान कल्याणक
23 मंगलवार	एकादशी	आर्द्रा	05 मार्च : भगवान सुपाश्वनाथ मोक्ष कल्याणक
24 बुधवार	द्वादशी	पुनर्वसु	05 मार्च : भगवान चन्द्रनाथ ज्ञान मोक्ष कल्याणक
25 गुरुवार	त्रयोदशी	पुष्य	07 मार्च : भगवान पुष्पदन्त गर्भ कल्याणक
26 शुक्रवार	चतुर्दशी	आश्लेषा	09 मार्च : भगवान आदिनाथ ज्ञान कल्याणक
27 शनिवार	पूर्णिमा	मघा	09 मार्च : भगवान श्रेयासनाथ जन्म तप कल्याणक
28 रविवार	प्रतिपदा/द्वितीया पूर्वाफाल्गुनी		10 मार्च : भगवान मुनिसुव्रतनाथ मोक्ष कल्याणक
मार्च 2021			
1 सोमवार	तृतीया	उत्तराफाल्गुनी	12 मार्च : भगवान वासुपुत्र जन्म तप कल्याणक
2 मंगलवार	चतुर्थी	चित्रा	
3 बुधवार	पंचमी	स्वाती	16 फरवरी : दशलक्षण, पुष्पाजलि व्रत प्रारंभ
4 गुरुवार	षष्ठी	विशाखा	20 फरवरी : रोहिणी व्रत
5 शुक्रवार	सप्तमी	अनुराधा	21 फरवरी : पुष्पाजलि व्रत पूर्ण
6 शनिवार	अष्टमी	ज्येष्ठा	25 फरवरी : रत्नत्रय व्रत प्रारंभ
7 रविवार	नवमी	मूल	26 फरवरी : दशलक्षण व्रत पूर्ण
8 सोमवार	दशमी	पूर्वाषाढ	27 फरवरी : रत्नत्रय व्रत पूर्ण, सोलह दिवसीय शुक्ल पूर्ण
9 मंगलवार	एकादशी	उत्तराषाढ	28 फरवरी : षोडशकारण व्रत पूर्ण
10 बुधवार	द्वादशी	श्रवण	
11 गुरुवार	त्रयोदशी	धनिष्ठा	
12 शुक्रवार	चतुर्दशी	शतभिषा	
13 शनिवार	अमावस	पूर्वाभाद्रपद	
14 रविवार	प्रतिपदा	उत्तराभाद्रपद	
15 सोमवार	द्वितीया	रेवती	

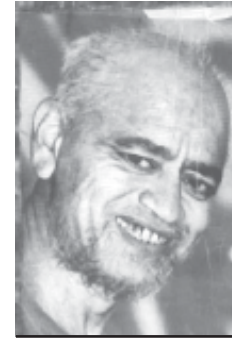
तीर्थकर कल्याणक

माह के प्रमुख व्रत

सर्वार्थ सिद्धि

शुभ मुहूर्त

दुकान प्रारंभ: फरवरी-22,25,28, मार्च-1,5,14,15
नशीनरी प्रारंभ: फरवरी-17,24,25, मार्च-1,5,11,15
वाहन खरीदने: फरवरी-17,22,24,25, मार्च-1,3,11,15



संस्कार सागर

• वर्ष : 25 • अंक : 257 • फरवरी 2021

• वीर नि.संवत् 2547 • विक्रम सं. 2077 • शक सं. 1942

लेख

- मुमुक्षु कौन 09
- बीसवीं प्राकृत साहित्य में वर्णित श्रमण का स्वरूप एवं श्रमण-सूचक पारिभाषिक शब्द 12
- जैन साहित्य का शिरोमणि पुराण: महापुराण 16
- कोरोना वर्ष 2020 में दिगम्बर समाज ने क्या खोया, क्या पाया, क्या सीखा 19
- वैभारगिरि की ऐतिहासिक मुनि सुव्रतनाथ जिन-प्रतिमा 23
- प्रो. सागरमल जैन का जैन साहित्य के विकास में योगदान 39
- वरिष्ठ नागरिक : गर्व का अनुभव करें 42
- प्रवचन: करना है कम समय में बड़ा काम 44
- महात्मा के महात्मा राष्ट्रपिता महात्मा गांधी पर श्री मद् राजचन्द्र का प्रभाव 50
- ड्रग्स एण्ड कॉस्मेटिक रूलस 1945 में संशोधन प्रक्रिया केन्द्र सरकार की उदासीनता से धीमी 52
- प्रागैतिहासिक पुरातात्विक विरासत का क्षेत्र नवागढ़ 54
- जैन विद्या संस्कृति प्रश्न मंच 56
- खरटि कहीं जीवन को खतरे में न डाल दें 57

बाल कहानी

- मैं दुर्गा हूँ 59

कविता

- बेहद क्रूरता 24
- श्वाँसों की नगर 25
- सब स्वार्थ के है साथी 29
- एक छल 36
- शीत का कहर 38
- आत्मगीत 43
- हम गीत गाते है 49
- भावलिंगी इस युग में 53

कहानी

- प्रायश्चित 45

नियमित स्तंभ

- पाती पाठकों की : 5 • भक्ति तरंग : 6 • संस्कार प्रवाह : 7 • संयम स्वास्थ्य योग : 11
- चलो देखें यात्रा : 22 • आगम दर्शन : 25 • पुराण प्रेरणा : 27 • माथा पच्ची : 27 • कैरियर गाइड : 28
- दुनिया भर की बातें : 30 • दिशा बोध : 34 • इसे भी जानिये : 35 • आओ सीखें : जैन न्याय : 37
- वरिष्ठ नागरिक : 42 • हमारे गौरव : 49 • हास्य तरंग-शरीर विकास के कुछ खेल : 58
- बाल संस्कार डेस्क : 59 • संस्कार गीत व बाल कविता : 60 • समाचार : 61

प्रतियोगिताएं

: अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा : 65 : वर्ग पहेली : 66

प्रेरणा - परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री
विद्यासागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य
ऐलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज

प्रधान संपादक
ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर-89895 05108

प्रबंध संपादक
ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़-94251 41697

कार्यकारी संपादक
ब्र. सुदेश जैन कोठिया इन्दौर-9826548159

सलाहकार संपादक
श्री हुकुमचंद सांवला, इन्दौर-95425053111
पं. विनोदकुमार जैन, रजवांस-9575634441
डॉ. मुकेश जैन 'विमल', दिल्ली-9818855130

महिला संपादक
डॉ. ज्योति जैन, खतौली-94128 89449
ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर-8989845294

अतिथि सम्पादक
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर-97938 21108
अभिनदन सांधेलीय, पाटन-9425863244
डॉ. पंकज जैन, भोपाल-9584201103
विनीत जैन प्राचार्य, सादूमल-9721419696
अक्षय अलया, ललितपुर - 9453031432

संयोजना
इंजी. अभिषेक जैन 'रिंकू', इन्दौर-9827282170

प्रकाशक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ, इन्दौर (म.प्र.)

* आंतरिक सज्जा *
आशीष कुशवाह, इन्दौर 9179169060

- ♦ लेखक के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- ♦ संस्कार सागर में प्रकाशित रचनाएँ बिना आज्ञा, किसी भी प्रकार से उद्धृत नहीं की जाना चाहिए।
- ♦ कथा-साहित्य में नाम संस्था काल्पनिक होते हैं। किसी से समानता मिलना संयोग मात्र है।
- ♦ पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा।

• श्री दिगंबर जैन युवक संघ द्वारा श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर, ए.बी. रोड़, इन्दौर-10 से प्रकाशित एवं मादी प्रिंटर्स (76, बी-1, पोलोग्राउंड, इन्दौर) द्वारा मुद्रित।

कृपया, संस्कार सागर मासिक पत्रिका का
बाकी सदस्यता शुल्क
जो पत्रिका के लिफाफे पर चिपकी पते की स्लिप पर
छपा है, अविलंब भेजकर सहयोग करें। बकाया
राशि में त्रुटि हो तो सुधार हेतु हमें सूचित करें।

सदस्यता शुल्क

-आजीवन : **2100/-** (15 वर्ष)
-संरक्षक : **5001/-** (सदैव)
-परम सम्माननीय : **11000/-** (सदैव)
-परम संरक्षक : **15001/-** (सदैव)

अपने शहर के

• स्टेट बैंक ऑफ इंडिया - **संस्कार सागर**
खाता क्र. 63000704338 (IFSC : SBIN0030463)

• भारतीय स्टेट बैंक - **ब्र. जिनेश मलैया**
खाता क्र. 30682289751 (IFSC : SBIN0011763)

• आईसीआईसीआय बैंक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ
खाता क्र. 004105013575 (IFSC : ICIC0000041)

में भी अपने पूर्ण पते सहित राशि जमा कर
हमारे कार्यालय को सूचित कर सकते हैं।

कार्यालय - संस्कार सागर
श्री दिगंबर जैन पंचबालयति मंदिर,
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड़, इन्दौर - 10
फोन नं. : 0731-2571851, 4003506
मो. : 89895-05108, 6232967108
website : www.sanskarsagar.org
e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in



• सम्पादक महोदय, संस्कार सागर के दिसम्बर अंक में प्रकाशित कहानी मछली नहीं मौत मिली, शीर्षक से प्रकाशित हुई। इस कहानी को पढ़कर बेहद आनन्द की अनुभूति हुई कहानी की भाषा सरल सुबोध सीधी सपाट है कहानी में पात्रों का चयन और उनका नामकरण अत्यन्त तालमेल बिठाकर किया गया है इस कहानी से अंत में यही शिक्षा मिलती है कि सारा संसार यह समझता है कि जो जैसा करता है उसे वैसा ही फल मिलता है अहिंसा की अंत में विजय होती है और हिंसा की हार होती है प्रमोद ने कभी यह नहीं सोचा होगा कि जिस डोरी सुलझाने को उसने डुबकी लगाई थी उसमें से मैं जिन्दा नहीं लौट पाऊँगा उसे तो एक ही धुन सवार थी कि मछली पकड़कर घर ले जाना है अन्यथा मेरी पत्नी मुझे उलाहने ही देगी कहानी की कथावस्तु व्यवस्थित और रोचक है।

-मनीष जैन, राहतगढ़

• सम्पादक महोदय, विगत दिनों योगेशचन्द्र जैन के बयानों का विवाद थम नहीं पा रहा था समन्वय वाणी ने एक अज्ञात व्यक्ति के नाम पर लेख छपा जिसमें लिखा था मेरी उम्र पचपन वर्ष है मैंने ऐसी क्रूरता कभी नहीं देखी जो योगेशचन्द्र के साथ हुई परन्तु इस लेख ने विवाद की आग में घी डालने का ही काम किया है जिसे अज्ञात व्यक्ति क्रूरता कह रहा है परन्तु वह यह क्यों नहीं कह रहा है कि योगेशचन्द्र ने सीना तानकर यह कहा था जिसपे जैसी बने वैसी एफ आई आर कर लेना मैं एफ आई आर से डरने वाला नहीं हूँ यदि एफ आई आर हो गई और योगेशचन्द्र जी जेल पहुँच गये जो इसे क्रूरता कहना कहां तक उचित है यह तो घृतराष्ट्र की नीति सी लग रही है कि जब तक पाण्डवों को दुर्योधन युद्ध के लिये ललकारता रहा तब तक घृतराष्ट्र मौन रहा और दुर्योधन से कुछ नहीं बोला लेकिन जब युद्ध में कौरवों का विनाश हो गया तो वह उलाहना देने लगा। अज्ञात लेखक

ने योगेशचन्द्र के बारे में क्यों नहीं कुछ बोला यह तो एक तरफ़ बयानबाजी है समन्वय वाणी को ऐसे लेख प्रकाशित नहीं करना चाहिये। इससे विवाद ही बढ़ेगा।

-अवधेश जैन, जैसीनगर

• सम्पादक महोदय, नेपाल में एक बार फिर राजशाही की मांग की जा रही है तथा कम्युनिष्ट पार्टी बिखराव की और है हजारों लोग सड़कों पर उतर गये वे मांग करने लगे कि संसद भंग करना उचित नहीं है तथा चीन की ओर से भी नेपाल कम्युनिष्ट पार्टी में जारी विवाद को सुलझाने का असफल प्रयास किया गया। नेपाल के प्रचण्ड जी ने भारत से समर्थन मांगा चीन के बहकावे में आकर के.पी. शर्मा ओली ने अपनी सत्ता को बचाने के लिये जबरदस्त प्रयास किये नेपाल की जनता फिर भारत की ओर देख रही है क्योंकि नेपाल के भारत से बहुत गहरे संबंध हैं। अतः नेपाल को सलाह दी जा सकती है कि नये दोस्त और पुराने दुश्मन से हमेशा सावधान रहना चाहिये। भारत नेपाल का सदियों से हित चिंतक हैं जिसे अनदेखा करना नेपाल के लिये हानिकारक है।

-राजकुमार जैन, इन्दौर

• सम्पादक महोदय, विगत माह से भारत देश में किसान आंदोलन चल रहा है किसानों के भले की बात करने का सब दावा कर रहे हैं किन्तु यह आंदोलन राजनीतिक दल-दल में फंस गया तो किसानों के सपनों का कोई भी निष्कर्ष नहीं निकलेगा। सच यह है अपनी-अपनी रोटी सेंकने के लिये हमेशा राजनैतिक दल काम करते हैं लेकिन वे कभी किसी के भले की बात न सोचकर वे सिर्फ अपने वोट बैंक को बढ़ाने की ज्यादा सोचते हैं और वे अन्य प्रत्येक आंदोलन को गलत दिशा में मोड़ देते हैं इसलिये प्रत्येक अच्छा आंदोलन भी हतास हो जाता है इसलिये किसी भी आंदोलन को राजनैतिक दलों से अवश्य बचाकर रखना चाहिये।

-अविनाश सराफ, चंदेरी

भक्ति तरंग यों ही जनम गंवायो



भजन विन यों ही जनम गवायो ॥
पानी पैल्यां पाल न बांधी, फिर पीछै पछतायो ॥ भजन.॥
रामा-मोह भये दिन, खोबत आशापाश बंधायो ।
जप-तप संजम दान न कीनों, मानुष जनम गवायौ ॥ भजन.॥1॥
देह सीस जब कांपन लागी, दसन चला-चल पायो ।
लागी आगि भुजावन कारन, चाहत कूप खुदायो ॥ भजन॥2॥
काल अनादि गुमायो भ्रमतां, कबहुँ न चिर चित ल्यायो ।
हरी विषयसुख भरम भुलायो, मृग तिसना-वश धायो ॥ भजन॥3॥

हे ज्ञानी ! तुमने भजन (भक्ति स्तुति) के बिना अपना यह सारा जीवन व्यर्थ में गँवा दिया।
अरे बाढ़ का पानी आने से पूर्व तुमने उसे रोकने का प्रबंध नहीं किया, पाल नहीं बांधी
इसलिये बाद में पछताना पड़ा।

स्त्री के मोह में तुमने दिन, समय खो दिया। आशा के झूठे आश्वासनों में जीता रहा। न
जप किया, न दान किया, और यह मनुष्य-जन्म निरर्थक बिता दिया।

जब यह देह और शीश वृद्धावस्था के कारण कांपने लगे, डगमगाने लगे और दांत भी
हिलकर टूटने लगे तब जैसे आग लगाने पर उसे बुझाने के लिये कोई कुंआ खोदना चाहे,
वैसी ही स्थिति उत्पन्न हो गई है अर्थात् जब मृत्यु की पद चाप समीप सुनाई देने लगी है तब
उपाय की चिंता होने लगी, तब उपाय करने का विचार आने लगा है।



भारिल्ल की भद्रता या छल

अभी-अभी विगत दिनों हुकुमचन्द भारिल्ल का एक वीडियो देखने सुनने को मिला
जिसे सुनकर मुझे एक घटना याद आ रही है राजस्थान के बांसवाड़ा जिले में एक जौलाना नाम का
गांव है वहां पर दो किसान परिवार रहा करते थे एक का नाम महीपाल था और दूसरे का नाम
गणपत था। गणपत दलित वर्ग से था, महीपाल उच्च वर्ग से था महीपाल की जमीन अच्छी
उपजाऊ नहीं थी किन्तु गणपत की खेती उपजाऊ और अच्छे किस्म की थी महीपाल सदैव
गणपत को नुकसान पहुँचाता रहता था एक दिन महीपाल ने अपने बेटे शिशुपाल से कहा कि
आज रात चुपके से गणपत खेत में आग लगा देना है। तब शिशुपाल ने अपने पिता महीपाल से
कहा पिताजी मैं आग तो लगा दूंगा पर कहीं ऐसा न हो यह आग अपने खेत में फैल जाये तब
महीपाल ने कहा बेटे तुम इसकी चिंता मत करो पूरा गांव अपने खेत की आग बुझाने आ जायेगा
और आग बुझाने का काम हम तब करेंगे जब गणपत का खेत पूरा जल जायेगा। तब शिशुपाल ने
कहा पिताजी सुन लो मैं आग बुझाने का काम नहीं करूंगा वह काम आपको ही करना पड़ेगा
महीपाल को अचानक तेज बुखार आ गया और शिशुपाल ने गणपत के खेत में आग लगा दी
गणपत का पूरा खेत जल गया आग महीपाल के खेत तक फैल गई महीपाल शिशुपाल के सामने
आग बुझाने के लिये कहता रहा और गिड़गिड़ाता रहा किन्तु शिशुपाल अपनी जिद पर अड़ा रहा
और उसने आग नहीं बुझाई तो नहीं बुझाई।

यह कहानी डॉ. हुकुमचन्द भारिल्ल पर पूर्ण चरितार्थ होती नजर आ रही है उन्होंने
अपनी मीठी छलपूर्ण वाणी से मुनि निन्दा की आग लगाने का सदैव कार्य किया है और उनके
शिष्य योगेशचन्द्र ने कटु, निन्द्य, अप्रिय, भाषा में मुनि निन्दा करना जब प्रारंभ किया तो कई
महीने बीतने के बाद भी डॉ. हुकुमचन्द भारिल्ल ने योगेशचन्द्र को मुनि निन्दा करने से रोकने का
कोई प्रयास नहीं किया और न यह कहा कि किसी की निन्दा झूठ और विद्वेष पूर्ण आधार पर नहीं
करना चाहिये।

योगेशचन्द्र, डॉ. हुकुमचन्द की प्रेरणा से आतंकी प्रवृत्ति का जब बन गया तब उसे
मुमुक्षु वर्ग माला पहनाकर शहीद घोषित करने में लग गया और मुमुक्षु वर्ग ने योगेशचन्द्र को
वर्तमान कालीन पं. टोडरमल घोषित करके गुप्त रूप से आशीर्वाद दिया।

परिस्थितियों ने जब करवट ली और योगेशचन्द्र की चुनौती को स्वीकार करते हुए मुनि
निन्दा का सबक सिखाने के लिये मुनि भक्तों ने जागरूक होकर एफ.आई. आर. कराना शुरू
किया। तब भी मुमुक्षु वर्ग खुशी मनाता रहा और आशावन्त होकर बैठा रहा कि हम मुनियों को
अत्याचारी और शिथिलाचारी व बलात्कारी कोर्ट में सिद्ध करेंगे किन्तु उनके सपने जब धूमिल
होते हुए नजर आयें और मुनि भक्त समूह ने अपनी शक्ति प्रदर्शन करना प्रारंभ किया और एक जुट
होकर 3 जनवरी 2021 को भोपाल में जब आन्दोलन खड़ा करने का आहवान किया तब

हुकुमचन्द भारिल्ल को ऐसा लगा कि निश्चित तौर पर यह आंदोलन सफल होगा और मुमुक्षुओं के अस्तित्व पर गाज गिर सकती है तब डॉ. हुकुमचन्द भारिल्ल वीडियो में आये और उन्होंने अपने घडियाली आंसू बहाना शुरू किया।

तीर तरकस से निकलने के बाद वापिस नहीं आता है और आंदोलन का आह्वान होना मुनि भक्तों का जागरूक होना और हजारों की संख्या में भोपाल में एकत्रित होने की संभावना देखते हुए डॉ. साहब सक्रिय हुये। और उन्हें संपूर्ण दिगम्बर जैन समाज के अस्तित्व और हित की चिंता नहीं सताई न ही उन्हें श्रमण संस्कृति के भविष्य की कोई चिंता सताई उन्हें अगर सबसे बड़ी चिंता सताई तो मुमुक्षु समाज के हित और उसके अस्तित्व पर खतरे की और उन्होंने यह कहा कि योगेशचन्द क्षमा की औपचारिकता कर लें बस इतने से ही मैं अपने छल बल से मुनि भक्तों के आन्दोलन को शान्त कर सकता हूँ। किन्तु विस्मय तो तब होता है कि जो अपने आपको समाधि पुरुष घोषित कर रहा है समाधि लेने की बात कह रहा है और दूसरी तरफ सिर्फ मुमुक्षु समाज के हित की बात कह रहा है तो क्या श्रमण संस्कृति और श्रमण साधना क्या मुमुक्षु की परीधि से बाहर है तथा जिस श्रमण संस्कृति की नींव पर मुमुक्षु समाज का महल खड़ा हुआ है उस श्रमण संस्कृति रूपी नींव को धक्का लगाकर चोट पहुँचाकर क्या मुमुक्षुओं का महल खड़ा रह सकता है क्या उसका अस्तित्व बच सकता है, नहीं, सर्वथा नहीं।

क्षमा मांगने की औपचारिकता नाटक नौटंकी के सिवा और कुछ नहीं है पहले यह बात डॉ. हुकुमचन्द भारिल्ल को सोचना चाहिये कि-

1. क्या आचार्य विद्यासागर जी बैठकर आहार लेते हैं ,
2. क्या विद्यासागर जी चरखा चलाते हैं क्या हथकरघा चलाते हैं
3. क्या हथकरघा अभियान आगम विरुद्ध है।
4. क्या हथकरघा अभियान आचार्य विद्यासागर का कारोबार है
5. क्या आचार्य विद्यासागर जी किसी दुकान पर साड़ी देखने या आभूषण देखने गये हैं।
6. क्या आचार्य विद्यासागर जी को समाधि की सलाह दी जा सकती है।

उपरोक्त इन सभी निराधार काल्पनिक आरोपों से क्या श्रमण संस्कृति का मजाक नहीं बनेगा, जब श्रमण संस्कृति का मजाक बनेगा तो क्या मुमुक्षु समाज अपमानित होने से बच जायेगा क्या मुनि निन्दा की आग से मुमुक्षु समाज अप्रभावित रहेगा यदि नहीं तो यह मान लेना चाहिये कि योगेशचन्द तो कार्बन के नीचे का कागज है कार्बन के ऊपर का कागज तो हुकुमचन्द भारिल्ल हैं वक्त हैं अब एक समझ और समझौते का जिसके अंतर्गत मुमुक्षु समाज को यह तय करना होगा कि श्रमण संस्कृति और वर्तमान मुनियों की निन्दा करके वे सुरक्षित नहीं रह सकते हैं। श्रमण संस्कृति में तटस्थता का भाव रखना खतरों से खेलना है मुनि निन्दा स्थितिकरण और उपगूहन अंग से बहुत बाहर है और स्थितिकरण और उपगूहन अंग का पालन किये बिना मुमुक्षु पना कभी साकार नहीं होता है। अतः मुनि निन्दा छोड़कर धर्म प्रभावना सशक्त बनायें इसी में सबका हित है।

मुमुक्षु कौन

* अरिहंत जैन शास्त्री, बड़ा मलहरा *

मुमुक्षु शब्द का प्रयोग आचार्य समन्तभद्र देव ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ स्वयंभू स्तोत्र में चार बार किया है मुमुक्षु सामान्य अर्थ लोग मोक्ष की इच्छा रखना किया करते हैं किन्तु आचार्य प्रभाचन्द्र जी ने प्रस्तुत ग्रंथ की टीका करते हुये एक स्थान पर मुमुक्षु का अर्थ किया है जो मोक्ष की इच्छा करते हैं एवं मोक्ष की साधना करते हैं उन्हें मुमुक्षु कहते हैं। इस तरह से मुमुक्षु शब्द के दो रूप प्राप्त हो जाते हैं जिनमें आचार्य प्रभाचन्द्र जी के द्वारा प्रतिपादित मुमुक्षु शब्द अत्यन्त गंभीर एवं सही प्रतीत होता है क्योंकि आचार्य समन्तभद्र देव ने सुपार्श्वनाथ भगवान का स्तवन करते हुये कहा है।

विभेतिमृत्योर्न ततोऽस्ति मोक्षो

नित्यं शिव वान्छति नास्य लाभः ।

मृत्यु से डरने मात्र से कभी भी मौत से छुटकारा नहीं मिलता है तथा मात्र मोक्ष की इच्छा करने से भी कभी मोक्ष की प्राप्ति भी नहीं होती है अतः मोक्ष की इच्छा रखने तक मुमुक्षु शब्द का अर्थ सीमित कर देने पर मुमुक्षु शब्द की सार्थकता सिद्ध नहीं होती है किन्तु मोक्ष के प्रति पुरुषार्थ और साधना करने से ही मोक्ष की प्राप्ति होती है निष्कर्ष तौर पर यह कहा जा सकता है की मोक्ष की मात्र इच्छा करने वाला मुमुक्षु मान लेना कही से भी तर्क संगत नहीं है। किन्तु मोक्ष की साधना करने वाले को मुमुक्षु मानना ही मुमुक्षु शब्द के साथ न्याय होता है।

भारत देश में जैनों के बीच मुमुक्षु मण्डलों की स्थापना होना 60 के दसक से प्रारंभ हुआ धीरे-धीरे यह मुमुक्षु मण्डल मुमुक्षु समाज के रूप में अवतरित हो गया 80 के दसक में कांजी स्वामी के दिवंगत हो जाने के बाद यह मुमुक्षु समाज खेमों में बटना शुरू हो गया सर्वप्रथम सन् 1985 में इस मुमुक्षु समाज के दो विभाजन हुये।

1. सोनगढ़ मुमुक्षु समाज 2. जयपुर मुमुक्षु समाज। सोनगढ़ मुमुक्षु समाज की कमान शशिकान्त भाई सेठ ने संभाली और जयपुर मुमुक्षु भाईयों की कमान बाबू भाई मेहता के हाथ रही धीरे-धीरे जयपुर मुमुक्षु समाज कई खेमों में बट गये तथा सोनगढ़ मुमुक्षु समाज प्रभावशून्य होता गया आत्मधर्म पत्रिका सोनगढ़ से ही प्रकाशित होती रही किन्तु जयपुर मुमुक्षु भाईयों ने पं. टोडरमल स्मारक ट्रस्ट से वीतरात विज्ञान नामक पत्रिका प्रकाशित हुई इनके झगड़े निम्न स्तर तक भी पहुँचे और असली मुमुक्षु कौन यह प्रश्न दोनों

खेमें से उठाते रहे। सूर्यकीर्ति की मूर्ति प्रतिष्ठा को लेकर यह विवाद आगे बढ़ा तथा कांजी स्वामी की मूर्ति प्रतिष्ठा करने पर दोनों के बीच में दीवार खड़ी हो गई।

अभी-अभी मुनि निंदक योगेशचन्द ने एक प्रश्न खड़ा कर दिया कि भारिल्ल मुमुक्षु समाज मिथ्यादृष्टि हैं एवं वह “गंगा गये तो गंगादास, जमुना गये तो जमुनादास” और उन्होंने यहां तक कहा कि यदि कांजी स्वामी होते तो वे भारिल्ल मुमुक्षुओं को सबसे पहले मुमुक्षु समाज से बाहर कर देते। क्योंकि डॉ. हुकुमचंद भारिल्ल मुनि निन्दा करने में मौन धारण कर चुके हैं। उन्होंने शायद चूड़ियां पहन ली है ऐसा भी योगेशचन्द ने उनके लिये उलाहना दिया है इससे यह सिद्ध होता है कि हुकुमचन्द भारिल्ल नाम मात्र के मुमुक्षु रह गये हैं वे मुनि मार्गियों के साथ जाते नजर आ रहे हैं पर अब यह प्रश्न पैदा हो रहा है कि सच्चा मुमुक्षु कौन हैं? क्या योगेशचन्द की नजर में जो मुनि निन्दा करे वही मुमुक्षु है? जो अपने आपको सम्यग्दृष्टि और दूसरों को मिथ्यादृष्टि घोषित करें वहीं मुमुक्षु हैं? जो अपशब्दों का प्रयोग करे कुतर्कों का अम्बार लगा दे और घटिया सोच रखे वही मुमुक्षु है? जो दूसरों के दोष देखने में रूचि रखे क्या वही मुमुक्षु है? या फिर समाज को विखण्डन बिखराव की और ले जाने वाला ही मुमुक्षु है? या फिर योगेशचन्द की दृष्टि में निन्दा में मौन रखने वाला एवं प्रिय वचन बोलने वाला मुमुक्षु नहीं है? तो इनकी दृष्टि में मुमुक्षु आखिर कौन है?

पथरीधन चूर्ण

पथरी की अचूक दवा

सेवन विधि-

- 1) यह चूर्ण सुबह भोजन के बीच में लिया जायें।
- 2) पानी दिनभर अधिक मात्रा में लें, पेट खाली न हो।
- 3) प्रथम खुराक लेनेके बाद, दूसरी खुराक एक दिन छोड़कर ही ली जाये।

नोट- यह औषधि निःशुल्क दी जाती है। ठीक होने पर औषधि निर्माण हेतु सहयोग कर सकते हैं।

प्राप्ति स्थान - ब्र. जिनेश मलैया, संस्कार सागर
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मन्दिर, बॉम्बेहास्पिटल के पास, इन्दौर (म.प्र.)
फोन: 0731-4003506 मो.: 8989505108, 6232967108

दवा देने के विभिन्न स्थानों पर केन्द्र है आप भी अपने यहां केन्द्र चाहते हैं तो सम्पर्क करें



अंयम स्वास्थ्य योग

योग किया और स्वास्थ्य

तेज गति का वाद हस्तासन: दोनों पैर के पंजो को आपस मिलाकर रखें। दोनों हाथों को सामने से ले जाते हुये ऊपर जे जायें। अब क्रमशः तेजी से श्वांस छोड़ते हुये सामने की ओर झुकें व श्वांस भरते हुये ऊपर व श्वांस छोड़ते हुये पीछे की तरफ जायें / **लाभ:** इसके अभ्यास से स्नायु संस्थान शक्तिशाली होता है। व स्नायुमण्डल में शक्ति आती है।

इंजन अभ्यास: इस अभ्यास में जैसे छोटे बच्चे रेल चलाते हैं उसी प्रकार कदम ताल करते हुये व हाथों की गति देते हुये इस अभ्यास की आवृत्ति 25-30 बार करें। **लाभ:** इससे शरीर ऊर्जावान बनता है।

नाव चलाना दोनों पैरों को फैलाकर बैठे। पंजे व पैरों को फैलाकर बैठे। पंजे पैर आपस में मिले हुये रखें। दोनों को साईड में रखते हुये आगे पीछे झुकाते हुये हाथों को भी आगे व पीछे गति देते हुये नाव चलाने का अभ्यास करें इसे घड़ी की दिशा में एवं विश्राम कर उसके विपरीत दिशा में 20-25 बार चलायें।

लाभ: इससे कमर लचीली होती है।

चक्री चलाना : दोनों पैरों को अपनी क्षमतानुसार पर्याप्त फैलाकर रखें। अब दोनों हाथों की अंगुलियों को आपस में इन्टरलॉक कर चक्री चलाने का अभ्यास करें। इस अभ्यास की 20-25 आवृत्ति घड़ी की विपरीत दिशा में कुछ देर विश्राम देकर करें।

लाभ : गर्भ-धारण के तीन माह बाद तक करने वाला श्रेष्ठ अभ्यास है। इसके अभ्यास से पाचन अंगों को शक्ति मिलती है।

प्राकृत साहित्य में वर्णित श्रमण का स्वरूप एवं श्रमण-सूचक पारिभाषिक शब्द

✽ डॉ. आशीष कुमार जैन (बम्होरी), दमोह म.प्र. ✽

जैन आगम में श्रमण शब्द के लिये अनेक शब्दों का प्रयोग हुआ जिसका विश्लेषण हम आगे करेंगे। अभी श्रमण पर विचार करेंगे। श्रमण शब्द संस्कृत है जिसका अर्थ प्राकृत में समण होता है। श्रमण शब्द का प्रयोग मुनि के लिये होता है और मुनि का लक्षण है समभावी होना, अपनी वृत्तियों को शमन करना। दिगम्बर परम्परा में जितेन्द्रिय होने के साथ ही पूर्ण अपरिग्रही और यथाजात (नग्न) रूप धारण करना मुनि के लिये आवश्यक माना गया है।

दिगम्बर जैन परम्परा में सर्वोपरि द्वितीय स्कन्ध के आद्य रचनाकार आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी ने अपने प्रतिपादन में उन सम्पूर्ण विषयों को समाहित कर लिया है, जो आत्महित के लिये अत्यन्त उपयोगी एवं मोक्षमार्ग के मूलाधार हैं। गुरुत्व या साधुत्व की कल्पना में कुलादि की अपेक्षा नहीं है अपितु दर्शन, ज्ञान, चारित्र की अपेक्षा से है। रत्नत्रय की भावना से जो स्वात्मा को साधते हैं वे साधु कहलाते हैं। आचार्य, उपाध्याय, साधु ये तीनों ही श्रमण शब्द के वाच्य हैं। आचार्य, उपाध्याय और साधु तीनों साधुपदों की अपेक्षा समान हैं। अन्तर केवल संघकृत उपाधि के कारण हैं।

आचार्य कुन्दकुन्द श्रमण के लक्षण को लिखते हैं -

समसत्तुबंधुवगो सहसुहदुक्खो पसंसणिंदसमो ।

समलोडुकंचणो पुण जीविदमरणे समो समणो ॥²

अर्थात् जिनके लिये शत्रु और बन्धु वर्ग समान हैं, जो सुख दुःख में समान हैं, जिनके लिये प्रशंसा और निन्दा समान हैं, जिनके लिये डेला और सुवर्ण समान हैं तथा जो जीवन-मरण के प्रति समान हैं वे श्रमण हैं।

धवला टीका में लिखा है कि जो अनन्तज्ञान, अनन्तदर्शन, अनन्तवीर्य, विरति और क्षायिक सम्यक्त्वादि गुणों के साधक हैं वे साधु कहलाते हैं।³ मूलाचारकार श्रमण का लक्षण देते हुये लिखते हैं-

णिस्संगो निरारंभो भिक्खाचरियाण सुद्धभावो य ।

एगागी झाणरदो सव्वगुणहो हवे समणो ॥⁴

अर्थात् जो निःसंग, निरारंभ, भिक्षाचर्या में शुद्धभाव, एकांकी, ध्यानलीन और सर्वगुणों से युक्त हो, वही श्रमण होता है।

सुख-दुख में जो समान है और ध्यान में लीन है, वह श्रमण होता है। शुभ और अशुभ दोनों प्रकार के राग से मुक्त वीतराग श्रमण होते हैं।⁵ स्थानांग में समण शब्द की व्युत्पत्ति इस प्रकार की समिति समतया शत्रुमित्रादिषु अणति प्रवर्तत इति समण । प्राकृततया सर्वत्र समण ति । जो शत्रु एवं मित्र के प्रति समभाव पूर्वक रहता है उसे समण कहते हैं। प्राकृत होने से सभी स्थानों में समण प्रयोग मिलता है।⁶ श्रमण का तात्पर्य है श्रम सहन करने वाला। श्रम सहन करने का भाव श्रामण्य है। धैर्य रखना साधुत्व का मूल कारण है जिससे वह श्रमण कहलाता है।⁷ श्रमण का रूप जैसा

बालक जन्मता है, वैसा ही नग्न होता है। पंचेन्द्रिय विषयों से विरक्त, आरम्भ परिग्रह से रहित, ज्ञानी, ध्यानी, तपस्वी, निर्ग्रन्थ मुनि ही साधु कहलाते हैं। आचार्य शिवार्य मूलाराधना में लिखते हैं कि मोक्ष की प्राप्ति कराने वाले मूलगुणादिक तपश्चरणों को जो साधु सर्वकाल अपनी आत्मा को जोड़े और सर्वजीवों में समभाव को प्राप्त हो इसलिये वे सर्वसाधु कहलाते हैं। आचार्य सुनीलसागर जी महाराज ने अज्झप्पसारो में श्रमण का लक्षण इस तरह कहा है-

विसय-कसाया रित्तो, झाणज्झयणे रदो य णिगंथो ।

पंचमहव्वदजुत्तो, समणो सो मोक्खमग्ग-रदो ॥⁸

जो विषय-कषायों से रहित, ध्यान-अध्ययन में लीन, नग्न-दिगम्बर तथा पांच महाव्रत युक्त है, वह मोक्षमार्गरत श्रमण है।

जो महान धैर्ययुक्त महानुभाव पंचेन्द्रिय के स्पर्शादि विषयों की वासना व क्रोधादि कषायों की ज्वाला से रहित हैं, पंचपरमेष्ठी व आत्मध्यान में तल्लीन, अध्ययन-अध्यापन में संलग्न, बाह्य व अभ्यंतर परिग्रह से रहित नग्न दिगम्बर तथा अहिंसा आदि पांच महाव्रतों से संयुक्त हैं, वे सच्चे श्रमण कहलाते हैं। जो आत्मशुद्धि हेतु श्रम करते हैं, आत्मलीनता रूप पुरुषार्थ करते हैं, वे श्रमण कहलाते हैं। अथवा जो आत्मा की साधना करते हैं, वे साधु कहलाते हैं। दिगम्बर मुनि अट्टाईस मूलगुणों का पालन करते हैं।⁹

श्रमण शब्द के लिये प्रयुक्त शब्दः

विविध संस्कृत एवं प्राकृत ग्रंथों में श्रमण के लिये अनेक नामों से अभिहित किया गया है। मूलाचार में श्रमण के लिये विविध नामों से अभिहित किया है-

समणो ति संजदो ति य रिसि मुणि साधुत्ति वीदरागो ति ।

णामाणि सु विहिदाणं अणगार भदंतं दंतो ति ॥¹⁰

अर्थात् श्रमण, संयत, ऋषि, मुनि, साधु, वीतराग, अनगार, भदन्त, दान्त और यति ये सम्यक् आचरण करने वाले मुनियों के नाम हैं। इनका विशद वर्णन करते हुये आचारवृत्ति में लिखा है।¹¹

श्रमणः जो तपश्चरण द्वारा अपनी आत्मा को श्रान्त करते हैं वे श्रमण हैं।

संयतः जो पांचों इन्द्रियों और कषायों को संयमित नियन्त्रित करते हैं वे संयत हैं।

ऋषिः जो सर्व पापों को नष्ट करते हैं अथवा सात प्रकार की शुद्धियों को प्राप्त करते हैं वे ऋषि कहलाते हैं।

मुनि : जो स्व-पर के अर्थ की सिद्धि को मानते हैं, जानते हैं वे मुनि हैं अथवा मति, श्रुत, अवधि, मनः पर्यय और केवलज्ञान से युक्त मुनि कहलाते हैं।

साधुः सम्यग्दर्शन, ज्ञान और चारित्र की जो साधना करते हैं वे साधु कहलाते हैं।

वीतरागः जिनका राग नष्ट हो गया है वे वीतराग कहलाते हैं।

अनगार : नहीं है अगार गृह आदि जिनके वे सर्प परिग्रह से रहित मनुष्य अनगार कहलाते हैं।

भदन्तः सर्वकल्याणों को प्राप्त हुये भदन्त कहलाते हैं।

दन्तः पांचों इन्द्रियों के निग्रह करने वाले मुनि दान्त कहलाते हैं।

यतिः तेरह प्रकार के चारित्र में प्रयत्न करने वाले यति कहलाते हैं अथवा उपशम श्रेणी और क्षपक श्रेणी में आरोहण करने में तत्पर हुये यति नाम से कहे जाते हैं।

इनके अलावा और भी शब्द हैं जो श्रमण के लिये प्रयोग होते हैं

भिक्षु : भिक्षावृत्ति के धारक होने के कारण दिगम्बर मुनि इस नाम से प्रसिद्ध हैं। इसका उल्लेख भावप्राभृत में मिलता है।¹²

संयमी: यम-नियम के पालक दिगम्बर मुनि। बोध पाहुड ग्रंथ में संयमी मुनि के शरीर को आयतन कहा गया है।¹³

योगी: योग निरत होने के कारण दिगम्बर साधु का यह नाम है। चारित्र प्राभृत के अनुसार रत्नत्रय से सम्पन्न योगी ही निर्वाण सुख प्राप्त करता है।¹⁴

दिगम्बर: दिक् एवं अम्बर यस्य सः दिगम्बरः अर्थात् दिशाये ही जिनके वस्त्र होते हैं ऐसे जैन साधु दिगम्बर कहलाते हैं योगि भक्ति के प्रकरण में उल्लिखित है।¹⁵

महाव्रती: पंच महाव्रतों का पालन करने से दिगम्बर मुनि महाव्रती कहलाते हैं। बोध पाहुड में उल्लेखित है। पंच महवय जुता।¹⁶

गुरु: शिष्यगण, मुनि, श्रावकादि के लिये धर्म गुरु होने के कारण दिगम्बर मुनि इस नाम से अभिहित है।¹⁷

धीर: दिगम्बर साधु के लिये धीर शब्द का प्रयोग मिलता है।¹⁸

निर्ग्रन्थ: ग्रंथ अर्थात् अन्तरंग बहिरंग परिग्रह रहित दिगम्बर साधु को निर्ग्रन्थ कहा है। मूलाचार में मुनि के अचेलकत्व गुण की व्याख्या करते हुये दिगम्बर साधु को निर्ग्रन्थ कहा है।¹⁹

पाणिपात्री: कर पात्र ही जिनका भोजन पात्र है वह दिगम्बर मुनि है। मूलाचार में पाणिपात्र का प्रयोग हुआ है।²⁰

अपरिग्रही: तिल तुष मात्र परिग्रह रहित दिगम्बर साधु।²¹

नग्न: मुनि यथाजात रूप होते हैं, इसलिये वे नग्न कहे गये हैं। भाव प्राभृत में इस शब्द का बहुत प्रयोग हुआ है।

गणी: मुनियों के गण में रहने के कारण दिगम्बर मुनि इस नाम से भी प्रसिद्ध हैं।²²

स्थविर: दीर्घ तपस्वी रूप दिगम्बर मुनि। मूलाचार में इस शब्द का प्रयोग दृष्टव्य है।²³

सम्यक् चारित्र को धारण करने वाले मुनियों के ये सब पर्यायवाची नाम हैं।

समण (समण) : सर्वत्र समान प्रवृत्तिवाला, मुनि, साधु (अणु)। समण (श्रमण) 1. भगवान् महावीर, पुंस्त्रो, निर्ग्रन्थ मुनि साधु, यति, भिक्षु, सन्यासी, तापसः। निगन्थ-सकतावसगेरूयआजीवं पंचहा समणा, पंचहा समणा प्रवचनसारोद्धार, 94, समणोवासाग, समणोवासय (श्रमणोपासक) श्रावक, जैन गृहस्थ।²⁴

श्रमण के एकार्थक-

पव्वइए अणगरे पासंडी चरक तावसे भिक्खू।

परिवायए य समणे णिगंथे संजए मुत्ते।।

तिण्णे णेया दविए मुणी य खंते य दंत विरए य।

लूहे तीरट्टी वि य हवंति समणस्स णामाइं।।

श्रमण निम्नांकित नामों से अभिहित होता है-

1. प्रव्रजित- गृहनिर्गत, 2. अनगार- गृहरहित, 3. पाषंडी-अष्टकर्म प्रासाद का ध्वंसी,

4. चरक- तपस्या का आचरण करने वाला, 5. तापस- तपस्या करने वाला, 6. भिक्ष- भिक्षाजीवी, 7. परिव्राजक-पाप का अपहरण करने वाला, 8. समन- समान मन वाला, 9. निर्ग्रन्थ- बाह्य आभ्यन्तर ग्रंथि से शून्य, 10. संयत- अहिंसा आदि से ओतप्रोत, 11. मुक्त- स्नेह आदि बंधनों से मुक्त, 12. तीर्ण- संसार सागर को तैरने वाला, 13. नेता- सिद्धि तक पहुंचाने वाला, 14. द्रव्य- राग-द्वेष से शून्य, 15. मुनि- सावधन बोलने वाला, 16. क्षान्त- क्षमाशील, 17. दान्त- इन्द्रिय और कषायों का दमन करने वाला, 18. विरत- प्राणातिपात आदि से विरत, 19. रूक्ष- प्रान्त-रूक्षसेवी, स्नेह वर्जित, 20. तीरार्थी- संसार सागर से पार करने की इच्छा वाला अथवा सम्यक्त आदि उत्तम गुणों को प्राप्त करने के लिये संसार का परिमाण (हद) बांधने वाला वह तीरार्थी है।

उपमाओं के आधार पर - सांप गिरि, सागर, तरुण आदि अनेक उपमाओं से श्रमण की तुलना करते हुये निर्युक्तिकार कहते हैं-

उरग गिरि जलण सागर गगण तरुणसमो य जो होइ।

भमर मिग धरणि जलरुह रवि पवणसमो यतो समणो।।

विसतिणिस वाउ वंजुल कणवीरुप्पलमेण समणेणं।

भमरुंदुर णड कुक्कुड अद्दागसमेण भवितव्वं।।

सांप, गिरि, अग्नि, सागर, आकाश, वृक्ष, भ्रमर, मृग, पृथ्वी, कमल, सूर्य, पवन, विष, तृण, कर्णिका पुष्प, उत्पल, चूहा, नट, कुक्कुट। इस प्रकार दशवैकालिक निर्युक्ति में आचार्य भद्रबाहु ने चेतन-अचेतन द्रव्यों का ग्रहण कर श्रमण शब्द को सरल और सहज शब्दों से स्पष्ट किया है।

यहां पर **श्रमण शब्द** की व्याख्या कर श्रमण के भावों की स्थितियों के आधार पर और क्रियाओं के आधार पर अनेक उपमाओं से उपमित कर उसका विशद वर्णन किया गया है। प्रस्तुत आलेख में श्रमण की उन-भाव-स्थितियों और क्रियाओं से उपमित उपमाओं का संकलन कर संयोजन किया गया है।

- | | |
|-------------------------------------|---------------------------------------|
| 1. प्रवचनसार, तात्पर्य वृत्ति टीका। | 2. प्रवचनसार, गाथा 241 |
| 3. धवला टीका, 8/3, 41/87/41 | 4. मूलाचार गाथा-1002 |
| 5. नयचक्र गाथा- 330-331 | 6. स्थानांग टीका, 4 उद्देश्य 4 |
| 7. दशवैकालिक नियुक्ति गाथा 152 | 8. अज्झप्पसारो, गाथा 9 |
| 9. सुनील प्राकृत संग्रह, पृ. 253 | 10. मूलाचार गाथा-888 |
| 11. मूलाचार गाथा 888 टीका में | 12. भावप्राभृत गाथा 26 |
| 13. बोधपाहुड गाथा 5 | 14. चारित्रप्राभृत गाथा 39 |
| 15. योगभक्ति, क्षेपक श्लोक 2 | 16. बोधपाहुड गाथा 44 |
| 17. आचार्य भक्ति, क्षेपक श्लोक -3 | 18. चारित्रप्राभृत (चारित्र पाहुड)-19 |
| 19. मूलाचार मुलगुणधिकार | 20. मूलाचार गाथा 813 |
| 21. मूलाचार गाथा 183 | 22. मूलाचार गाथा 185 |
| 23. मूलाचार, भगवती अराधना | 24. पाइअसदमहण्णवो पृ. 865 |
| 25. दशवैकालिक नियुक्ति 65, 66 | 26. दशवैकालिक नियुक्ति 63, 64 |

जैन साहित्य का शिरोमणि पुराण : महापुराण

✽ सुरेश जैन (आई.ए.एस), भोपाल ✽

अगाध प्रशांत महासागर की भांति हमारे देश में उच्च कोटि का विशाल संस्कृत साहित्य उपलब्ध है। महर्षि वेदव्यास विरचित महाभारत, बाल्मीकि कृत रामायण और कालिदासकृत रघुवंश, समेकित भारतीय संस्कृति के आधारभूत ग्रंथ हैं। संस्कृत भाषा में जैन संस्कृति के उद्भूत आचार्यों द्वारा सातवीं, आठवीं और नौवीं शताब्दि में महापुराण, हरिवंशपुराण, और पद्मपुराण विरचित किये गये हैं। सागर नगर के हमारे गुरु पुराण पारगामी पण्डित डॉ. पन्नालाल जी से साहित्याचार्य ने जैन पुराण साहित्य के आधारभूत इन तीनों पुराणों का संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद कर हमें इन पुराणों को पढ़ने की बहुत बड़ी सुविधा प्रदान की है। हमारे लिये इस रत्नत्रय का पठन-पाठन सुगम कर दिया है। महर्षियों के अगाध ज्ञान की त्रिवेणी को सुस्वादु और शीतल जल के रूप में प्रवाहित कर दिया है।

जैन पुराणों में सर्वोत्कृष्ट महापुराण संस्कृत साहित्य और जैन सांस्कृतिक इतिहास का प्रमुख आधार स्तंभ है। आध्यात्मिक महामानव आचार्य जिनसेन और उनके शिष्य आचार्य गुणभद्र की प्रशस्त लेखनी ने इस शिरोमणि पुराण के दोनों भागों- आदिपुराण और उत्तर पुराण- में तीर्थंकरों की वीरता और वीतरागता को अमर कर दिया है। इस महापुराण में महाभारत, रामायण और रघुवंश के रचनाकारों की गुणवत्ता और महत्ता सर्वत्र झलकती है।

यहाँ यह उल्लेख करना उपयुक्त प्रतीत होता है कि आचार्य जिनसेन के गुरु आचार्य वीरसेन स्वामी ने षट्खण्डगम ग्रंथ की संस्कृत और प्राकृत मिश्रित धवला नाम की टीका (72 हजार श्लोक प्रमाण) की रचना तथा जयधवला नाम की आंशिक टीका (20 हजार श्लोक प्रमाण) की रचना की। सन् 837 शक संवत् 759 फाल्गुन शुक्ल दसवीं को आष्टान्हिक महोत्सव के अवसर पर धवला टीका पूरी तथा जयधवला टीका आंशिक रूप से विरचित की गई। आचार्य वीरसेन के बाद उनके शिष्य आचार्य श्री जिनसेन ने 40 हजार और श्लोकों की रचना कर जयधवला टीका पूर्ण की। पूरी जयधवला टीका 60 हजार श्लोक प्रमाण है। इस प्रकार षट्खण्डगम की पूरी टीका 132 हजार श्लोक प्रमाण हो जाती है। महाकवि कालिदास द्वारा विरचित शृंगार रस की रचना मेघदूत को जिनसेन स्वामी ने वैराग्य जनक पार्श्वभ्युदम् के रूप में विस्तार देकर पुनर्विरचित किया।

महापुराण के आदिपुराण और उत्तरपुराण दो भाग हैं। दोनों भागों को समेकित रूप से महापुराण कहा जाता है। महापुराण संस्कृत साहित्य और जैन सांस्कृतिक इतिहास का आधार स्तंभ है। आचार्य जिनसेन और आचार्य गुणभद्र द्वारा महापुराण (आदिपुराण और उत्तर पुराण) की रचना बंकापुर के किले में स्थित जैन मंदिर में बैठकर की गई थी। आचार्य गुणभद्र ने बंकापुर में शक संवत् 819 (ईसवी सन् 897) में महापुराण अंतर्गत उत्तरपुराण को पूर्ण

किया। उत्तरपुराण के रचनाकार आचार्य गुणभद्र के शिष्य लोकसेन द्वारा उत्तर पुराण का पूजा महोत्सव शक संवत् 820 (सन् 898) आयोजित किया गया।

तीर्थंकरों की पुण्य कथाओं से ओतप्रोत महापुराण के दोनों गणमान्य महर्षि लेखकों की अलौकिक कुशाग्रता और अपरिमित प्रखरता अतुलनीय है। महापुराण की गहरी अंतर्दृष्टियों और गौरवशाली मूल्यों का जैन समाज पर असाधारण प्रभाव है। महापुराण वीतरागता, आध्यात्मिकता, नैतिकता, कला, और सृजनात्मकता जैसी मानवीय उपलब्धियों का महत्वपूर्ण स्रोत है। महत्वपूर्ण मौलिक विचारों एवं खोजों का जनक है। धार्मिक क्षेत्र और रण क्षेत्र के वर्णन से आप्लावित है। आध्यात्मिक जागृति के शाश्वत मूल्यों से भरा हुआ है। सुविकसित नैतिक एवं विशुद्ध विश्वदृष्टि का पथ प्रदर्शक है। इतिहास की गहनतम गुत्थियों को सुलझाने के लिये प्रकाश स्तंभ है। महापुराण गत 11 शताब्दियों से हमारे जैन सांस्कृतिक इतिहास के ज्ञान के लिये सबसे ज्यादा भरोसेमंद स्रोत रहा है।

महापुराण काव्य का लालित्य, कला तथा रोचकता पाठक को सहज ही आकर्षित कर लेती है। श्लाका पुरुषों का मनोविश्लेषण और चरित्र पाठक को पद-पद पर नये-नये चिंतन बिन्दु उपलब्ध कराता है और जन-जन के व्यक्तित्व में शाश्वत जीवन मूल्यों को सुस्थापित करता है। महापुराण में सर्वत्र विकीर्ण आध्यात्मिक स्पंदनों से हमें अपूर्व आनन्द प्राप्त होता है। ईसा की प्रथम सहस्राब्दि के महान आध्यात्मिक महाकवि और दार्शनिक प्रज्ञा के संवाहक आचार्य जिनसेन के अवदान का अपरिमित लाभ प्राप्त होता है। इस पुराण के विविध विषयों को हमें जन-जन तक पहुँचाना चाहिये। महापुराण की परमार्थ की कथाओं का उपयोग करते हुये जैन समाज के बुद्धिजीवियों को आधुनिक ढंग से उच्च स्तरीय आध्यात्मिक कथायें और कहानियाँ लिखना चाहिये। महापुराण में वर्णित व्यक्तित्वों पर केन्द्रित अंतराष्ट्रीय स्तर की फिल्म बनाई जाना चाहिये। महापुराण पर आधारित रामायण और महाभारत जैसे कालजयी और प्रभावी टी.वी. धारावाहिक बनाना भी बहुत उपयोगी होगा।

महापुराण में कमठ के जीवन के वैरभाव का वर्णन यथार्थ से ओतप्रोत है। कमठ के उपसर्ग से मुक्त होकर सकल गुणधाम अर्हत बने भगवान पार्श्वनाथ का प्रथम समवसरण नैनागिरि जैन तीर्थ पर समारोहित किया गया। उनके पावन स्मारक के रूप में नैनागिरि तीर्थ तीन हजार वर्षों से निरंतर समग्र जैन समाज के श्रद्धा के केन्द्र के रूप में पूरे विश्व में विख्यात है। नैनागिरि में सेमरा पठार नदी में विद्यमान भगवान पार्श्वनाथ के द्वितीय भव की प्रतीक गजराज बज्रघोष की विशालतम अकृत्रिम और अदभुत रचना जैन संस्कृति की अनुपम धरोहर है। वर्द्धमान कालचक्र के अनुरूप प्रत्येक भव में भावनात्मक विकास करते हुये और मोक्ष पथ पर आगे आगे बढ़ते हुये गजराज बज्रघोष तीर्थंकर की सर्वोच्च शिखर पर आरूढ़ हो गये और इसी नैनागिरि में स्थित समवसरण में विराजमान हो गये। बज्रघोष ने यह सिद्ध कर दिया है कि नैनागिरि में भक्तिरत भक्त की शक्ति भगवान से अधिक होती है।

महापुराण सरल संस्कृत भाषा में और संस्कृत भाषा के विकास के पुराणकाल में विशेषतः अनुष्टुप छंदों में विरचित किया गया है। यह पुराणकाल और काव्य काल के संधिकाल की रचना है। अतः यह महापुराण है और महाकाव्य भी। संस्कृत साहित्य का अनुपम रत्न है। अपने समकालीन धर्म, राजनीति, आचरण और अर्थव्यवस्था संबंधी विषयों का महत्वपूर्ण स्रोत है। महापुराण, महासागर की भांति गहन और गंभीर है। महापुराण आधारभूत ज्ञानकोष है। भारतीय महाकाव्यों में काव्य की दृष्टि से महापुराण का सर्वोच्च स्थान है। जैन पुराणों में महापुराण मुकुटमणि स्वरूप है। सांस्कृतिक उत्थान पतन और साहित्यिक आदान-प्रदान का अनुपम कथानक है। महापुराण अपने समकालीन साहित्यिक युग का प्रतिबिंब है।

अहिंसा, करुणा और दया की भावना से ओतप्रोत लोक प्रसिद्ध महापुरुषों के चरित्र पर केन्द्रित होने और सुन्दर भाषा में वर्णित होने से महापुराण की लोक जीवन का उत्कर्ष एवं अभ्युदय करने में बड़ी भारी भूमिका है। ऐसे महापुरुषों के कीर्तन से उनके निर्मल यश का विस्तार होता है। वीतराग विज्ञान की वृद्धि होती है। ऐसे पुराण पुरुषार्थ करने वाले व्यक्तियों में उत्साह का संवर्द्धन करते हैं। ऐसे पुराणों में उल्लेखित लोक जीवन के आदर्श और सर्वोच्च मापदण्ड जन-जन की प्रगति में सहायक होते हैं।

प्रातः वंदनीय आचार्य जिनसेन और आचार्य गुणभद्र ने महापुराण की रचना कर जैन संस्कृति को अनुपम योगदान प्रदान किया है। पण्डित पन्नालाल जी के विशालतम हिन्दी अनुवाद ने महापुराण के अध्ययन को सरलता प्रदान की है। महापुराण की हिमालय जैसी साहित्यिक ऊँचाई और प्रशांत महासागर जैसी आध्यात्मिक गहराई जन-जन को आकर्षित करती है।

संस्कृत साहित्य के अनूठे रत्न महापुराण के महानायक भगवान ऋषभदेव प्रभृति 63 श्लाका पुरुष है। जिनमें 24 तीर्थंकर, 12 चक्रवर्ती, 9 बलभद्र, 9 नारायण और 9 प्रतिनारायण सम्मिलित है। यह महापुराण जैन पुराण साहित्य का शिरोमणि पुराण है। आर्ष ग्रंथ है। इसमें सभी अनुयोगों का वर्णन है। महापुराण में पुराण के सभी लक्षणों- सर्ग, प्रतिसर्ग, वंश, मन्वंतर और वंश परंपराओं का वर्णन विद्यमान है। महापुराण में महापुरुषों के जीवन की घटनाओं और उनके परिणामों का वर्णन किया गया है। पाठक के चरित्र निर्माण के लिये नैतिक और धार्मिक भावनाओं का विवरण दिया गया है। नायकों के अतीत और भावी भवों को सम्मिलित किया गया है।

महापुराण में तत्कालीन घटनाओं की यथार्थता और प्रामाणिकता को सुरक्षित रखा गया है। अतः विश्वसनीय प्राच्य इतिहास को जानने के लिये महापुराण आधारभूत विशाल ग्रंथ है। महापुराण में सतत् पुरुषार्थ कर महापुरुष बनने के सिद्धांतों एवं प्रक्रियाओं का विस्तृत विवरण दिया गया है। अतः प्रत्येक व्यक्ति के जीवन निर्माण में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है।

कोरोना वर्ष 2020 में दिगंबर समाज ने क्या खोया, क्या पाया, क्या सीखा

✽ डॉ. अनिल कुमार जैन, जयपुर ✽

वर्ष 2020 प्रायः कर कोरोना के नाम समर्पित रहा। इसने देश को ही नहीं पूरे विश्व को प्रभावित किया है। देश की जीडीपी में कमी आई है तथा बेरोजगारी में वृद्धि हुई है। जैन समाज भी इससे अछूता नहीं रहा है कोरोना ने सामाजिक और धार्मिक कार्यों को भी बहुत प्रभावित किया है। इस वर्ष दिगंबर जैन समाज ने बहुत कुछ खोया है अनेक प्रभावक आचार्य, विद्वान, पत्रकार तथा राष्ट्रीय नेता अब हमारे बीच नहीं रहे। सराकोद्धारक आचार्य श्री ज्ञानसागर जी, गिरनार गौरव श्री आचार्य श्री निर्मलसागर, आचार्य श्री रयणसागर जी, वरिष्ठ विद्वान पंडित श्री रतनलाल जी बैनाड़ा, प्रसिद्ध जैन अध्येता डॉ. सागरमल जैन, स्वतंत्र जैन चिंतन के संपादक श्री नरेन्द्र जैन अजमेर, शोधादर्शक के संपादक डॉ. शशिकांत लखनऊ वीर के संपादक श्री प्रदीप जैन दिल्ली, दिगंबर जैन महासमिति के अध्यक्ष श्री प्रदीप जी कासलीवाल इंदौर आदि कुछ ऐसे नाम हैं जिनका हमारे बीच से चले जाने से धर्म और समाज को बहुत नुकसान हुआ है। वर्तमान में हर दूसरा परिचित कोरोना ग्रसित नजर आने लगा है। अनेक लोग इसके कारण मृत्यु को भी प्राप्त हो गये। लेकिन फिर भी लोग जीवन की अनिश्चितता को महसूस नहीं कर पा रहे हैं, यह कैसी विडम्बना है।

कोरोना ने हमारे जीवन को बहुत प्रभावित किया है अनेक धार्मिक कार्यों में भी परिवर्तन हुये हैं लगभग पिछले नौ महीनों में जैन लोग नित्य देव-दर्शन तथा पूजा-पाठ नहीं कर पाये। इसी प्रकार साधु-संतों को भी कई-कई माह एक ही स्थान पर रूकना पड़ा जो कि उनकी आम दिनों की चर्चा के विरुद्ध है लेकिन इसने यह मानने के लिये मजबूर किया है कि पूजा-पाठ आदि क्रियाओं सदा एक-सी नहीं रहती है, देश-काल के हिसाब से परिवर्तित होती रहती हैं। मेरा मानना है कि हमें इस घटना से यह सीख लेनी चाहिये कि समाज में पूजा-पद्धति को लेकर यदा-कदा जो विवाद होते रहते हैं उन पर रोक लगे। जो जैसा सही मानता है वैसा करता रहे इसमें किसी को कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिये। हाँ यह अवश्य है कि प्रत्येक को अपने हर कार्य की समीक्षा अवश्य करते रहना चाहिये कि जो वह कर रहा है क्या उससे बेहतर कुछ और तरीका हो सकता है या नहीं क्या पूजा कुछ इस प्रकार नहीं हो सकता जिसमें आरंभ कम से कम हो। यदि हो सकता है तो उसे परहेज नहीं होना चाहिये। हमारे मानना है कि पूजा-पाठ ऐसा होना चाहिये जिसमें आरंभी हिंसा कम से कम हो और भाव अधिक लगे।

दिगंबर जैन समाज में कुछ घटनायें ऐसी हुई जिसने वर्तमान में राष्ट्रीय नेतृत्व की क्षमता पर प्रश्न चिन्ह लगाये हैं उनकी निष्क्रियता उजागर हुई है। गिरनार पर्वत हमेशा से जैनों का प्रसिद्ध तीर्थ क्षेत्र माना जाता रहा है। यहाँ से तेइसवें तीर्थंकर भगवान नेमिनाथ ने मोक्ष प्राप्त किया था। हाल ही में यहाँ देश के प्रधानमंत्री ने रोपवे का उद्घाटन किया। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने कहा कि गिरनार पर्वत पर माँ अंबे भी विराजती है, गौरखनाथ शिखर भी है गुरु दत्तात्रेय का शिखर

हैं और जैन मंदिर भी हैं उन्होंने गिरनार को मात्र जैनो का तीर्थ मानने से इंकार कर दिया और इस प्रकार से हमने अपना एक तीर्थ लगभग खो दिया। हमारा राष्ट्रीय नेतृत्व कोई विरोध भी ठीक से दर्ज नहीं करा पाया कहने को तो तीर्थ क्षेत्र कमेटी सहित राष्ट्रीय स्तर की पांच संस्थायें है लेकिन उन्होंने पूरे मनोयोग से कोई ठोस कार्य नहीं किया। पूछने पर दस काम गिना दिये जायेंगे, लेकिन समाज के हित का कोई ठोस कार्य नजर नहीं आता है। हाँ, नेतागिरि खूब नजर आती है।

गिरनार रोपवे के उद्घाटन से लगभग दो माह पूर्व हमारे प्रधानमंत्री ने अयोध्या में राम मंदिर का शिलान्यास किया। जिस प्रकार उन्होंने गिरनार रोपवे के समय अनेक हिन्दू आम्नायों के मंदिरों को गिनाया, उस प्रकार इस समय ऐसा कुछ भी नहीं कहा कि अयोध्या जैन धर्म के अनेक तीर्थकरों की जन्मभूमि भी रही है। हम सब चुप रहे आये, हम तो ठीक से यह भी नहीं जान पाये कि जो जैन पुरातत्व बाबरी मस्जिद की खुदाई में निकला था उसकी अब क्या स्थिति है। हाँ कुछ लोग इस बात से खुश होकर ढोल अवश्य पीटते रहे कि जैनो के कुछ नुमाइदों को इस अवसर पर बुला गया।

यह बात किसी से छिपी नहीं है कि दिगंबर आम्नाय में मुख्यतः बीसपंथी और तेराहपंथी दो परम्परायें प्रचलित है। कभी-कभी दोनों परम्पराओं को लेकर समाज के लोगों के बीच विवाद भी उठते रहे हैं। लेकिन पिछले कुछ वर्षों में वे कभी उग्र नहीं हुये। हाल के दिनों में जो देखने को मिला वह दुःखद है। परस्पर वैसमस्य कुछ अधिक हुआ है इसके लिये जिम्मेदार हमारे कुछ संत भी है। अपनी-अपनी मान्यताओं को लेकर अधिक कट्टरता आने लगी है जो कि समाज के हित में नहीं है। इसी प्रकार की एक अप्रिय घटना मध्यप्रदेश के अशोकनगर में घटित हुई। यहाँ पर भी राष्ट्रीय नेतृत्व की कमी देखने को मिली, जहाँ हमारे नेतृत्व को मामला शांत कराने के प्रयत्न करने चाहिये वहाँ उकसाने वाले बयान सुनने को मिले।

डॉ. योगेश जैन की तरफ से भी अप्रिय घटना घटित हुई शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के लिये उसने अनेक बार अपशब्द कहे। पर्दे के पीछे लोक उसे उकसाते हैं कई बार समझाने पर भी वह अपनी हरकतों से बाज नहीं आया तो मुनि भक्तों ने उसके विरुद्ध एफ आई आर दर्ज करा दी। परिणाम स्वरूप उसे जेल हो गई। वह अब भी क्षमा मांगने को तैयार नहीं है। यहाँ पर भी समाज दो खेमों में बंट गया है एक योगेश के हमदर्द के रूप में तथा दूसरा उसके विरुद्ध लेकिन एक बात अवश्य है कि योगेश के हम दर्द लोगों को उसे भड़काने के बजाय पहले से ही उसे समझाने का प्रयास करना चाहिये था मेरा मानना है कि मामला अब भी समाप्त हो सकता है यदि लोग योगेश को क्षमा मांगने को तैयार कर पायें।

आगामी वर्ष में राष्ट्रीय जनगणना का कार्य प्रारंभ होने वाला है। जैनो की घटती जनसंख्या को लेकर समग्र जैन समाज चिंतित है। दिगंबर समाज में भी कुछ हलचल नजर आई। लेकिन राष्ट्रीय स्तर पर जो प्रयास होने चाहिये वे नजर नहीं आते हैं। महाराष्ट्र और कर्नाटक में जैन समाज बहुतायत में हैं उनमें बहुत से जैन काफी गरीब है तथा वे ओबीसी में आते हैं जैन समाज की बेरुखी के कारण उनमें से बहुत से जैन धर्म अपनाने लगे हैं। हमारे राष्ट्रीय नेतृत्व की ऐसी कोई कार्य योजना सामने नजर आई जिससे उनको जैन समाज की मुख्य धारा में जोड़ा जा सके।

कोरोना के चलते लोग एक स्थान पर एकत्रित नहीं हो पा रहे हैं। फलतः पूरे वर्ष कोई विशेष धार्मिक कार्यक्रम आयोजित नहीं हो पाये न तो पंचकल्याणक और न ही विभिन्न

संगोष्ठियाँ, लेकिन इस दौरान वेबीनार के माध्यम से अनेक आयोजन होने लगे हैं। जितनी संगोष्ठियों पूरे वर्ष में नहीं होती थी उतनी तो एक माह में ही हो जाती हैं जो संत टीवी पर प्रवचन नहीं कर पाते थे वे अब अपने भक्तों को वेबीनार के माध्यम से प्रवचन देने लगे हैं। आजकल तो शांतिधारा और विधान भी ऑनलाईन आयोजित होने लगे हैं। यह ध्यान रहे कि इस नायाब तरीके से कोरोना के बाद लोग भविष्य में मंदिर आना न छोड़ दें।

संतवाद और पंथवाद की बात तो समाज में सुनने में आती रहती थी अब जातिवाद का असर भी दिखने लगा है कुछ संस्थाओं में यह प्रवेश कर चुका है। गत वर्ष में इसे कुछ अधिक महसूस किया गया यह स्थिति समाज के लिये बहुत की घातक है मैं चाहता हूँ कि मेरी यह बात गलत निकले। लेकिन यदि कुछ भी ऐसा है तो जैन समाज और धर्म के हित में नहीं है। वरिष्ठ नेताओं और विद्वानों को इस स्थिति से जल्दी से जल्दी बाहर निकलना चाहिये।

आचार्य श्री ज्ञानसागर जी की आकस्मिक समाधि के कारण उनके पट्टाचार्य पद को लेकर विवाद सामने आया। आनन-फानन में उनसे संघस्थ मुनि श्री ज्ञेयसागर जी को पट्टाचार्य घोषित कर दिया गया। आचार्य श्री शांतिसागर जी (छाणी) के अन्य मुनियों को विश्वास में लिये बगैर ही यह घोषणा की गई। इस परंपरा के दूसरे संतों को यह स्वीकार्य नहीं रहा। इस पद के और भी दावेदार हो गये। लेकिन बात विचारणीय है कि आज मौजूद अन्य पट्टाचार्यों की बात को कौन मानता हैं, उनसे कितने मुनि और आचार्य आज्ञा लेते जाते हैं। जब हर दूसरा संत आचार्य बनना चाहता है तो इस पद का क्या महत्व है। यह भी विचारणीय है कि आगम में पट्टाचार्य के बारे में क्या लिखा हैं।

कुल मिलाकर वर्ष 2020 में कुछ खास हांसिल नहीं किया, लेकिन खोया बहुत है। दिगंबर जैन समाज पहले के मुकाबले और अधिक बंटा हुआ नजर आया। सार रूप में कुछ बातें निम्न प्रकार रही।

1. कोरोना से सीखें कि जीवन क्षणभंगुर और अनिश्चित है, इसलिये वैमसस्य दूर करें।
2. वर्तमान सामाजिक नेतृत्व प्रभावहीन है, अतः सर्वमान्य नेतृत्व के लिये विकल्प खोजना जरूरी है।
3. धार्मिक मान्यताओं को लेकर विवाद अनुचित हैं।
4. गरीब जैनो के स्थितिकरण के लिये प्रयास करें, उन्हें अजैन होने से रोकें।
5. संतवाद, पंथवाद और जातिवाद में वृद्धि हुई है, समाज हित में उसे रूकना चाहिये।
6. यदि एक मान्यता वाला दूसरे का सम्मान न कर सके तो कम से कम विरोध न करें मैं अपने विचार दूसरे पर थोप नहीं सकता, अधिक से अधिक समझा सकता हूँ। जो मान्यता मुझे उचित लगती हैं, जरूरी नहीं वह सभी को उचित लगे।
7. टुकड़े-टुकड़े में बंटा समाज स्वयं का नुकसान कर रहा है। हमें इस स्थिति से जितना हो सके उतना जल्दी बाहर आना चाहिये।

अंत में मैं यही कामना करता हूँ कि आने वाला वर्ष सभी के लिये मंगलमय हो। समाज संगठित हो तथा सब मिलकर धर्म और समाज के उत्थान के लिये प्रयास करें।

शत्रुञ्जय जी

यह निर्वाण क्षेत्र है। यहाँ से युधिष्ठिर, भीम अर्जुन तथा द्रविड़ राजा आदि आठ कोड़ी मुनि मोक्ष गये हैं। भट्टारक ज्ञानसागर जी ने अपने वर्णन में लिखा है कि ऋषभनाथ भगवान यहाँ पर 22 बार पधारे। शहर के मध्य मांडवी चौक के दिगम्बर जैन मंदिर में सभा मण्डप अत्यन्त सुन्दर है। पालीताणा के महाराजा ने पर्वत पर दिगम्बर जैन मंदिर बनाने हेतु भूमि दी। पर्वत की चढ़ाई लगभग 4 किमी. है। पत्थर की सड़क निर्मित है एवं 2500 सीढ़ियाँ हैं। पांडव तीन द्रविड़ राजाने आठ कोडि मुनि मुक्तिपयान श्री शत्रुञ्जयगिरि के सीस भाव सहित वंदो निसदीस।

समीपवर्ती तीर्थक्षेत्र- घोघा - 60 किमी., गिरनार- 170 किमी., पावागढ़- 306 किमी., जूनागढ़-210 किमी. तारंगा जी- 325 किमी. सोनगढ़- 22 किमी. अहमदाबाद -205 किमी.।

प्रबन्ध व्यवस्था- संस्था : श्री पालीवाणा दशा हूमड़ दिगम्बर जैन मंदिर ट्रस्ट अध्यक्ष श्री कुमार भाई शाह -0278-2569313, 9426205163

मंत्री : श्री मुकुन्द भाई शाह- 0278-2510015, प्रबन्धक : श्री सेठ जयंत भाई - 02848-252547

आवागमन के साधन : रेल्वे स्टेशन : भावनगर -40 किमी. पालीवाणा रेल्वे स्टेशन से शत्रुञ्जय पर्वत- 5 किमी. बस स्टैण्ड- भावनगर - 55 किमी. दिगम्बर जैन धर्मशाला से 100 मीटर की दूर पर बस स्टैण्ड।

पहुँचने का सरलतम मार्ग : भावनगर से बस द्वारा।

क्षेत्र पर उपलब्ध सुविधायें : आवास कमरे (अटैच बाथरूम), कमरे (बिना बाथरूम-40, हॉल -1 (यात्री क्षमता- 30), यात्री ठहराने की कुल क्षमता- 150, अन्य स्टेशन से दिगम्बर जैन धर्मशाला लगभग 15 किमी है। पालीवाणा नगर से मैखपुरा स्थान में दिगम्बर जैन धर्मशाला है।

भोजनशाला : श्वेताम्बर समाज की है, नियमित सशुल्क

औषधालय : ऐलोपैथिक।

टेलीफोन: 02848-252547, 09408966847

वैभारगिरि की ऐतिहासिक मुनि सुव्रतनाथ जिन-प्रतिमा

* डॉ. महेन्द्र कुमार जैन, इन्दौर *

प्राचीन मगध की राजधानी राजगृह के वैभारगिरि पर्वत पर उत्खनन में एक प्राचीन जैन मन्दिर प्राप्त हुआ है। गर्भगृह के अतिरिक्त मंदिर की परिक्रमा में चारों ओर कुल 22 देव कुलिकायें और मन्दिर के बाहर एक तलगृह है। पूर्वभिमुख गर्भगृह में मूलनायक के रूप में मुनिसुव्रत जिन प्रतिमा अवस्थित है। 27 गुणित 47 इंच के शिलाखण्ड में शिल्पित यह सपरिकर प्रतिमा अत्यन्त महत्व की है।

मूर्ति ध्यानमुद्रा में कलात्मक दोहरे कमल पर आसीन उत्कीर्णित है। 17 गुणित 21 इंच की इस मूर्ति के दोनों बाजुओं तरफ दो चंवरधारी मुकुट, कुण्डल, हार, भुजबंद, कड़ा और कटिबन्ध आदि अलंकरणों से अलंकृत अंकित हैं। प्रतिमा के केश घुघराले, सोष्णीष अंकित हैं। कर्ण सामान्य से कुछ लम्बे किन्तु स्कन्धों से नहीं छू रहे हैं। ग्रीवा-त्रिवली स्पष्ट अंकित है, ऊपर छत्रत्रय का अंकन, छत्रत्रय के एक और झाल लिये दो हाथ और दूसरी और ढोलक पीटते हुये दुन्दुभिवादकों के दो हाथ उत्कीर्णित हैं। दुन्दुभि वाद्यों के नीचे गगन में उड़ते हुये माल्यार्पक व पुष्पवर्षक देव दर्शायें गये हैं। प्रतिमा का प्रभावलय अत्यन्त कलात्मक है, उसके ऊपर दोनों ओर दो-दो अशोक पत्र गुच्छ उकरित हैं।

तीर्थकर के शासन में कमल के नीचे बीच में धर्मचक्र और उसके दोनों ओर विपरीताभिमुख दो सिंह शिल्पित हैं। धर्मचक्र में 12 आरे दर्शायें गये हैं।

लाञ्छन- सिंहासन के सिंह-द्रव्य अंकन को देखकर इस प्रतिमा को तीर्थकर महावीर की प्रतिमा अनुमानित किया गया, किन्तु इस प्रतिमा के आसनपट्ट (पैडिस्टल) में धर्मचक्र के पास ही एक बहुत छोटा (लगभग 1 बाई डेढ़ इंच का) कूर्म उत्कीर्णित है। जिससे निश्चित होता है कि यह मुनिसुव्रत जिन की प्रतिमा है। राजगृह की प्राचीन जैन मूर्तिकला में यदि महावीर के सिंहासन के सिंह भी दर्शाए गये हैं तो लाञ्छन का सिंह अलग से बीच में दर्शाया गया है। अन्य तीर्थकरों का लाञ्छन भी यदि एक दर्शाया गया है तो वह बीच में, और दो हैं तो दोनों ओर अनुकूलाभिमुख अर्थात् एक दूसरे के सामने मुख करके अंकित किये गये हैं, जबकि सिंहासन के सिंहों का सभी जगह प्रतिकूलाभिमुख अंकन हुआ है।

नारी प्रतिमा- सिंहासन के नीचे एक नारी प्रतिमांकन है। दाहिने करवट लेटी हुई यह द्विभुजा नारी अत्यन्त कुशलता से शिल्पित है। इस नारी को उसके दाहिने हाथ से सिर को सहारा दिये हुये, सिर एवं पैरों के नीचे एक-एक मसंद (गोल-तकिया) लगाये हुये दिखाया गया है। इसकी केश सजा में शिल्पी ने अपनी अच्छी कुशलता प्रदर्शित की है। कर्णावतंस, मुक्ताहार, कटिमेखला, बाजुबंद, कंगन और अधोवस्त्रादि अंकन के अतिरिक्त इसकी शय्या तथा मसंद भी अलंकृत दर्शायी गयी है। नारी के पैरों की ओर एक परिचारिका उकरित है।

इस नारी मूर्ति को कुछ अन्वेषकों ने तीर्थकर महीर की माता त्रिशला माना है। किन्तु तीर्थकर प्रतिमा के पाद पीठ पर कूर्म लाञ्छन पाये जाने से जिन प्रतिमा तीर्थकर मुनिसुव्रत की स्पष्ट हो जाने के कारण अब यही कहा जा सकता है कि या तो यह नारी मूर्ति मुनिसुव्रत जिनकी यक्षी बहुरूपिणी का अंकन है या उनकी माता सोमा का।

बारहभुजी गुफा, बजरामठ (ग्यारसपुर) और आशुतोष संग्रहालय कलकत्ता की मूर्तियों से तुलना कर इसे बहुरूपिणी यक्षी अनुमानित किया गया है। डॉ. मारुतिनन्दन प्रसाद तिवारी का भी अभिमान है कि स्त्री के समीप कोई बालक-आकृति नहीं उत्कीर्ण है, अतः इसे जिनकी माता नहीं माना जा सकता है। फिर माता का जिन मूर्तियों के पाद पीठों पर जिनों के चरणों के नीचे अंकन भारतीय परम्परा के विरुद्ध भी है। किन्तु इस सन्दर्भ में देवगढ़ के मन्दिर नं. 4 (ईसा 10वीं शती) का वह शिल्पांकन दृष्टव्य है जिसमें तीर्थकर की माता को वैभारगिरि की प्रतिमा के लगभग समान मुद्रा एवं अलंकरण युक्त दर्शाया गया है और जिसके ऊपर तथा सिरहाने तीर्थ कर अंकित है तथा समीप कोई बालक-आकृति भी उत्कीर्ण नहीं है।

वैभारगिरि की स्त्री-प्रतिमा के जिन माता होने के पक्ष में राजगीर का ही एक अत्यन्त महत्वपूर्ण शिल्पांकन जाता है, जिसमें 23 तीर्थकरों के नीचे दो परिचारिकाओं से सुश्रूषित लेटी हुई जिनमाता अंकित है तथा उसी के समानान्तर ललितासन में आग्रगुच्छ और दो बालकों के साथ अम्बिका उत्कीर्ण है। तीर्थकर मुनिसुव्रत का जन्म राजगृह में होने का सन्दर्भ भी नारी प्रतिमा का अंकन माता सोमा का होने की ओर इंगित करता है। दूसरी ओर अन्य सन्दर्भ में किसी यक्षी का लेटा हुआ नहीं पाया जाना, प्रकृत शिल्पांकन में बहुरूपिणी की चार भुजाओं, आयुधों (फल, खेटक और खड्ग आदि) तथा सर्पासन में से किसी भी लक्षण का नहीं पाया जाना बहुरूपिणी यक्षी की सम्भावना को नकारते हैं।

इस प्रकार यह सम्पूर्ण शिल्पांकन कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। इस शिल्पकला का समय 9वीं, 10वीं शती ई. अनुमानित किया जाता है।

कविता बेहद क्रूरता

राक्षसों का वास हुआ क्या, फिर से भारत भूमि पर
रावण की औलादें जिंदा, क्या दिखती है इस धरती पर
जो मानवता को तार तार कर देती है जो मानव मन में, क्रूर रूप को धर देती है
महाराष्ट्र में साधु जन की, हत्या क्या अनुमान है
भीड़ नहीं यह दानव जन का, नहीं कोई भगवान हैं
सोता शासन और प्रशासन का नहीं कोई कर्तव्य है
केवल देना अब बयान, नहीं कोई कर्तव्य है
उठो अहिंसा वीरो जगो, करुणा नीर बहा दो
करुणा भय मर्यादा शक्ति, राम रूप लौटा दो
राक्षस दानव बने न मानव, ऐसा शंख बजा दो
साधु जन की हो न हत्या, ऐसा अलख जगा दो
लोक तंत्र तो सफल तभी है, जब साधु नारी सुरक्षित हो
बेगुनाह पर शस्त्र चले न, राम राज्य ही लक्षित हो
दानवता को दंडित करना, राजधर्म अनिवार्य है
धीर वीर तो बने सदा ही, कायरता परिहार्य है।



परमात्मा का प्रकाश परमात्म प्रकाश

परमव्यथासु या परमात्मप्रकाश जैन गृहस्थों तथा मुनियों में बहुत प्रसिद्ध हैं। विशेषकर साधुओं को लक्ष्य करके इसकी रचना की गई है। विषय साम्प्रदायिक न होने से यद्यपि समस्त जैन साधु इसका अध्ययन करते हैं, फिर भी दिगम्बर जैन साधुओं में इसकी विशेष ख्याति है। इसके लोकप्रियता के अनेक कारण हैं। प्रथम इसका नाम ही आकर्षक है, दूसरे परिभाषिक शब्दों की भरमार न होने के कारण इसकी वर्णशैली कठिन नहीं है। तीसरे लेखनशैली सरल है, और भाषा सुगम अमभ्रंश है। संसार के कष्टों से दुःखी भट्ट प्रभाकर में धार्मिक रुचि पैदा करने के लिये इसकी रचना की गई थी। संसार के दुःखों की समस्या यह प्रभाकर के समान सभी भव्यजीवों के सामने रहती है। अतः परमात्म प्रकाश सभी आस्तिकों को प्रिय है। कन्नड़ और संस्कृत में इस पर प्राचीन टीकायें हैं वे भी इसकी लोकप्रियता प्रदर्शित करती हैं। परमात्म प्रकाश के रचयिता आचार्य योगेन्दुदेव बहुत बड़े विद्वान थे उन्होंने अपभ्रंश की उत्कृष्ट रचना की इस ग्रंथ में व्यवहार, निश्चय का सफल वर्णन किया गया है तथा नयों की आवश्यकता तथा तर्क विद्या नयों की उपयोगिता को और उनकी क्षापेकता के महत्व को प्रदर्शित किया है अकेला व्यवहार अपूर्ण है बिल्ली को शेर की उपमा तब तक काम दे सकती है जब तक हमने शेर को नहीं देखा शेर को देखने के बाद उपमा का कोई महत्व नहीं रहता है। प्रस्तुत ग्रंथ में आत्मा के तीन भेद बताते हुये विषय को आगे बढ़ाया है आत्मा ये तीन भेद है। बहिरात्मा, अन्तरात्मा, परमात्मा, इन तीन आत्माओं का षष्ठ भेद आचार्य कुन्दकुन्द देव ने मोक्ष पाहुड़ में पूज्यपाद आचार्य ने समाधि शतक में इस विषय की चर्चा की है। आत्मिक विज्ञान आत्मा का स्वभाव परमात्मा का स्वभाव कर्म का स्वभाव एवं संसार मोक्ष प्राप्ति के उपाय महासमाधि जैसे विषयों का वर्णन प्रस्तुत ग्रंथ में किया गया है। आचार्य योगेन्दु देव द्वारा की 6 वीं शताब्दी में हुये है।

कविता श्वाँसों की नगर

गणना करते करते जीवन बीत गया
श्वाँसों की गगरी का जल पूरा रीत गया
मृत्यु का दर पर आदमी खड़ा है उसे मरने का डर बड़ा है।
छटपटा रहा है मृत्यु से बचने, लगा है विषयों के ताने-बाने बुनने।
आनन्द मानता है विषय भोग में, नहीं लग पाता है समाधि योग में
न जाने घिरा हुआ है किस रोग में, मन वचन काय के योग में
आश्रव होता कर्मों का बन्ध भी हो जाता कर्मों का
बांधता रहता है कर्म, भूल जाता हितैषी धर्म
यही कारण है भटकन का मानवनीय दुष्चिन्तन का
बदल दे धारा क्यों कर्मों से हारा, गुरु की शरण जा
अन्दर का अमृत पा एक लक्ष्य बना, मिले अन्तर आनन्द घना



समस्या पूर्ति प्रतियोगिता जनवरी 2021 ये कैसा बचपन

प्रथम-

देखो इनकी अलग अदा

अधरों पर मुस्कान सदा

ये भी कोई है जीवन

भोला ये कैसा बचपन

-श्रीमती रजनी जैन, राहतगढ़

द्वितीय-

मन रखे नहीं छल कोई

-विशाल जैन, इन्दौर

अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा
दिसम्बर 2020 के विजेता

प्रथम : श्रीमती वैशाली जैन, इन्दौर

द्वितीय : राजेश जैन, अहमदाबाद

तृतीय : श्रीमती कांता जैन, मदनगंज किशनगढ़

मनस कालिमा सब धोई
वैर विरोध नहीं पावन मन
देखो ये कैसा बचपन

-श्रीमती इन्द्रा जैन, अहमदाबाद

तृतीय-

टुकुर टुकुर क्या देख रहा

दुनिया नई ये देख रहा

रिस्तों का नव ये बंधन

निश्चल ये कैसा बचपन

वर्ग पहेली क्र. 256
दिसम्बर 2020 के विजेता

प्रथम : रश्मि जैन, सांवरमति

द्वितीय : आरती जैन, मुम्बई

तृतीय : मधु जैन, भोपाल

अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा : जनवरी 2021 का हल

- | | | |
|-----------------|------------------|------------------------------|
| 01. विवेक | 18. प्रतिष्ठित | 35. आयतन |
| 02. परमार्थ | 19. प्रतिक्रमण | 36. मोक्षमार्ग |
| 03. ज्ञान | 20. हिंसा | 37. चरित्र |
| 04. अनुभव | 21. डोंट | 38. निर्भीक |
| 05. इन्द्रियों | 22. अनुबंध | 39. महाप्रसाद |
| 06. आगम | 23. अजीब | 40. आस्था |
| 07. अणुव्रत | 24. आवागमन | 41. विद्या वारिधी |
| 08. महाव्रत | 25. अभिमान | 42. 17 से 19 नवम्बर 2020 |
| 09. अनुशासन | 26. मान | 43. पांच मुनिराजों की |
| 10. जीवन | 27. पञ्चेन्द्रिय | 44. ब्र. जिनेश मलैया |
| 11. आदेश | 28. पुण्य | 45. अनीता सुरेश जैन |
| 12. पाप | 29. सम्यग्दर्शन | 46. मुनि श्री शाश्वत सागर जी |
| 13. पापभीरुकता | 30. विराटता | 47. मुनि श्री अनंतसागरजी |
| 14. कार्यक्रम | 31. मन | 48. 15 नवम्बर 2020 |
| 15. नियंत्रण | 32. वटवृक्ष | 49. 17 नवम्बर 2020 |
| 16. आत्मानुशासन | 33. आगम | 50. 23 नवम्बर 2020 |
| 17. आस्था | 34. महान् | |



पुराण प्रेरणा

गुरु सेवा

धूतासनेऽवधिज्ञानात् तदबूद्ध्वा धरणः फणी ।

अजगाम मुनेभक्त्या मौनं सर्वार्थसाधनम् ॥

उसी समय जिसका आसन कम्पायमान हुआ था ऐसा धरणेन्द्र अवधिज्ञान से यह समाचार जान जिनेन्द्र की भक्ति पूर्वक वहाँ आया । सो ठीक ही हैं क्योंकि मौन सब कार्यों की सिद्ध करने वाला हैं ।

विश्वास्य दिव्यरूपोऽसौ भ्रातरौ यथा ।

महाविद्यां दवो ताभ्यां विद्यालाओ गुरोर्वशात् ॥

दिव्यरूपो को धारण करने वाले उस धरणेन्द्र ने उन दोनों भाईयों को अपने भाईयों के समान विश्वास दिलाकर महाविद्या प्रदान की सो ठीक ही है क्योंकि विद्या की प्राप्ति गुरु से होती है ।

योऽगो विद्याधराधरो विजयार्द्ध इतीरितः ।

सोऽपि ताभ्यां ततो लब्धः किं न स्याद् गुरुसेवया ॥

और जो विद्याधरों का निवासभूत विजयार्द्ध नाम का पर्वत है वह भी उन दोनों ने धरणेन्द्र से प्राप्त किया सो ठीक हैं क्योंकि गुरु सेवा से क्या नहीं होता हैं ।

माथा पच्ची

निम्न अक्रमबद्ध वर्णों कोक्रमबद्ध बनाकर
रिक्त स्थान में एक सार्थक शब्द बनाइए ।

- | | |
|--|----------------------|
| 1. इ उ म् न् श् र् ई ग् आ स् अ र् श् अ क् नि | <input type="text"/> |
| 2. इ उ म् न् श् र् ई ग् आ स् अ र् आ भ् न् त् र् अ नि | <input type="text"/> |
| 3. इ उ म् न् श् र् ई ग् आ स् अ र् आ र् अ ल् स अ नि | <input type="text"/> |
| 4. इ उ म् न् श् र् ई ग् आ स् अ र् आ र् क् र् आ अ नि | <input type="text"/> |
| 5. इ उ म् न् श् र् ई ग् आ स् अ र् आ म् र् न् अ नि | <input type="text"/> |

परिणाम :

जनवरी 2021: (1) धन्यकुमार चरित्र (2) श्रेणिक चरित्र (3) अमर सेन चरित्र
(4) जीवन्धर चरित्र (5) वरांग चरित्र

करियर



ग्राफिक्स डिजाइनर बने और पैसा कमायें

भारत में ग्राफिक्स डिजाइनर उपभोक्ताओं के साथ संवाद करने में मदद करते हैं। जैसे लोगो

यह क्षेत्र प्रौद्योगिकी पर बहुत निर्भर करता है जिसमें फोंट, वीडियो, संपादन सॉफ्टवेयर और डिजिटल कैमरे शामिल हैं।

लेबल, पैकेज के साथ-साथ फिल्मों के शुरुआती क्रेडिट पर हम अपने चारों तरफ ग्राफिक्स डिजाइन देख सकते हैं।

शैक्षिक योग्यता : ग्राफिक्स डिजाइन में कई पाठ्यक्रम हैं, जो पेशेवर ग्राफिक्स डिजाइनर बनने की बारीकियों में सैद्धांतिक और वैचारिक अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं।

ग्राफिक्स डिजाइन में डिप्लोमा, डिग्री और सर्टिफिकेट कोर्स हैं। ग्राफिक्स डिजाइन में विभिन्न सिद्धांतों के अलावा, ये पाठ्यक्रम वेब डिजाइन, मल्टीमिडिया और कम्प्यूटर ग्राफिक्स में भी ज्ञान प्रदान कर सकते हैं।

फोटोशॉप, कोरल ड्रा जैसे टूल और सॉफ्टवेयर की अच्छी समझ होनी चाहिये।

योग्यता: बुनियादी ड्राइंग कौशल, रचनात्मकता और कल्पना, विस्तार परख दृष्टि, ग्राफिक्स डिजाइन सॉफ्टवेयर का ज्ञान, अच्छा सुनने और संचार कौशल।

करियर संभावना : प्रिंट मीडिया, मोबाइल एप्लीकेशन, वेबसाइट, इलेक्ट्रॉनिक प्रकाशन, और वीडियो डिजाइन आदि।

क्षेत्रों में संगठनों के लिये डिजाइन मार्केटिंग, मीडिया, विज्ञापन, प्रचार और संचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

अनुभव व सही प्रशिक्षण के साथ कुछ डिजाइनर कला निर्देशक या डिजाइन निर्देशक जैसे प्रबंधन भूमिकाओं में चले जाते हैं।

वेतन दृष्टिकोण: पे स्केल के अनुसार ग्राफिक्स कलाकारों का औसत वार्षिक वेतन रुपये 99,228 से रुपये 5,17,548 है।

कुछ वर्षों के अनुभव के बाद एक वरिष्ठ ग्राफिक्स डिजाइनर 7.5 लाख रुपये प्रतिवर्ष कमा सकता है।

कविता

सब स्वार्थ के है साथी

रचयिता: कांति कुमार जैन, करुण खिमलासा



सब स्वार्थ के है साथी, कोई नहीं है अपना।
जीवन जिये हैं अब तक, हम देख रहे हैं सपना ॥

किस को बनायें साथी, दिखते नहीं हैं कोई।

क्यों मोह से जुड़ हैं, औं आत्म हमारी रोयी ॥

क्या साथ में है लाये, इतना हमें है कहना।

सब स्वार्थ के है साथी, कोई नहीं है अपना ॥

था मेरे पास पैसा, तब पूछ थी हमारी।

लखता नहीं यह पैसा, तब छूट गयी है यारी ॥

दुख दर्द की कहानी, फिर किससे कहे हैं अपना।

सब स्वार्थ के है साथी, कोई नहीं है अपना ॥

है धर्म सच्चा साथी, इसकी शरण में आओं।

यह ही भला करेगा, महिमा इसकी गाओं ॥

परिणाम तब सफल हो, प्रभु नाम को ही जपना।

सब स्वार्थ के है साथी, कोई नहीं है अपना ॥

जीवन सफल तब होगा, सुख का ही मार्ग मिलेगा।

निज आत्म यह विभूति, अंतर से यह जगेगा ॥

फिर न करुण रहोगे, सुख शांति से ही रहना।

सब स्वार्थ के है साथी, कोई नहीं है अपना ॥

दुनिया भर की बातें



दिसम्बर 2020

■ 1 दिसम्बर

- सुप्रीम कोर्ट ने कहा कोरोना संक्रमितों के घर पोस्टर लगाना अच्छा जैसा व्यवहार लगता है।

- पाली : (राज) : चलती बस में 100 फीट लंबा पाईप घुसा। महिला की गर्दन कटने से मौत हुई एवं 1 युवक की मौत हुई।

- मुम्बई : उ.प्र. मुख्यमंत्री की फिल्म अभिनेता अक्षय कुमार से मुलाकात हुई।

■ 2 दिसम्बर

- अखिल भारतीय कांग्रेस के बी.वी. श्री निवास राष्ट्रीय अध्यक्ष बने।

- सुप्रीम कोर्ट ने राज्यों के निर्देश दिया कि हर थाने में सी.सी.टी.वी कैमरे लगाना अनिवार्य हो।

- फिल्म अभिनेता सनी देओल कोरोना पॉजिटिव हुये।

■ 3 दिसम्बर

- रतलाम: साइको किलर 6 हत्या का आरोपी दिलीप देवल मुठभेड़ में मारा गया 5 पुलिस कर्मी घायल हुये।

- एम.डी.एच मसाला कम्पनी के मालिक महाशय धर्मवाल गुलाटी का निधन

हुआ वे 97 वर्ष के थे उनका जन्म सियालकोट (पाक) में हुआ था।

- इजरायल की नौसेना में सबसे आधुनिक जंगी जहाज शामिल हुआ।

■ 4 दिसम्बर

- हैदराबाद : नगर निगम चुनाव के परिणाम आये भाजपा में 150 में 48 सीटें जीती टी आर एस ने 55 सीटें और 44 आई एम ने जीती।

- नक्षद्वीप के उपराज्य पाल दिनेश्वर शमी का निधन हुआ।

- पटना: सुशील मोदी निर्विरोध राज्यसभा का चुनाव जीते।

■ 5 दिसम्बर

- हरियाणा के स्वास्थ्य मंत्री अनिल विज वैक्सीन डोज लेने के बाद भी कोरोना पॉजिटिव हुये।

- चीन ने चांद पर अपना स्पेस पहुँचाया और झंडा गाढ़ा।

- थाईलैंड में भारी बारिश से 3 लोगों की मौत हुई। तथा 3.30 लाख लोग प्रभावित हुये।

■ 6 दिसम्बर

- भारत ने टी-20 क्रिकेट मैच सीरिज आस्ट्रेलिया से जीती।

- नई दिल्ली : वैज्ञानिकों की एक टीम ने कोरोना की वैक्सीन खोजने का दावा किया।

- गवलपिंडी : ईसाई लड़की द्वारा मुस्लिम के साथ शादी का मना करने पर लड़की की हत्या कर दी।

■ 7 दिसम्बर

- दिल्ली : दिल्ली पुलिस ने 5 आतंकी गिरफ्तार किये दो खालिस्तानी और 3 कश्मीरी है।

- सुप्रीम कोर्ट ने संसद भवन के भूमि

पूजन को स्वीकृति दी काम पर रोक लगाई।

- जकार्ता : पुलिस झड़प में भौमिवी रिजिक शिहाब के 5 समर्थक मारे गये।

■ 8 दिसम्बर

- किसानों ने भारत बंद का आह्वान किया मिला जुला असर बंद रहा।

- रोहतांग : के पास 7 इंच बर्फबारी हुई।

- भारत आस्ट्रेलिया से 12 रन से हारा 2-1 से आस्ट्रेलिया ने सीरिज जीती।

■ 9 दिसम्बर

- सुप्रीम कोर्ट ने संक्रमितों के घर के बाहर पोस्टर लगाना गैर जरूरी है।

- क्रिकेटर पार्थिव पटेल ने सभी फार्मेट से सन्यास लिया।

- नेपाल ने भारत के रेल प्रोजेक्ट को हरी झंडी दी।

■ 10 दिसम्बर

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने नये संसद भवन की भूमि पूजन की।

- कोलकाता: भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष जे.पी. नड्डा के काफिले पर लोहे की राड ईंट और पत्थरों से हमला हुआ कैलाश विजयवर्गीय घायल हुये।

■ 11 दिसम्बर

- भोपाल: हमीदिया के कोरोना वार्ड की बिजली गुल होने और जनरेटर में डीजल न होने से हाई फ्लो सपोर्ट पर चल रहे पूर्व पार्श्व अकबर खान का निधन हुआ।

- लंदन : इंग्लैंड में 8 किमी. लम्बा जाम लगा 12000 ट्रक सड़कों पर फंसे।

- खंडवा बैंक कांड के प्रमुख आरोपी सिनी आतंकी अबू फैजल एवं इकरार शेख को अदालत ने आजीवन कारावास सजा सुनाई।

■ 12 दिसम्बर

- सी.बी.आई. की कस्टेडी में रखा 103

किलो सोना गायब हुआ।

- इमरान खान ने अपने कैबिनेट में शेख रशीद गृहमंत्री बने।

- अमेरिका फाइजर वैक्सीन के इमरजेंसी यूज के लिये स्वीकृति मिली।

■ 13 दिसम्बर

- इंदौर : हाईकोर्ट की जज वन्दना कसेकर का निधन हुआ वे कोरोना संक्रमित थी।

- कन्नड़ कवि संस्कृत विद्वान् गोविंदाचार्य का निधन हुआ वे 84 वर्ष के थे।

- अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के खाते पर ट्वीटर ने अस्थायी रोक लगाई।

■ 14 दिसम्बर

- प्रोजेक्ट -17ए का पहला युद्धपोत हिमगिरी का जलाव तरण हुआ।

- हिन्दू केसरी खंचनाले कोल्हापुर का निधन हुआ।

- श्रीनगर: पी.डी.पी नेता परवेज भट्ट के घर पर आतंकी हमला हुआ, पी.एम ओ की मौत हुई।

■ 15 दिसम्बर

- सुप्रीम कोर्ट ने कहा सोचो वे डॉक्टर हैं बर्तन नहीं है 8 माह से बिना ब्रेक इलाज कर रहे हैं।

- जापान के टिवटर किलर ताकहिरा शिराइशी को एक कोर्ट ने मौत की सजा सुनाई। इन पर 9 हत्या के आरोप थे।

- काबुल (अफगानिस्तान) के डिप्टी गवर्नर मुहबुबुल्लाह मोहेबो की हत्या कार में विस्फोट करके की गई।

■ 16 दिसम्बर

- सिख संत रामसिंह ने सिंधू बॉर्डर पर गोली मार कर खुदकुशी किसानों के समर्थन में की।

- मोहम्मद रफीक म.प्र. हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश नियुक्त हुये।

- पश्चिम बंगाल के शुभेन्दु अधिकारी ने टी.एम. सी से इस्तीफा दिया यह ममता बनर्जी को झटका लगा।

■ 17 दिसम्बर

- भारत-बांग्लादेश के बीच 55 साल बाद बंद हल्दीबाड़ी-चिल्हाटी रेलवे लाईन फिर शुरू हुई।

- फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुअल मैक्रौ कोरोना से संक्रामित हुये।

- सुप्रीम कोर्ट ने सरकार से कृषि कानूनों की होल्ड करने एवं किसानों से विरोध का तरीका बदलने को कहा।

■ 18 दिसम्बर

- म.प्र. युवक काँग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष विक्रान्त भूरिया बने।

- लंदन 820 फुट ऊंची दुनिया की सबसे बड़ी क्रेन नं 575 टन का बजन उठाया।

- आई सो एम बार के चीफ बलराम भार्गव कोरोना पॉजिटिव हुये।

■ 19 दिसम्बर

- शुभेन्दु अधिकारी सहित 11 टी.एम.सी नेता भाजपा में शामिल हुये।

- आर.एस.एस के पहले प्रवक्ता माधव गोविंद वैध का निधन हुआ वे 97 वर्ष के थे।

- काँग्रेस के वरिष्ठ नेता जयराम रमेश ने अजित डोभाल से माफी मांगी।

■ 20 दिसम्बर

- वीरभूम: अमित शाह (गृहमंत्री) की रैली में भारी भीड़ एकत्रित हुई उन्होंने पश्चिम बंगाल में परिवारवाद भ्रष्टाचार की सरकार बताया।

- दिल्ली : विष्णु गार्डन इलाके में एक फेक्ट्री की छत गिरने 5 लोगों की मौत हुई।

- पाक के प्रधानमंत्री इमरान खान को सर्जिकल स्ट्राइक का भय सताया।

■ 21 दिसम्बर

- म.प्र. के दो बार रहे मुख्यमंत्री मोतीलाल बोरा का निधन हुआ। वे 93 वर्ष के काँग्रेस के 18 वर्ष कोषाध्यक्ष रहे।

- नेपाल की संसद भंग हुई कारण नेपाली कम्युनिस्ट पार्टी की अंतर्कलह रहा।

- असम के उल्फा सहित 4 आतंकी समूहों के 65 सदस्यों के आत्म समर्पण किया।

■ 22 दिसम्बर

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को अमेरिका ने लीजेंड ऑफ मेरिट पुरस्कार से सम्मानित किया।

- डी.डी.सी चुनाव में गुपकार गठबंधन को बढ़त मिली तथा भाजपा का कमल घाटी में खिला 8 सीटें जीती।

- बलू चिस्तानी महिला को पाकिस्तानी सेना से जो भिड़ रही थी उसका शव कनाड़ा के टोरंटो के पास मिला।

■ 23 दिसम्बर

- पूर्व क्रिकेटर विशन सिंह वैदी ने डी.डी.ए से इस्तीफा दिया।

- पूर्व सांसद मदनलाल शर्मा का निधन हुआ वे 68 वर्ष के थे दो बार पुंछ से सांसद रहे।

- मलयातम कवयित्री सुगाथा कुमारी का निधन हुआ।

- फरार खलस्तानी आतंकी गुरजीत सिंह निज्जर देहली एयरपोर्ट से गिरफ्तार हुआ।

■ 24 दिसम्बर

- श्रीनगर: बारामूला में सुरक्षा बलों ने मुठभेड़ में 2 आतंकी मार गिराये 2 आतंकीयों ने आत्म समर्पण किया।

- पूर्व क्रिकेटर चेतन शर्मा सेलेक्शन कमेटी चेयरमैन बने।

- लाहौर: पाकिस्तानी आतंकरोधी अदालत ने मुम्बई आतंकी हमले के आरोपी हाफिज सईद को 15 वर्ष की कैद की सजा सुनाई।

■ 25 दिसम्बर

- केरल में सबसे कम उम्र की मेयर 21 वर्षीय आर्या राजेन्द्रन चुनी गई।

- ईटा नगर: प्रदेश में जदयू के 6 विधायक भाजपा में शामिल हुये।

- भोपाल: भाजपा कार्यालय का उद्घाटन इमामीगेट पर हुआ जिसमें 5000 कार्यकर्ता एकत्रित हुये। सरकार कोरोना को भूली।

■ 26 दिसम्बर

- रोपियों : अलपदर के आतंकी मुठभेड़ में मारे गये।

- धर्म स्वातंत्र्य विधेयक को म.प्र. के बिनेट ने स्वीकृति दी।

- राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी ने एन.डी.ए के बिनेट ने स्वीकृति दी।

■ 27 दिसम्बर

- मध्यप्रदेश में विधान सभा का सत्र स्थगित किया गया इसका कारण कोरोना है पांच विधायक एवं सचिवालय के 61 अवसर संक्रमित हुये हैं।

- पंजाब के एक वकील ने जहर खाया सोसाइड नोट में लिखा किसान काले कानून से ठगा महसूस कर रहे हैं।

- दाऊद इब्राहिम का करीबी अब्दुल माजिद कुट्टी झारखण्ड से गिरफ्तार हुआ।

■ 28 दिसम्बर

- भाजपा नेता अरूण जेटली की मूर्ति का अनावरण फिरोजशाह कोटला मैदान में हुआ।

- 18 साल बाद बिना ड्रायवर के मेट्रो ट्रेन दिल्ली में दौड़ी।

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 100वीं किसान रेल को हरी झण्डी दिखाई।

■ 29 दिसम्बर

- कर्नाटक विधान परिषद के उपसभापति एस.एल. धर्मे गोड़ा का शव रेलवे ट्रैक के पास मिला।

- भरूच लोकसभा के सांसद मनसुक भाई बासवाने भाजपा से स्तीफा दिया।

- फिल्मी सुपरस्टार रजनीकान्त ने राजनीति में न आने की घोषणा की।

■ 30 दिसम्बर

- श्री नगर : सुरक्षाबलों ने आतंकीयों से मुठभेड़ की तो पत्थरबाजों ने मुठभेड़ में रोड़ अटकाये फिर भी तीन आतंकी ढेर हुये। पत्थरबाजों के हाथ में आई.ए.एस के झण्डे थे।

- पाकिस्तान के खैबर पख्तुनबा प्रांत के एक हिन्दु मंदिर को उन्मादी भीड़ ने तोड़ा।

- पूर्व क्रिकेटर शिवराम कृष्णनन भाजपा में शामिल हुये।

■ 31 दिसम्बर

- मरियम देश की सबसे युवा पंचायत अध्यक्ष बनी केरल तिरुवनन्तपुरम ग्राम अरूआपुलम से चुनी गयी।

- मध्यप्रदेश लोकसेवा आयोग के अध्यक्ष राजेश लाल मेहरा नियुक्त हुये।

- बुलंद शहर: स्कूल के दसवीं के एक छात्र ने अपने सहपाठी को गोली मारकर हत्या कर दी उनका सीट को लेकर विवाद था।



दिशा बोध

सदाचार



1. जिस मनुष्य का आचरण पवित्र है, सभी उसकी वन्दना करते हैं; इसलिये सदाचार को प्राणों से भी बढ़कर समझना चाहिये।
2. अपने आचरण की पूरी देख-रेख रखो; क्योंकि तुम जगत् में कहीं भी खोजो, सदाचार से बढ़कर पक्का मित्र कहीं नहीं मिलेगा।
3. सदाचार सम्मानित परिवार को प्रकट करता है, परन्तु दुराचारी कलंकित लोगों की श्रेणी में जा बैठता है।
4. धर्मशास्त्र यदि विस्मृत हो जाएँ, तो फिर याद कर लिये (किये) जा सकते हैं; परन्तु सदाचार से स्खलित हो गया, तो सदा के लिये अपने स्थान से भ्रष्ट हो जाता है।
5. सुख-समृद्धि ईर्ष्या करने वालों के लिये नहीं हैं, ठीक इसी तरह गौरव भी दुराचारियों के लिए नहीं है।
6. दृढ़ प्रतिज्ञा सदाचार से कभी भ्रष्ट नहीं होते, क्योंकि वे जानते हैं कि इस प्रकार भ्रष्ट होने से कितनी आपत्तियाँ आती हैं?
7. मनुष्य समाज में सदाचारी पुरुष का सम्मान होता है; लेकिन जो लोग सन्मार्ग से च्युत हो जाते हैं, तो अपकीर्ति और अपमान ही उनके भाग्य में रह जाते हैं।
8. सदाचार सुख-सम्पत्ति का बीज होता है, परन्तु दुष्ट प्रवृत्ति असीम आपत्तियों की जननी है।
9. अवाच्य तथा अपशब्द भूल कर भी संयमी पुरुष के मुख से नहीं निकलेंगे।
10. मूर्खों को जो चाहों तुम सिखा सकते हो, किन्तु सन्मार्ग पर चलना वे कभी नहीं सीख सकते।

इसे भी जानिये

मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री

मध्यप्रदेश के पहले मुख्यमंत्री रविशंकर शुक्ल जी थे, ये काँग्रेस पार्टी से सम्बंधित थे। मध्यप्रदेश में सबसे कम अवधि तक मुख्यमंत्री का कार्यभार संभालने वाले मुख्यमंत्री श्री नरेशचन्द्र जी हैं, ये कुल 12 दिन तक मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री रहे हैं। ये वर्तमान के छत्तीसगढ़ के पुसौर विधानसभा सीट से चुन कर आये थे।

इसके अलावा भाजपा के वर्तमान उपाध्यक्ष श्री शिवराज सिंह चौहान मध्यप्रदेश में सबसे लम्बे समय तक मुख्यमंत्री का कार्यभार संभाला है, इन्होंने 13 साल 17 दिन तक मुख्यमंत्री पर बने रहे हैं। शिवराज जी के पहले यह रिकार्ड काँग्रेस के नेता दिग्विजय सिंह के पास था, दिग्विजय जी ने मुख्यमंत्री के रूप में 10 वर्षों तक कार्यभार को संभाला है जो कि मध्यप्रदेश के राधौगढ़ विधानसभा सीट से चुने गये थे।

क्र.	नाम	पदग्रहण	पदत्याग	राजनेतिक दल
01.	रविशंकर शुक्ल	1 नवम्बर 1956	31 दिसम्बर 1956	भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस
02.	भगवंतराव मंडलोई	1 जनवरी 1957	30 जनवरी 1957	भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस
03.	कैलाशनाथ काटजू	31 जनवरी 1957	14 मार्च 1957	भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस
04.	कैलाशनाथ काटजू 2	14 मार्च 1957	11 मार्च 1963	भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस
05.	भगवंतराव मंडलोई 2	12 मार्च 1962	29 सितंबर 1963	भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस
06.	द्वारका प्रसाद मिश्रा	30 सितंबर 1963	8 मार्च 1967	भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस
07.	द्वारका प्रसाद मिश्रा 2	9 मार्च 1967	29 जुलाई 1967	भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस
08.	गोविंद नारायण सिंह	30 जुलाई 1967	12 मार्च 1969	भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस
09.	नरेशचंद्र सिंह	13 मार्च 1969	25 मार्च 1969	भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस
10.	श्यामा चरण शुक्ल	26 मार्च 1969	28 जनवरी 1962	भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस
11.	प्रकाशचंद्र सेठी	29 जनवरी 1972	22 मार्च 1972	भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस
12.	प्रकाशचंद्र सेठी 2	23 मार्च 1972	22 दिसम्बर 1975	भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस
13.	श्यामा चरण शुक्ल 2	23 दिसम्बर 1975	29 अप्रैल 1977	भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस
	राष्ट्रपति शासन	--	--	
14.	कैलाशचंद्र जोशी	26 जून 1977	17 जनवरी 1978	जनता पार्टी
15.	विरेंद्र कुमार सकलेचा	18 जनवरी 1978	19 जनवरी 1980	जनता पार्टी
16.	सुंदरलाल पटवा	20 जनवरी 1980	17 फरवरी 1980	जनता पार्टी
	राष्ट्रपति शासन	18 फरवरी 1980	8 जून 1980	
17.	अर्जुन सिंह	8 जून 1980	10 मार्च 1975	भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस

18. अर्जुन सिंह 2	19 मार्च 1975	12 मार्च 1975	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस
19. मोतीलाल वोरा	13 मार्च 1975	13 फरवरी 1988	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस
20. अर्जुन सिंह 3	14 फरवरी 1977	24 जनवरी 1989	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस
21. मोतीलाल वोरा 2	25 जनवरी 1989	8 दिसम्बर 1989	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस
22. श्यामा चरण शुक्ल 3	9 दिसम्बर 1989	4 मार्च 1990	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस
23. सुंदरलाल पटवा 2	5 मार्च 1990	15 दिसम्बर 1992	भारतीय जनता पार्टी
राष्ट्रपति शासन	16 दिसम्बर 1992	6 दिसम्बर 1993	
24. दिग्विजय सिंह	8 दिसम्बर 1993	1 दिसम्बर 1997	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस
25. दिग्विजय सिंह 2	1 दिसम्बर 1998	8 दिसम्बर 2003	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस
26. उमा भारती	8 दिसम्बर 2003	23 अगस्त 2004	भारतीय जनता पार्टी
27. बाबूलाल गौर	23 अगस्त 2004	29 नवम्बर 2005	भारतीय जनता पार्टी
28. शिवराज सिंह चौहान	29 नवम्बर 2005	12 दिसम्बर 2008	भारतीय जनता पार्टी
29. शिवराज सिंह चौहान 2	12 दिसम्बर 2008	दिसम्बर 2013	भारतीय जनता पार्टी
30. शिवराज सिंह चौहान 3	दिसम्बर 2013	16 दिसम्बर 2018	भारतीय जनता पार्टी
31. कमलनाथ	17 दिसम्बर 2018	20 मार्च 2020	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस
32. शिवराज सिंह चौहान 4	23 मार्च 2021	शासनाध्यक्ष निरंतर	भारतीय जनता पार्टी

कविता

एक छल

एक गधे ने शेर की चमड़ी ओढ़ी अपने तन पर पशु पक्षी सब दहशत खाकर लगे कांपने थर थर कोई वन में दौड़ लगाये कोई चढ़ता तरु पर अफरा तफरी देख के सारी गधा हंसा उन सब पर हंसी सुनी जब हाथी ने तो उसे क्रोध भर आया गधा लपेटा लम्बी सूंड में छल का सबक सिखाया बीते अर्ध शतक बरसों में मुनि निंदक उबराये ज्ञानी ध्यानी छलीं बलीबहु गधा शेर बन धाये इनका नाटक कोई न समझा फूट डाल हरसाये विद्यासागर सूरज सन्मुख उल्लू नहिं टिक पाये गढ़े कुतर्क आगम बदलें ये सबको मूर्ख बनाये विद्यासागर की वाणी से गधे सभी घबराये चाल चली पर चल न पाई खुल गई पोल रे भैय्या शेर की छोड़ी खाल भगे खर कर रय हा हा दैय्या मुनि निंदक को क्षमा न करना अपना फर्ज निभाना करो न कोई हिम्मत अच्छा सबक सिखाना



आओ सीखे : जैन न्याय

बौद्धमत में मान्य शब्द अप्रमाणवाद

बौद्ध की मूल अवधारणा -

1) बौद्ध कहते हैं शब्द का अनुमान प्रमाण में अन्तर्भाव नहीं होता है, क्योंकि शब्द प्रमाण नहीं है तो उसका अन्तर्भाव अनुमान कैसे होगा। शब्द अप्रमाण होने से शब्द का अर्थ के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। न तो शब्द के साथ तादात्म्य सम्बन्ध है, न तदुत्पत्ति। क्योंकि शब्द के साथ अर्थ का तादात्म्य सम्बन्ध होने पर छुरा कहते ही मुँह फट जाएगा और लड्डू कहने मात्र से मुँह मीठे से भर जाएगा क्योंकि शब्द और अर्थ एक ही है।

2) शब्द और अर्थ के साथ तदुत्पत्ति संबंध भी नहीं है क्योंकि अर्थ के अभाव में शब्द उत्पत्ति देखी जाती है। केवल विकल्प वासना से ही शब्दों का जन्म होता है।

3) ज्ञान कराने में शब्द कारण नहीं है - वक्ता पुरुष के दोषों का इसमें कोई अपराध नहीं है। आप्त पुरुष निरर्थक वाक्य नहीं बोल सकता है। जो ऐसा निरर्थक वाक्य बोलता है वह आप्त पुरुष नहीं होता है। इस विपक्ष के कथन को बौद्ध अमान्य करते हुये कहते हैं। अयथार्थ ज्ञान कराने के कारण वक्ता का दोष है।

4) विकल्प वासना से शब्दों का जन्म होता है और शब्दों से विकल्पों का जन्म होता है। शब्द अर्थ को छूटा भी नहीं है।

बौद्धों के उपर्युक्त तर्कों का सटीक उत्तर देते हुये जैन आचार्य कहते हैं -

क) शब्द और अर्थ में तादात्म्य और तदुत्पत्ति संबंध न होने पर भी योग्यता रूप संबंध पाया जाता है, क्योंकि पदार्थों की शक्तियाँ निश्चित होती हैं। शब्द में प्रतिपादक शक्ति और अर्थ प्रतिपाद्य शक्ति प्रतिनियत है। अर्थात् शब्द में कहने की शक्ति है और अर्थ में कहे जाने की शक्ति है इसी का नाम योग्यता है।

ख) शब्द का अर्थ वाच्य है और अर्थ का वाचक अमुख शब्द है। इस प्रकार संकेत ज्ञान जिसे होता है उसी को शब्द अपने अर्थ को कहता है और जिसे संकेत का ज्ञान नहीं होता है उसे शब्द सुनकर भी अर्थ का ज्ञान नहीं होता है।

ग) जिसने शब्द और अर्थ के संकेत को जाना है उसी को शब्द सुनकर वाच्य अर्थ का बोध होता है। शब्द और अर्थ में वाच्य-वाचक शक्ति रूप सम्बन्ध स्वाभाविक ही होता है। केवल उसको जानने के लिये संकेत ग्रहण की आवश्यकता होती है।

यदि इस स्वाभाविक संबंध में व्यतिक्रम किया जायेगा तो दीपक और घट में प्रकाश-प्रकाशक शक्ति है उसके भी व्यतिक्रम की आपत्ति खड़ी होगी और ऐसा होने पर दीपक

प्रकाश्य और घट प्रकाशक हो जायेगा। यदि ऐसा होना प्रतीति विरुद्ध है तो शब्द का वाच्य और अर्थ का वाचक होना भी प्रतीति विरुद्ध होगा।

घ) सब शब्दों में सब अर्थों को कहने की शक्ति है किन्तु प्रतिनियत संकेत कर लेने से प्रत्येक शब्द प्रतिनियत अर्थ का ही बोध कराता है या प्रतिपादन करता है। एक ही शब्द का विभिन्न देशों में विभिन्न संकेत पाया जाता है जैसे डुकरा शब्द को म.प्र. में बुजुर्ग व्यक्ति के लिये प्रयोग किया जाता है और महाराष्ट्र में सूअर के लिये।

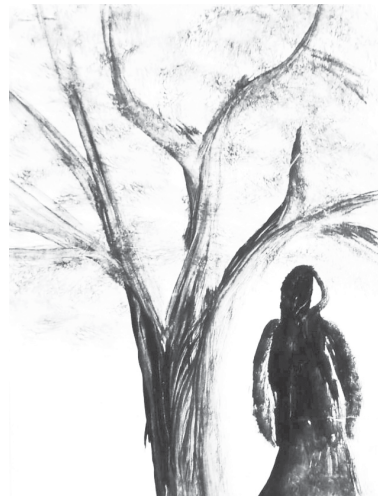
ङ) चक्षु की तरह शब्द का अर्थ के साथ योग्यता रूप संबंध है तो चक्षु की तरह शब्द संकेत ग्रहण किये बिना ही अर्थ का ज्ञान क्यों नहीं कराता है। इस बौद्ध के तर्क को अमान्य करते हुये जैन आचार्य कहते हैं कि शब्द ज्ञापक है अतः वह संकेत की अपेक्षा से ही अर्थ का ज्ञान कराता है क्योंकि जो ज्ञापक होता है वह ज्ञापक और ज्ञाप्य के संबंध को जिसने पहले से जान लिया है उस पुरुष को ही ज्ञाप्य का ज्ञान कराता है। इसी तरह शब्द भी ज्ञापक है किन्तु चक्षु ज्ञापक नहीं है कारक है।

अतः बौद्धों द्वारा यह कथन की शब्द अर्थ को नहीं छूता है पूर्ण रूपेण अनुचित है।

च) शब्द के द्वारा ही स्वपक्ष का साधन और परापक्ष का निराकरण किया जाता है तथा तत्वज्ञान में उत्पन्न हुये विवादों का परिहार शब्द के द्वारा ही होता है।

कविता शीत का कहर

कहीं पर शीत सी लहरें, कहीं कोहरा घना छाया
कहीं पर धूप दिखती हैं, कहीं पर कांपती काया
न जाने ठण्ड ये जालिम, करेगी जुल्म अब कितना
फूल पत्तों पर ये मोती, ओस की बूँद क्या माया।
लोग कहते हैं कि दुश्मन, ठण्ड क्यों आती है
जो बूढ़े लोग बेचारे, उन्हें ये डर दिखाती है
सूरज भी ठण्ड में सिकुड़ा, नजर कोहरे में न आता
मौन सब लेकर बैठे हैं कोयल नहीं बोल पाती है
ये मौसम कब बदल जाये, फिजा न साथ देती है
बदलती करवटें बेला हंसी आंसू बहाती है
ये नाते टूट जाते हैं रिश्ते छूट जाते हैं
कभी रीते कभी हंसते खुशी गम साथ लाती है।



प्रो. सागरमल जैन का जैन साहित्य के विकास में योगदान

✽ डॉ. आशीष कुमार जैन, बम्हौरी ✽

भारत भूमि पर बीसवीं सदी में एक विशिष्ट विद्वत्-परम्परा का अभ्युदय हुआ। बीसवीं सदी के मध्य तक आते-आते एक नवीन विद्वत्परम्परा का जन्म हुआ। जिसने पाश्चात्य पद्धति पर संस्कृत, प्राकृत तथा जैन दर्शन और साहित्य का समीक्षात्मक अध्ययन कर नये प्रतिमानों के अनुरूप साहित्य की सृष्टि की। इस शताब्दी में कुछ तुलनात्मक अध्ययन भी प्रारम्भ हुये जिससे नयी पीढ़ी के दृष्टिकोण की व्यापकता का अनुमान लगता है। इस परम्परा में सिद्धान्तिक अध्ययन की तीक्ष्णता, विशदता तथा गम्भीरता गहन शोध के विषय है। फिर भी, ऐसा अवश्य प्रतीत होता है कि बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध और उत्तरार्ध के विद्वत्-वर्ग को एक-दूसरे के पूरक बनने की प्रक्रिया उतनी सरल नहीं दिखाई पड़ती। अस्तु, ढंग से ही सही, यही पीढ़ी भी पुरानी पीढ़ी के कार्य को आगे बढ़ाती हुई जैन संस्कृति एवं समाज को दिशा निर्देशन कर रही है।

बीसवीं सदी की विशिष्ट विद्वत् परम्परा के अन्तर्गत दिगम्बर परम्परा पं. जुगलकिशोर मुख्तार, पं. खुशालचंद्र जैन (गोरा वाला), डॉ. नेमिचन्द्र जैन शास्त्री, पं. नाथूराम प्रेमी, पं. फूलचन्द्र सिद्धांतशास्त्री वाराणसी, पं. जगमोहनलाल जी, पं. कैलाशचन्द्र शास्त्री, पं. सुमेरचन्द्र दिवाकर, डॉ. हीरालाल जैन, डॉ. ए.एन. उपाध्ये, पं. बालचन्द्र जैन, पं. वंशीधर व्याकरणाचार्य, पं. अमृतलाल शास्त्री, प्रो. उदयचन्द्र जैन, वाराणसी, डॉ. महेन्द्र कुमार न्यायाचार्य, डॉ. पन्नालाल जैन, डॉ. दरबारीलाल कोठिया, पं. मूलचंद्र जी शास्त्री, पं. हीरालाल जी सिद्धांतशास्त्री सादूमल, पं. गोकुलचन्द्र जैन, पं. चैनसुखदास तथा डॉ. ज्योतिप्रसाद जैन आदि उच्च कोटी के विद्वानों में आते हैं। इस परम्परा ने प्राकृत भाषा और साहित्य की हिन्दी टीका के साथ नये मौलिक ग्रंथों का भी सृजन किया है। युगानुरूप सिद्धान्तिक व्याख्याएँ भी प्रस्तुत की। इस युग में अनेक व्यक्तियों ने जैन धार्मिक साहित्य और प्राकृत साहित्य का अंग्रेजी में अनुवाद हुआ है। इससे विदेशों में जैन धर्म और इसके इतिहास के सम्बंध में अनेक भ्रान्तियाँ दूर हुई।

जैन श्वेताम्बरों में विद्वत् परम्परा इतनी विकसित नहीं पाई जाती। इस परम्परा में धर्म प्रचार व जागरण का कार्य आचार्यों एवं सूरियों ने किया है। हाँ, इस सदी में पं. सुखलाल संघवी, पं. बेचरदास दोशी, पं. दलसुख भाई मालवाणिया, अमरचन्द्र नाहटा तथा डॉ. सागरमल जी जैन जैसे विद्वानों ने अपना बहुमूल्य योगदान दिया है।

डॉ. सागरमल जैन का जीवन परिचय- जैन संस्कृति एवं जैन परम्परा के साहित्य के विकास में बीसवीं शताब्दी में प्रो. सागरमल जैन का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उन्होंने अपने जीवन काल में जैन साहित्य के विकास हेतु अनेकों कार्य किये हैं। आज डॉ. सागरमल

जी हमारे बीच में नहीं रहे है। उन्होंने 2 दिसम्बर 2020 को संथारा पूर्वक अपनी देह का परिवर्तन कर देवलोक गमन किया।

प्रो. सागरमल जैन का जन्म भारत के हृदय मालवा अंचल के शाजापुर नगर में विक्रम संवत् 1988 की माघ पूर्णिमा तदनुसार 22 फरवरी 1932 ई. के दिन हुआ था। आपके पिता श्री राजमल जी शक्कर वाले मध्यम आर्थिक स्थिति होने पर भी ओसवाल समाज के प्रतिष्ठित व्यक्तियों में माने जाते थे। आपका गोत्र मण्डलिक है। आपकी माता श्रीमती गंगाबाई एक धार्मिक महिला थी। माध्यमिक (मिडिल) परीक्षा में प्रथम श्रेणी के साथ-साथ शाजापुर जिले में प्रथम स्थान प्राप्त किया। 17 वर्ष की वय में प्रवेश करते ही वैशाख शुक्ल त्रयोदशी विक्रम संवत् 2005 तदनुसार 21 मई 1948 को आपको श्रीमती कमलाबाई के साथ दाम्पत्य सूत्र में बांध दिया गया। सन् 1955 में हाईस्कूल की परीक्षा दी। और सन् 1957 में इण्टर कामर्स की परीक्षा दे ही दी और इस परीक्षा में भी उच्च द्वितीय श्रेणी के अंक प्राप्त किये। सन् 1961 में बी.ए. परीक्षा द्वितीय श्रेणी से उत्तीर्ण की। सन् 1963 में एम.ए. दर्शन शास्त्र उत्तरार्द्ध की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। आपको म.प्र. शासन की ओर से दर्शनशास्त्र की व्याख्याता पद पर नियुक्ति का आदेश प्राप्त हुआ। आपकी प्रथम नियुक्ति महाकौशल महाविद्यालय, जबलपुर में हुई। संयोग से वहाँ आपके पूर्व परिचित उस समय के आचार्य रजनीश बाद में (भगवान और ओशो) उसी विभाग में कार्यरत थे। डाक्टर साहब ने महारानी लक्ष्मीबाई स्नातकोत्तर महाविद्यालय ग्वालियर जाकर अपना पदभार ग्रहण किया। ग्वालियर में आपका प्रवास पूरे तीन वर्ष रहा। नवम्बर 1967 में आपको शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय इन्दौर स्थानान्तरित किया गया एवं जुलाई 1967 में सहायक प्रध्यापक एवं विभागाध्यक्ष बनाकर आपको हमीरिया महाविद्यालय भोपाल भेज दिया गया। आपने जैन, बौद्ध और गीता के आचार-दर्शनों का तुलनात्मक अध्ययक जैसा व्यापक विषय लेकर पी.एच.डी की उपाधि हेतु अपना पंजीयन करवाया और शोध प्रबन्ध लिखने की तैयारी में जुट गये। एवं शोध प्रबन्ध पूर्ण किया। आपने 1979 में पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान में निर्देशक पद का कार्यभार ग्रहण किया था। अतः आपके कार्यकाल में 50 से अधिक ग्रंथ प्रकाशित हुये। विशेष रूप से आपने अर्धमागधी आगम और अर्धमागधी भाषा के क्षेत्र विस्तार से कार्य किया।

हीरक जयन्ती स्मारिका में लिखा है कि आज यह कल्पना भी दुष्कर लगती है कि एक बालक जो 15-16 वर्ष की वय में ही व्यावसायिक और पारिवारिक दायित्वों के बोझ से दब सा गया था, अपनी प्रतिभा के बल पर विद्या के क्षेत्र में अपना प्रभुत्व स्थापित कर लेगा। आज देश में जैन विद्या के जो गिने-चुने शीर्षस्थ विद्वान हैं, उनमें अपना स्थान बना लेना यह डॉ. सागरमल जैन जैसे अध्यवसायी, श्रमनिष्ठ और प्रतिभाशाली व्यक्ति की ही क्षमता है। यद्यपि वे आज भी ऐसा नहीं मानते हैं कि यह सब उनकी प्रतिभा एवं अध्यवसायिता का

परिणाम है। उनकी दृष्टि में यह सब मात्र संयोग है। वे कहते हैं जैन विद्या के क्षेत्र में विद्वानों का अकाल ही एकमात्र ऐसा कारण है, जिससे मुझ जैसा अल्पज्ञ भी सम्मान और प्रतिष्ठा प्राप्त कर लेता है। किन्तु हमारी दृष्टि में यह केवल उनकी विनम्रता का परिचायक है।

आपने गुरुओं के गुरु बनकर आपनी पहचान श्वेताम्बर जैस समाज में बनाई थी। आपने 200 साधु-साध्वियों को शास्त्रों का ज्ञान प्रदान किया। जैन समाज की दिगम्बर एवं श्वेताम्बर दोनों परम्पराओं के अनुसार आप समाज के एक मात्र ऐसे प्रोफेसर हैं जिनके मार्गदर्शन में 50 साधु संतों ने शोध कर पी.एच.डी की उपाधि प्राप्त की है। आपकी प्राकृत वाङ्मय में निपुणता व शास्त्रों में पाण्डित्य के लिये सन् 2018 में भारत देश के राष्ट्रपति ने अपने कर कमलों से आपको राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित किया था। आपने शाजापुर में सन् 1999 में प्राच्य विद्यापीठ की स्थापना की थी।

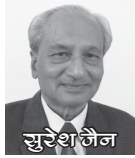
अनेकों पुस्तकों का सम्पादन एवं लेखन किया जिसमें प्रमुख ग्रन्थ इस प्रकार है-

सम्पादित ग्रन्थ : जैन साहित्य के विविध आयाम (खण्ड 1-3) मणिधारी जिनचन्द्रसूरि काव्यांजलि आदि अपने लगभग 50 ग्रंथों का सम्पादन किया।

ग्रंथ लेखन : धर्म का मर्म, अर्हत पार्श्व और उनकी परम्परा, सागर जैन विद्या भारती (भाग 1-7), जैन कर्म सिद्धान्त का उद्भव और विकास, जैन धर्म का यापनीय सम्पदाय, ऋषिभासित- एक अध्ययन, तत्त्वार्थ सूत्र और उसकी परम्परा, जैन धर्म में नारी की भूमिका, गुणस्थान सिद्धांत: एक विश्लेषण, जैन धर्म और तान्त्रिक साधना, अहिंसा की प्रासंगिकता, स्थानकवासी जैन परम्परा का इतिहास आदि लगभग 60 ग्रंथों का लेखन किया। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में 200 से भी अधिक आपके आलेख प्रकाशित हैं। आपके आलेखों में मुख्य आलेख इस प्रकार है- अर्धमागधी भाषा का उद्भव एवं विकास, अर्धमागधी आगम साहित्य : एक विमर्श, अर्धमागधी आगम साहित्य में समाधिमरण की अवधारणा, अशोक अभिलेखों की भाषा मागधी या शौरसेनी।

ऋषिभासित- एक अध्ययन : इसका लेखन डॉ. सागरमल जैन ने किया है। प्रस्तुत ऋषिभासित जैन परम्परा का ई. पू. चतुर्थ शती में निर्मित प्राकृत भाषा का एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है। इसमें जैन परम्परा के प्रारम्भिक उदार दृष्टिकोण का परिचय मिलता है। इसमें 45 ऋषियों के उपदेश संकलित हैं। यह बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य है इससे प्राकृत भाषा और साहित्य के विकास में गति प्रदान होगी।

काशी की सांस्कृतिक गरिमा एवं जैन विद्या के लिये समर्पित विद्वानों में आपका स्थान प्रमुख रहा है। डॉ. सागरमल जी का पार्श्वनाथ विद्यापीठ की विकास यात्रा में अनन्य सहयोग रहा है। आप जन विद्या के लब्ध प्रतिष्ठित मनीषी हैं। विद्यापीठ के शैक्षणिक विकास में आपका महत्वपूर्ण योगदान है जिसका निरूपण हम लेखनी के माध्यम से नहीं कर सकते हैं।



क्रमांक-2 वरिष्ठ नागरिक गर्व का अनुभव करें

बुजुर्ग अथवा सीनियर सिटिजन हो जाने पर गर्व का अनुभव करें। ढलती उम्र की आहट आने पर जिंदगी की दौड़ में अधिक पूर्ति और स्फूर्ति का अहसास करें। दिमागी तौर पर अपने आप को बूढ़ा न बनने दें। अपनी सोच को सदा सकारात्मक रखें। समझने की कोशिश करें कि बुढ़ापा दरवाजे पर मौत की दस्तक नहीं। मौत का कोई कैलेण्डर नहीं इसलिये मरने से पहले जीना नहीं छोड़ना चाहिये। इंसान चलता रहे, घूमता रहे, सैर करे, दौड़ता रहे, सैर सपाटा करे, एक्सरसाइज करे, योगा करे, जितना मुमकिन हो अपने शरीर को हिलाते झूलाते रहो नहीं तो शरीर को जंग लग जायेगा।

अब फिर बुढ़ापे की ओर बढ़ें। हवेली के खंडहर से उसकी शान का अंदाजा लगाया जा सकता है। जवानी भविष्य की बातें करती है, बुढ़ापा अतीत के किस्से सुनाता है। जवानी तथा बुढ़ापे का उम्र से कोई सम्बन्ध नहीं, यम मन की ही अवस्थायें हैं। जीवन में हर उम्र का अपना महत्व है, अगर जवानी कुछ करने में विश्वास रखती है तो बुढ़ापा सोच-विचार कर अपना आधार बनाता है और परिवार को तथा दूसरों के जीवन को सही दिशा देकर उन्हें भी जीवन का आनन्द उठाने में सहायक होता है। ढलती उम्र में बदलाव के साथ तालमेल बिठाकर स्थिति के अनुरूप स्वयं को ढालकर सम्मान पूर्वक जीवन जियें।

बुजुर्ग होना सबकी नियति है। जो आज बुजुर्ग है वे बीते कल के युवा थे। आज के युवा थे। आज के युवा वर्तमान के बुजुर्ग की लाठी बने। सम्मान करें और उनकी उपस्थिति से समाज में अपना लोहा मनवायें और गौरवान्ति अनुभव करें। बुजुर्ग जीवन को विस्तार देते हैं, गहराई देते हैं, उनके पास समय भी है। आज की आपाधापी और तनाव में लगा वट वृक्ष निरन्तर छाँव देता है, आराम के लिये आँचल देता है, प्रदूषण मुक्त प्राकृतिक वातावरण देता है, वैसे ही एक बुजुर्ग की उपस्थिति अपनी शुभकामनाओं और शुभ भावनाओं, सुन्दर भविष्य की पवित्र कामनाओं और अपनी ममता और स्नेह की शुभ इच्छाओं से सदैव आश्वस्त करती है। संरक्षण प्रदान करती है। वे घर अभागे हैं, जिनके घर में बुजुर्गों की उपस्थिति नहीं है। वह सिर वरदान हीन हैं, जिनके सिर पर बुजुर्गों का स्नेह सिंचित आशीर्वाद भरा हाथ नहीं है, वह तन और मन अपंग हैं जो किसी बुजुर्ग के चरण स्पर्श करने का अवसर नहीं पाते। आज जो समाज के बुजुर्ग हैं वह अपना धन-यश, प्रतिष्ठा समेटे हुये सुरक्षा कवच प्रदान कर रहे हैं ताकि आज के बच्चे भी उनसे प्रेरणा लेते हुये अपने बुजुर्गों को अपना आदर्श, अपना संरक्षक, पथ प्रदर्शक और सच्चा मित्र समझ कर उनकी उचित देखभाल करें जो कि एक सबसे पवित्र पूजा और ईबादत है। अपने को ऐसा करने से उनका

सम्मान बढ़ेगा और आपका यश एवं जीवन की सबसे बड़ी खुशी मिलेगी।

बढ़ती उम्र और अनुभव का शिखर ईश्वर का आशीर्वाद है इस समय बुजुर्गों के दिल को देखो अब चेहरा न देखो। हर इंसान में परिवर्तन तो होना ही है, हमें यह स्वीकार करना चाहिये कि एक दिन हम सभी बूढ़े होंगे। दुनिया में सदैव सीखते रहो, क्योंकि दुनिया का विस्तार आपके सामने निरन्तर हो रहा है, जिन्दगी में रूकने के लिये कोई जगह नहीं। बढ़ते चलो उम्र का हिसाब नहीं, जीवन बहता झरना है। शरीर चाहे बूढ़ा हो जाये पर मन जवान रहे। बचपन से बुढ़ापे तक अनेक अनुभव होते रहते हैं, उनसे प्रभावित हो, कभी कोई मन से अपने उद्गार प्रकट कर देता है।

समय हमेशा एक सा नहीं रहता। रात के बाद उजाला अवश्य आता है अपनी सोच और विचार सदैव सकारात्मक (POSITIVE) रखिये। बुजुर्गों की इज्जत करना बचपन से ही अपने स्वभाव से शामिल करिये। बच्चा प्यार मांगता है, जवानी अधिकार और बुढ़ापा सम्मान। इनकी रूढ़ करें तो जीवन में सत्ता और संपत्ति के लिये संघर्ष से मुक्ति मिल सकती है। जहाँ बुजुर्गों की खुशबु है वहाँ घर के भाग ड्यूटी से ही नजर आ जाते हैं।

कविता आत्मगीत

* शिखरचन्द्र शिखर (गंजबासौदा) *

ऐसी बुद्धि कर दो भगवन, आत्म ध्यान में जायें हम।

दीवाली पर रत्नत्रय के, मन में दीप जलाओं हम ॥

राग द्वेष और मोह का चक्कर, अब करना है दूर प्रभु

और कषाय के कारण भटके, अटके हैं हर बार प्रभु

मिले मार्गदर्शन कुछ ऐसा, सही मार्ग पर जायें हम।

दीवाली पर रत्नत्रय के, मन में दीप जलायें हम ॥

कर्मों ने बाँधा है हमको, इस जग में भटकाने को

करते हैं मजबूर प्रभू, यहाँ बार बार फिर आने को

पा जायेंगे फिर इस जग से, जन्म मरण छुटकारा हम।

दीवाली पर रत्नत्रय के, मन में दीप जलायें हम ॥

झूठा जग है झूठे सब हैं, फिर किसको अपना मानूँ

रत्नत्रय ही सच्चे साथी, जग से तारेंगे जानूँ

अतः ज्ञान की छैनी दे दो कर्म काटने जायें हम।

दीवाली पर रत्नत्रय के मन में दीप जलायें हम ॥

ऐसी बुद्धि कर दो भगवन, आत्म ध्यान में जायें हम।

दीवाली पर रत्नत्रय के मन में दीप जलायें हम ॥



प्रवचन-आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज करना है कम समय में बड़ा काम



आप दैनन्दिनी और रात्रिक संबन्धी जो कोई भी गतिविधियां करते हैं, उन सभी में शरीर में रक्त संचार होता है। वह रक्त का संचार हमें देखने को उपलब्ध नहीं होता किन्तु वह सर्वत्र हुआ करता है। यदि किसी अंग में वह संचार प्रभावित हुआ तो शरीर के उस अंग में अस्त-व्यस्त पना आ सकता है जिसके द्वारा शरीर में चैन का अनुभव न होकर एक प्रकार से आकुलता/पेशानी का अनुभव हुआ करता है।

ऐसा ही कुछ हम अपने जीवन में अथवा सामायिक जीवन में देखने को मिलता है। जिससे गड़बड़ियाँ हो जाती हैं। इसलिये कभी भी ये लोग (मुख्यमंत्री जी/नेता लोग) समय पर नहीं आ पाते। जहाँ कहीं भी जाते हैं उस गड़बड़ी को ठीक करने में लग जाते हैं। कल आना था-आज रात में आये। सुबह आना था 10.30 पर आ पाये। क्या करें ?

हमारा भी ऐसा ही जीवन चलता है। किन्तु चातुर्मास में चार महीने एक ही स्थान पर रहते हैं। गत दो वर्ष पूर्ण चातुर्मास भोपाल में हुआ। वहाँ पर भी बाहर तो आते ही हैं, राजधानी में भी व्यस्त रहते हुये भी आये। एक बार तो पैरों में फोले आ गये। 3 दिन तक पूरा विश्राम लेना पड़ा, किन्तु इन्होंने पूजन-भक्ति में अपने समय का सदुपयोग किया।

तो इस प्रकार जैसे हम एक ठिकाने पर नहीं रहते, वैसे ही ये भी एक ठिकाने पर नहीं रहते। इनका तो घर भी है तो वह विधानसभा ही है, वहीं से सारा संबंध रहता है। जनता के घर-घर में पहुंचकर दुःख-सुख में सहभागिता देकर उनको योगदान देते रहते हैं। इनके उपस्थित होने से इतना अवश्य है कि जनता में उल्लास आ जाता है। वे सोचते हैं कि हमारे लिए भी कोई पूछने वाला है।

केवल चुनाव के समय ही नहीं अन्य समय भी जनता के बीच में जाना चाहिये। मैं समझता हूँ जो भी कार्य होते हैं 5 वर्ष की अवधि बहुत कम पड़ जाती है। “जीवन की इस यात्रा में भी अवधि कम एवं कार्य बड़े-बड़े हैं।” जीवन हमेशा-हमेशा प्रभु के भरोसे ही रहता है। इसलिये अच्छे कार्य-जनता की भलाई प्रकृति के ऊपर निर्भर है। अच्छे भावों के बिना प्रकृति कभी भी हमारा साथ नहीं देती।” सात्विक भावों की परम आवश्यकता है। सात्विकता के द्वारा प्रजा का बहुत अच्छे से पालन होता है। अब केवल मध्यप्रदेश की ही नहीं, पूरे भारत की भी बात किया करें।

कहानी प्रायश्चित

शाम के चार बज रहे थे सूरज को बादलों ने घेर रखा था ऐसा लगने लगा था जैसे थोड़ी ही देर में सूरज अस्ताचल की ओर चला जायेगा पक्षी अपने-अपने



सांझ के ठिकाने ढूँड रहे थे और पक्षी वृक्षों पर बैठकर आने वाले अपने साथियों से दिन भर का हालचाल पूछ रहे थे। जनवरी का महीना छोटे दिनों के लिये प्रसिद्ध रहता है और मधुवन के आस-पास लगभग साढ़े चार बजे अधेरा छाने लगता है। ढावाठाना में शिवदयाल मण्डल साइकिल की पंचर की दुकान करता था दिनभर खूब मेहनत करके शिवदयाल दो पांच सौ रुपये कमा लेता था लेकिन शिवदयाल को एक चस्का था वो जितना कमाता था उतने ही ही शराब पी जाता था उसकी पत्नी पूनम भी मधुवन जाकर मेहनत मजदूरी करती थी एवं उसकी पन्द्रह साल की बेटी भी मेहनत मजदूरी किया करती थी परेशान पूनम पैसों की बचत करने में खूब समझदार थी लेकिन शिवदयाल के सामने पूजन की एक नहीं चलती थी शिवदयाल खाऊ उड़ाऊ किस्म का व्यक्ति था उसने कभी जीवन में बचत का महत्व समझ ही नहीं था

जितना कमाता था उतने से ज्यादा खर्च कर देता था न तो वह बच्चों की पढ़ाई पर ध्यान देता था न ही किसी भी प्रकार के भविष्य को सोचा करता था। शिवदयाल

के लिये कई लोगो ने बैठाल कर खूब समझाया था। जब उसे कोई समझाता था तो वह कहता था मैं अब बिल्कुल सुधर जाऊँगा आप मुझे मौका दो लेकिन शराब की लत ने उसे जकड़ लिया कि वह शराब पीने के बाद समझाने वाले को ही अपना निशाना बना लेता था। और उससे अभद्र व्यवहार करता था।

शिवदयाल की अभद्रता से सभी लोग परेशान थे खासतौर से उसकी पत्नी, पत्नी के साथ शिवदयाल जब चाहे तब मारपीट भी किया करता था ढाबा ठाना का सरपंच रामपूजा मिश्र भी बहुत परेशान हो चुका था। वैसे तो वह शिवदयाल से दूरी बनाकर रखता था पर एक दिन रामपूजा ने सोचा कि समझाकर देखों शायद हो सकता है मेरी बात को वह मान जाये शिवदयाल जब सामान्य था तो रामपूजा ने उसे अपने पास बुलाया और बड़े प्यार से समझाया और उससे कहा देखो बेटा शिवदयाल जो अपने जेब और मुँह को बिना सोचे समझे खोलता है। तो वह बर्बाद ही होता

है तुम्हारे पास जेब और मुँह बिना सोचे समझे खोलने की आदत है देखा शराब पीना एक बुरी बात है शराब पीने अपनी प्रतिष्ठा भी खराब होती है और साथ में शरीर भी खराब होता है लीवर भी मोटा हो जाता है आते सड़ने लगती हैं फेफड़े खराब हो जाते हैं मस्तिष्क में स्मृति खराब हो जाती है खून की उल्टिया तक होने लगती है देखो तुम अपनी मेहनत से पैसे कमाते हो और शराब में बहा देते हो परिणाम यह आता है कि अन्त में बर्बादी के सिवा और कुछ नहीं होता है अन्त में आदमी स्वर्ग चला जाता है वैसे शराबी को भी स्वर्ग तो मिलता नहीं है फिर भी लोग यह कहते हैं कि स्वर्ग वासी हो गया।

शिवदयाल ने एक रामपूजा के सामने एक प्रश्न रख दिया आप लोग शराब को इतना बुरा क्यों मानते हैं जबकि समुद्र मंथन में शराब एक रत्न के रूप में निकली थी और जिस सुरा को असुरों ने ग्रहण की थी तभी रामपूजा ने बीच में बोला कि देखो तुम्हारी बात में एक बात आई कि शराब को किसने लिया असुरों ने तो शिवदयाल तुम खुद सोचो कि शराब कौन पीता है असुर ही पीते हैं, श्रीमद् भागवत् गीता में शराब पीने को असुर संपदा कहा है एवं तामसी वृत्ति भी कहा है शराब पीने वाला मदहोश हो जाता है वह यह नहीं समझ पाता है कि मैं क्या कर रहा हूँ और क्या कह रहा हूँ शराब पीने वाले को झगड़ा करना गिफ्ट में मिलता है उनका हाथ पैर और मुँह पर कोई नियंत्रण नहीं रहता है यहाँ तक कि देखा जाता है शिवदयाल कि शराब पीकर आदमी कभी सड़क के किनारे भी सो जाते हैं और कुत्ते आकर उन पर पेशाब कर देते हैं ऐसा शायद कभी तुम्हारे साथ ही हुआ होगा। शिवदयाल रामपूजा कि यह बात सुनकर भड़क उठा और बोला बस-बस सरपंच साहब मैंने तुम्हारी

बहुत सुन ली अब मुझे कुछ भी नहीं सुनना है मुझे पता है तुम मेरी औरत को पैसा क्यों देते हो मैं किसी दिन तुम्हारी सारी पोल खोल दूंगा जिस दिन मैं पकड़ लूंगा उस दिन तुम्हारी जेल ही पहुँचाऊँगा। आप मेरे से कह रहे हैं कि कुत्ता तुम्हारे ऊपर पेशाब कर चुका होगा ये आपको कब पता है कब आपने ऐसा देखा और उठकर शिवदयाल सीधा कलारी गया। उसने फिर छककर शराब पी शराब पीकर वह लौटकर आया सरपंच रामपूजा के घर के सामने वह ललकारने लगा गंदी-गंदी बातें करने लगा ओर उसने सरपंच पर आरोप लगा दिया कि तू मेरी औरत के साथ संबंध रखता है सरपंच रामपूजा ने सारी बात सहन कर ली और कहा जा तू घर सो जा और जब तेरी शराब उतर जायेगी तब बात करेंगे।

पूनम और पूनम की बेटी ने जब यह बात सुनी तो उन्हें बहुत बुरा लगा पूनम ने अपनी बेटी से कहा दिया दरवाजा बन्द कर लो और आज इसे घर नहीं आने देना है ऐसे आदमी से क्या बात करना जिसने मेरे चरित्र पर कलंक लगा दिया हर मुसीबत में सरपंच साहब ने सहयोग ही तो दिया है जब उसको खून की उल्टियां हो रही थी तब अस्पताल इलाज कराने कौन ले गया था पैसे किसने दिये थे ये सब भूल गया और ये नई बात इसने बना ली ऐसे आदमी से क्या बात करना क्या फायदा घर आयेगा लड़ाई होगी और मुहल्ला वाले तमाशा देखेंगे शिवदयाल घूमते-घामते घर आया दरवाजा बन्द था उसने दरवाजा खुलवाने के प्रयास किये किन्तु दरवाजा नहीं खुला आखिर में लड़खड़ाते-लड़खड़ाते स्कूल में पहुँच गया और वहीं सो गया खूब ज्यादा शराब पी लेने से उसे कब क्या हो गया पता नहीं चल पाया और सरपंच ने गुस्सा में

आकर यह तय कर लिया कि आज तो इसे सबक जरूर सिखायेंगे वे अपने समर्थकों के साथ शिवदयाल को दूढ़ने का सोचने लगा क्योंकि बुरा लगा कि मैंने आज तक कभी किसी दूसरे की औरत को बुरी नजर से नहीं देखा फिर भी इसने आरोप जड़ दिया आज तक किसी की हिम्मत नहीं हुई कोई भी इस तरह की बेतुकी बातें मेरे से कर सके। अगर आज मैंने शिवदयाल को कुछ नहीं कहा तो गांव वाले यह समझ लेंगे कि जरूर कुछ न कुछ बात है तब तो शिवदयाल ने चिल्लाकर के कहा और यही सोचकर सबक सिखाने का तय किया।

लम्बा ऊँचा राजपूता पठानी कुर्ता पहने दरवाजे की चौखट ऊपर से दोनों हाथ से पकड़े हुये खड़ा-खड़ा सोच रहा था कि इतने में रामकिशन आया और उसने रामपूजा से हाथ जोड़कर के कहा राम-राम भाई जी क्या बात है आज बड़े उदास से दिख रहे है तक राजपूजा कुछ नहीं बोला और आसमान की तरफ देखता रहा तथा थोड़ी देर बाद आंखों को पोछते हुये भीतर से ही गहरी सांस ले ली तब रामकिशन ने कहा भाई सब कुछ मामला समझ नहीं आ रहा आपको क्या हो गया है आंखों में आंसू आसमान की तरफ नजरें बता रही हैं कि आपको जैसे कोई बड़ा सदमा सा लग गया हो पर मैं तो आपका खास आदमी हूँ मुझे तो आप कुछ बतायेंगे या नहीं गम के घूट पीने मात्र से कोई भी समस्या का हल नहीं होता है आपके लिये मेरी जान हाजिर है बताओं मैं अभी आपके लिये सौ आदमी बुला लूंगा क्या हो गया है क्या बात है रामकिशन के विशेष आग्रह करने पर मुँह से गहरी सांस लेते हुये रामपूजा ने कहा आज मुझे अनुभव हुआ है कि ह्वोम करने से हाथ कैसे जलते हैं एक अदना सा आदमी इतनी बड़ी बात कह गया जिसका मैंने हर तरह

से साथ दिया और वह कहा गया कि मैं आपकी पोल खोल दूंगा। अरे यार भाई साहब नाम तो बताओ है कौन आदमी वो।

तेरे लिये क्या बता दें तू क्या जानता नहीं है एक ही तो अदमी है जो कुछ भी बक सकता है। वह है बस शिवदयाल मैंने तो उसे समझाने की कोशिश की थी और वह बन रहा था अपने आप में बड़ा भारी राजनेता तब रामकिशन ने कहा भाई साहब आप कुछ मत करो आप ये मामला मेरे जुम्मे करो मैं अपने दस आदमी बुलाता हूँ वे सब सुधार कर रख देंगे।

जब रामपूजा ने कहा देखा रामकिशन भाई मैं हिंसा का रास्ता नहीं अपनाना चाहता हूँ पर आज ऐसा लग रहा है कि यदि मैंने कुछ नहीं किया तो लोग समझेंगे कि रामपूजा कहीं न कहीं से अपनी सरपंची का नाजायज फायदा उठा रहा है मेरी सारी बनी बनाई इज्जत मिट्टी में मिल जायेगी पर यदि मैं उसके साथ कुछ भी मारपीट करूँ तो मुझे ऐसा लगता है कि जैसे मैं किसी मुर्दे पर डंडा चलाकर मूर्खता कर रहा हूँ हर तरह से फंस चुका हूँ तब रामकिशन ने कहा।

भाई साहब मूर्खों को उपदेश देना और सांपो को दूध पिलाना एक ही जैसा होता है सांप को कितना ही दूध पिला दो वह जब उगलेगा तब जहर ही उगलेगा इसी तरह मूर्खों को समझाने और उनको पास बिठाने से हम दुविधा में ही फंसेंगे शिवदयाल के पास खोने को तो कुछ है ही नहीं है पर हमारे पास खोने के सिवा और कुछ नहीं है।

इतना कहकर रामकिशन अपना मोबाइल निकाला और किसी से बात की फिर मोबाइल में जेब में रख लिया थोड़ी देर में दस लठेत खड़े हो गये और उन्होंने कहा हुकुम भाई साहब तो रामपूजा और रामकिशन और लठेत निकल पड़े रामकिशन ने मोबाइल की

टार्च जला रखी थी परन्तु वहां शिवदयाल की स्थिति ही बदल गई।

कड़के की ठण्ड में शिवदयाल स्कूल में पड़ा था पर उसे ठण्ड महसूस नहीं हो रही थी क्योंकि वह शराब पिये हुये था वह शिवदयाल को कब अटैक आ गया इसे कोई बता नहीं सकता था शिवदयाल की आत्मा दुनिया से गुजर चुकी थी और उसका सिर्फ शरीर पड़ा था।

रामपूजा ने आदमी शिवदयाल के घर गये और पता लगाया तो पूनम ने बताया कि मुझे मालूम नहीं है कि वो कहाँ है क्योंकि मैंने तो उनके लिये घर के दरवाजे ही बन्द कर रखे हैं। मैं कर भी क्या सकती हूँ जो जैसा करेगा वैसा भरेगा।

रामपूजा ने पूनम से ज्यादा बात नहीं की और रामकिशन को इशारा किया कि चलें यहाँ बात करने से कोई फायदा नहीं है बेचारी पूनम खुद ही शिवदयाल से दुखी है वह कर भी क्या सकती है वह तो एक गाय है इसके माता पिता ने यहाँ इसको बांध दिया है चलो चले।

रामकिशन और रामपूजा दूढ़ने के लिये फिर निकल पड़े स्कूल के बरान्दे में दिवाल की ओट में लेटा हुआ। शिवदयाल रामकिशन को दिख गया रामकिशन ने इशारा करते हुये कहा कि वह सो रहा है जाओ तुम लोग काम करके आ जाओ रामकिशन के आदमी गये अपने लठ्ठ बरसाने लगे पर शिवदयाल की कोई आवाज नहीं इस पर रामकिशन को लगा कि कहीं ऐसा तो नहीं कि हमने मुर्दे पर लठ्ठ बरसा दिये हो रामकिशन ने टार्च जलाकर देखा कहीं कोई ऐसी चोट तो नहीं आई कि शिवदयाल राम का प्यारा हो गया हो रामकिशन ने पहले ही अपने आदमियों को कह रखा था कि ऐसी जगह कोई भी लठ्ठ नहीं चलाया जाये जिससे हड्डी टूट जाये व कोई निशान आ जाये अपने-अपने घर जा कर सो गये जैसे-जैसे रामपूजा

कि रात बीती सुबह हो गयी।

रामपूजा चाय पी रहा था स्कूल का चपरासी सरपंच साहब चिल्लाते हुये आया तब रामपूजा ने कहा क्यों भाई सुबह-सुबह से क्यों चिल्ला रहा क्या हो गया।

तब चपरासी छुटके राय ने कहा कि मालिक शिवदयाल की लाश पड़ी है और उसकी राम-राम हो गयी।

तो रामपूजा ने कहा हम कोई पुलिस वाले तो हैं नहीं तुम एक काम करो मधुवन चले जाओ और सब बात बड़े साहब को बता देना।

छुटकेराय फुर्ती से मधुवन चला गया और उसने बड़े साहब को सब बात कह दी बड़े साहब ने शिवदयाल की लाश को बरामद किया और चिरकी पोस्ट मार्टम के लिये भेज दिया चिरकी से पोस्टमार्टम की रिपोर्ट आने तक सरचंप रामपूजा बहुत तनाव में रहा लेकिन जब पोस्ट मार्टम की रिपोर्ट आ गई कि शिवदयाल की मृत्यु हार्टअटैक से हुई है और उसने जहरीली शराब पही हुई थी।

रामपूजा की बैचेनी तो खत्म हो गयी परन्तु कई दिनों तक पछतावे में डूबा रहा परन्तु उसे खुशी इस बात की थी कि उसने किसी भी तरह की पोस्टमार्टम बदलवाने की कोशिश नहीं की पर दुख इस बात का था कि उसने किसी मुर्दे पर डंडे बरसाकर कोई बहादुरी नहीं की जिसने गालियाँ दी थी वह चेतन था उसे मैं कभी देख भी नहीं पाया और शिवदयाल वह नश्वर शरीर नहीं था चेतन दिखता नहीं है और जो दिखा रहा है वो चेतन नहीं है इसीलिये मुझे मध्यस्थता रखनी चाहिये थी कभी रामपूजा ने अपना पढ़ा हुआ पाठ याद कर लिया दुर्जन कूर कुमार्ग रतों पर क्षोभ नहीं मुझको आवे और वह शान्त हो गया अपनी गलती का उसने खूब प्रायश्चित्त किया।

हमारे गौरव सेनापति रेचिमथ्यय

सेनापति रेचिमथ्यय- इस युग की सर्वाधिक उल्लेखनीय जैन वीर है। रेच रेचणू रचरसू रेचिराज रेचि या रेचिमथ्य की माता का नाम नागासिका और पिता का नाम नारायण था। पत्नी का नाम गौरी था। उसका ध्वज चिन्ह वृषभ था अत एव वृषभ ध्वज भी कहलाता था। वसुधैक-बान्धम् उसका सुप्रसिद्ध विरुद्ध था। दण्डाधिनाथ महाप्रचण्डदण्डनायक, चमूपति, महासेनापति, सचिवोत्तम, मंत्रीश्वर, आदि पदवी धर यह वीर कलचुरी नरेश बिज्जल का दाहिना हाथ था उस नरेश के लिये उनसे सप्तांग साम्राज्य सम्पत्ति प्राप्त की थी और उसका उपयोग उसे तथा उसके उत्तराधिकारियों को कराया था। उसी के हाथों के सहारे कलचुरी नरेशों की राज्यरूपी लता सुख पूर्वक प्रसरित हुई थी। उक्त नरेशों से उसे अनेक जागीरें मिली थी जिनमें अत्यन्त सुन्दर नागरखण्ड प्रदेश प्रमुख का उस प्रान्त का शासन भी सीधे यह रेचिमथ्य ही करता था बिज्जल के उपरान्त उसके सभी वंशजों के समय में उसका रूतवा और प्रतिष्ठा वैसी ही बनी रही और जब कलचुरियों का सूर्य अस्त हो गया और उनके स्थान में द्वार समुद्र के होयसल नरेश देश के स्वामी हुये तो उन्होंने भी वीर रेचिमथ्य को वही पद प्रतिष्ठा प्रदान की। सेनापति रेचिमथ्य अनुपम रणशूर होने के साथ ही साथ अनुपम दान शूर भी था। यह ऐसा उदारदानी था कि जगत् में साक्षात् कल्पवृक्ष की भांती शोभायमान था। उसके सुशासन में नागरखण्ड प्रदेश की सर्वतोमुखी अविवृद्धि हुई कहा जाता है कि गंगराज ने संपूर्ण जैन जगत के लिये जो कुछ किया दण्डाधीश रेचिमथ्य ने अपने प्रान्त के लिये उससे कुछ अधिक ही किया। जिन धर्म के हित और प्रभावना के लिये उसका उद्योग अंतहीन था। शिकारपुर तालु के चिक्कमागडि नामक स्थान के एक जैन सम्मेलन में जो अब लिंगायतों के चन्नवसवण्ण मंदिर में परिवर्तित हैं।

कविता हम गीत गाते हैं

देव गुरु शास्त्र पर हम दम जियेंगे अरू मरेंगे हम संत सच्चे मुमुक्षु हैं कहेंगे जोर देकर हम ये संयम साधना मूर्त विरागी शुद्ध उपयोगी नहीं भय लोभ कोई है जपेंगे विद्यासागर हम जिन्होंने जोड़ना सीखा नहीं उलझे विवादों में रखी रचनात्मक दृष्टि वक्त नहीं खोया यादों में मौन ही जिनका उत्तर है नहीं समझो ये कमजोरी करें ये आत्म का चिन्तन नहीं सोते हैं रातों में नहीं ये तानते भृकुटी नहीं नजरें उठाते हैं भक्त शत्रु में समता है नहीं बातें बनाते हैं तेज चेतन का इतना है टिके नहीं चाँद अरू सूरत उन्हीं विद्यासागर के हम जय हो जग गीत गाते हैं।



महात्मा के महात्मा राष्ट्रपिता महात्मा गांधी पर श्री मद राजचन्द्र का प्रभाव

* डॉ. महेन्द्र कुमार जैन, इन्दौर *

महात्मा गांधी जी छवि भारतीय स्वतन्त्रता आंदोलन के प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी, मार्गदर्शक एवं समाज सुधारक के रूप में सामने आती है। गांधी जी ने देश के निर्माण में जिस शस्त्र के बलबूते पर अहम भूमिका निभाई वह है अहिंसा।

महात्मा गांधी अनासक्त कर्मयोगी साधक थे। कार्य निपुणता, वाक पटुता, शालीनता, अच्छे श्रोता, राजनेता ही नहीं वे वास्तविक रूप में जननेता थे। आदर्श तो ऐसे कि जब उनके पास एक महिला अपने बच्चे को गुड़ अधिक खाने की शिकायत लेकर आई तब उन्होंने उससे कुछ दिन बाद में आने को कहा। इस अवधि में उन्होंने गुड़ खाना छोड़ा, जब वह महिला पुनः आई तब उन्होंने उसके बच्चे को अधिक गुड़ न खाने की सलाह दी। कुछ बाद बुलाये जाने का करण पूछने पर उन्होंने बताया कि उस समय वे स्वयं गुड़ खाते थे तो बच्चे को मना कैसे कर सकते थे। ये थी गांधी जी की आदर्श प्रस्तुती करण की शैली। आज पिता स्वयं सिगरेट फूंकता हो और बेटे से कहे कि धूम्रपान मत करना, वह हानिकारक होता है, तो कैसे प्रभाव पड़े। गांधी जी की सभी क्षेत्रों में दक्षता थी।

वे पर पीड़ा को अपनी पीड़ा समझ कर परमार्थ में लगे। बापू आज जितने प्रासंगिक है शायद आने वाले कई दशकों बाद चर्चा चले कि एक फक्कड़ साधु ने अहिंसा से हिन्दुस्तान को स्वतंत्रता दिलाई तो विश्वास करना उस पीढ़ी के महात्मा गांधी जी के परिवार पर जैन धर्म का प्रभाव होने के कारण उन पर भी बाल्यकाल से जैन धर्म का प्रभाव रहा। वे प्रारम्भ से ही शाकाहारी रहे। आत्मशुद्धि के लिये वे उपवास को महत्व देते थे। और उनके संस्कार जैन धर्म से बहुत प्रभावित थे। वे जैन विद्वानों के निरन्तर सम्पर्क में रहते थे।

महात्मा गांधी जी श्रीमद् राजचंद्रजी को धर्म के सम्बन्ध में अपना मार्गदर्शक मानते थे। वे लिखते हैं

मुझ पर तीन पुरुष ने गहरा प्रभाव डाला है- टाल्सटॉय, रस्किन और रायचन्द्र भाई। टाल्सटॉय ने अपनी पुस्तकों द्वारा और उनके साथ थोड़े पत्र व्यवहार से, रस्किन ने अपनी एक ही पुस्तक अन्टु दि लास्ट से जिसका गुजराती नाम मैंने सर्वोदय रखा है, और रायचन्द्र भाई ने अपने गाढ़ परिचय से जब मुझे हिन्दुधर्म में शंका पैरा हुई उस समय उसके निवारण करने में मदद करने वाले रायचन्द्रभाई थे।

श्रीमद्रायचंद्र जिन्हे गांधी जी रायचन्द्र भाई कहते थे और कभी वे उन्हें कवि भी लिखते हैं- का प्रभाव गांधी जी कार्यक्षेत्र भावनगर और जामनगर रहा। ये सब क्षेत्र महात्मा गांधी जी के जन्म व कार्यक्षेत्र रहे हैं इस कारण से भी रायचन्द्र जी से महात्मा गांधी का सम्पर्क निरन्तर रहा।

श्रीमद् जी शतावधनी थे। शतावधान अर्थात् सौ कामों को एक साथ करना। जैसे शतरंज खेलते जाना, माला के मनके गिनते जाना, जोड़ बाकी गुणाकार एवं भागाकार मन में गिनते जाना, आठ नई समस्याओं की पूर्ति करना, सोलह निर्दिष्ट नये विषयों पर निर्दिष्ट छन्द में कविता करते जाना, सोलह भाषाओं के अनुक्रमविहीन चार सौ शब्द कर्ताकर्म सहित पुनः अनुक्रमबद्ध कह सुनाना आदि। महात्मा गांधी ने रायचन्द्र जी से सौ प्रश्न पूछे और रायचन्द्र जी ने उन्हें उसी क्रम में उत्तर दिया। तब से गांधी जी रायचन्द्र जी के मुरीद हो गये थे। गांधी जी ने श्रीमद् राजचन्द्र के विषय में कई पत्र लिखे। एक जगह वे लिखते हैं जो वैराग्य (अपूर्व अवसर एवो क्यारे आवशे) इस काव्य की कड़ियों में झलक रहा है वह मैंने उनके दो वर्ष के गाढ़ परिचय में प्रतिक्षण उनमें देखा है। उनके लेखों में एक आधारगता यह है कि उन्होंने जो अनुभव किया वही लिखा है। उसे कहीं भी कृत्रिमता नहीं है। दूसरे पर प्रभाव डालने के लिये एक पंक्ति भी लिखी हो ऐसा मैंने नहीं देखा। खाते, बैठते, सोते, प्रत्येक क्रिया करते उनमें वैराग्य तो होता ही। किसी समय इस जगत् के किसी भी वैभव में उन्हें मोह हुआ हो ऐसा मैंने नहीं देखा।

व्यवहार कुशलता और धर्मपरयाणता का जितना उत्तम मेल मैंने कवि में देखा उतना किसी अन्य में नहीं देखा। यही अहिंसा और आत्मशक्ति हेतु उपवास के संस्कारों को गांधी जी ने स्वतंत्रता आन्दोलन के हथियार बना लिया। गांधी जी सबसे बड़े निष्काम कर्मयोगी थे, किन्तु उन्होंने न कभी सन्यासी का चोला पहना, न पहनने दिया। उन्होंने जब अहमदाबाद में साबरमती आश्रम शुरु किया तो एक सन्यासी सत्यदेव महाराज गांधी से मिलने आये। गांधी जी के जीवन और आदर्श से प्रेरित होकर सत्यदेव ने गांधी जी के साथ आश्रम में रहने की अनुमति मांगी और उन्होंने कहा कि मैं आपके साथ रहकर देश की आजादी के लिये और समाज सेवा के लिये आश्रम में रहना चाहता हूँ। गांधी जी ने स्वामी सत्यदेव जी को आश्रय में रहने के लिये अनुमति तो दे दी लेकिन उनके सामने एक शर्त रखते हुये कहा कि वे धर्म छोड़ने के लिये नहीं कह रहे हैं, केवल सन्यासी का चोला छोड़ने को कह रहे हैं। क्योंकि आश्रम लोगों की सेवा के लिये चला रहे हैं। आपको भी सेवा करनी होगी। अगर यह सन्यासी का चोला धारण किय रहेंगे तो सभी लोग आपकी सेवा में लग जायेंगे और आप जन सामान्य की सेवा नहीं कर पाओगे। स्वामी सत्यदेव गांधी जी की बात सुनकर आश्रम छोड़कर चले गये थे।

गांधी जी के करिश्माई नेतृत्व के कारण हर वर्ग युवा, प्रौढ़, व्यापारी, शिक्षित, महिलायें, उद्योगपति, धार्मिक पत्रकार उनसे प्रभावित था। रक्तपात का उनकी नैतिक दृष्टि में कोई स्थान नहीं था। परपीड़ा को अपनी पीड़ा समझ कर जनसाधारण के प्रति प्रेम ही गांधी जी की प्रमुख पूंजी थी।

ड्रग्स एण्ड कॉस्मेटिक रूल्स 1945 में संशोधन प्रक्रिया केन्द्र सरकार की उदासीनता से धीमी

* विजय कुमार जैन, राघौगढ़ *

हम जिन अंग्रेजों दवाओं का सेवन करते हैं जिन सौंदर्य प्रसाधनों का प्रतिदिन उपयोग करते हैं वह पूर्णतः शाकाहारी सामग्री से निर्मित हैं या उनमें मांसाहारी सामग्री का उपयोग किया जाता है। इससे अंग्रेजी लगभग सभी दवाओं में मांसाहार का उपयोग किया जा रहा है। भारत में आजादी के पूर्व अंग्रेजों ने जो **ड्रग्स एण्ड कॉस्मेटिक रूल्स 1945** बनाया था, वहीं रूल्स आज तक चल रहा है। लगभग 75 वर्ष से यही नियम चल रहा है। इससे नियम संशोधन की प्रक्रिया इतनी शिथिल है कि भारत सरकार भी यह बताने की स्थिति में नहीं है कि संशोधन कब तक पूर्ण हो जायेंगे।

भारत सरकार के डायरेक्टर जनरल हेल्थ सर्विसेस सेन्ट्रल ड्रग्स स्टेण्डर्ड आर्गनाइजेशन (CDSCO) में आर टी आई सेल के असिस्टेंट ड्रग्स कंट्रोलर आई एण्ड सीपीआईओ ने आर टी आई एक्ट 2005 के संबंध में अपने पत्र क्रमांक 28020/635/2020 सीडी में दिनांक 28.10.2020 को सूचना प्रदत्त की है। उन्होंने पत्र में उल्लेख किया है कि ड्रग्स एण्ड कॉस्मेटिक रूल्स 1945 में संशोधन करने साबुन, शैम्पू, टूथपेस्ट, तथा अन्य सभी प्रकार के सौंदर्य व प्रसाधन सामग्रियों पर मांसाहार युक्त सामग्री होने लाल/भूरे रंग से एवं से शाकाहार युक्त सामग्री होने हरे रंग से प्रत्येक पैकेट पर डॉट रूप चिन्ह बनाया जाना विचाराधीन है।

इस कार्य को मूर्त रूप देने के लिये ड्रग्स टेक्निकल एडवाइजरी बोर्ड (DTAB) की 79वीं मीटिंग विगत 16 मई 2018 को सम्पन्न हो चुकी है। उक्त बोर्ड की मीटिंग में साबुन, शैम्पू, टूथपेस्ट तथा अन्य सभी प्रकार की सौंदर्य प्रसाधन के पैकेट पर एजेण्डा क्रमांक 8 के अनुसार शाकाहार सामग्रियों से निर्मित होने पर हरे रंग (Green Colour) से और मांसाहार सामग्रियों से निर्मित होने भूरे/लाल रंग (Red/Brown Colour) से डॉट रूपी चिन्हों को अनिवार्यतः बनाया जाना स्वीकृत किया था। यह जानकारी (CDSCO) की वेबसाइट www.cdsc.gov.in पर भी उपलब्ध है।

ड्रग्स एण्ड कॉस्मेटिक रूल्स :- 1945 में एतद् विषयक संशोधन हेतु ड्राफ्ट नोटिफिकेशन हेतु तैयार होने के बावजूद शिथिल गति पूर्वक प्रक्रिया होने से वह अभी तक विलंबित ही है। जबकि डीटीएबी की 79 वीं मीटिंग को सम्पन्न हुये अब तक 2 वर्ष 6 माह से भी अधिक समय व्यतीत हो चुका है। खेद का विषय है कि दीर्घ कालावधि व्यतीत हो जाने के बाद भी अभी तक संशोधन प्रक्रिया पूर्ण नहीं हो सकी।

जैनाचार्य विद्यासागर जी महाराज के परम प्रभावक सुयोग्य शिष्य मुनि अभयसागर जी महाराज आरोन जिला गुना संसंघ विराजमान हैं। प्रस्तावित संशोधन में हो रहे विलंब पर मुनि अभयसागर जी महाराज का कहना है सौंदर्य व प्रसाधन सामग्रियों का उपयोग देश भर के प्रत्येक उपभोक्ता प्रायः कर प्रतिदिन ही साबुन, शैम्पू व टूथपेस्ट आदि वस्तुओं के रूप में करते हैं। भूरे/लाल अथवा हरे रंग वाले चिन्ह पैकेट पर नहीं होने से ऐसी वस्तुओं में प्रयुक्त मांसाहार

सामग्रियों के होने पाये जाने की सूचना मिलने पर उन्हें अत्यधिक मानसिक त्रास/कष्ट झेलना पड़ता है। आपका कहना है उक्त लंबित संशोधन होकर अधिसूचना जारी हो जाने से पैकेट के ऊपर मांसाहार तथा शाकाहार पदार्थों के ऊपर बनाये जाने वाले चिन्हों को देखकर उपयोग करने पर उपभोक्ताओं को होने वाले मानसिक परिताप से छुटकारा मिल सकेगा।

भारतीय शरीर भारतीय चिकित्सा अभियान को लगभग चालीस वर्षों से चला रहे डॉ. नरेन्द्र जैन भोपाल का कहना है अंग्रेजों दवाओं एवं मांसाहार सामग्रियों से निर्मित सौंदर्य प्रसाधन वस्तुएँ अंग्रेजों की देन हैं। अंग्रेजों दवाओं के सेवन से एक बीमारी ठीक होकर दो नई बीमारी हमारे शरीर में आ जाती है। अंग्रेज दवाओं में मांसाहार सामग्रियों का प्रचुर मात्रा में उपयोग होता है। इसी प्रकार कॉस्मेटिक एवं सौंदर्य प्रसाधनों में भी मांसाहार सामग्रियों का प्रयोग होता है। जिन वस्तुओं का उपयोग हम सौंदर्य में निखार के लिये करते हैं, उनसे हमारे शरीर को जो हानि होती है वह तत्काल नहीं दिखती है। आपका कहना पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण कर हम स्वास्थ्य रहने अंग्रेजी दवाओं का निरंतर सेवन कर रहे हैं साथ सौंदर्य में निखार के लिये मांसाहार सामग्री से निर्मित सौंदर्य प्रसाधन सामग्रियों का प्रतिदिन उपयोग कर अनेक बीमारियों को जन्म दे रहे हैं।

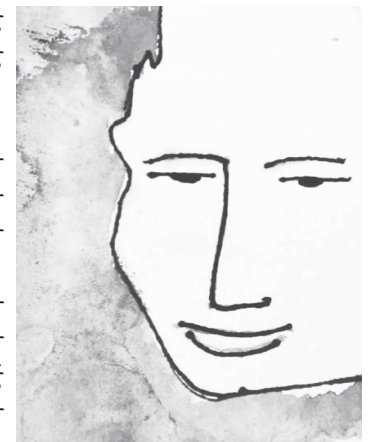
ड्रग्स एण्ड कॉस्मेटिक रूल्स 1945 में संशोधन को लागू कर अधिसूचना जारी करने में विलंब से यह आशंका हो रही है कि अन्तर्राष्ट्रीय एवं भारतीय कॉस्मेटिक उत्पादक कंपनियों के दवाव में भारत सरकार नियम में संशोधन की अधिसूचना जारी करने अनिवार्यक विलंब करके कंपनियों को लाभ पहुंचाने का प्रयास कर रही है। शाकाहारी समाज द्वारा संशोधन की अधिसूचना जल्दी जारी कराने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी एवं केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री डॉ. हर्षवर्धन को ज्ञापन भेजे जा रहे हैं।

नोट : लेखक स्वतंत्र पत्रकार एवं भारतीय जैन मिलन के राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष है।

कविता

भावलिङ्गी इस युग में

तुम्हारा लहजा बताता है कि बुद्धि कितनी ओछी है तुम्हारे बोल कहते हैं कि सोच कितनी छोटी है दिगम्बर साधुओं पर तुम अनरगल बात करते हो, तुम्हारा गुरु कहता है तुम्हारी नीति खोटी है। जरा तुम अपने को जानो, जरा अपने में तुम झाखो नहीं तुमने गुरु समझा, नहीं तुम गप्प ये फाको सही आगम क्या कहता है, नहीं तुम शास्त्र को बदलो अरे असली मुमुख बन नहीं सम्यक्त्व पर जाँचो। करे जो यम, नियम पालन महाव्रत पूर्ण जो योगी सकल संयम के धारी हैं, नहीं जो विषयों के भोगी तत्व चिंतन निरत रहते नहीं पर निंदा करते हैं भाव लिङ्गी जो इस युग में गुरु विद्यासागर योगी-योगी



प्रागैतिहासिक पुरातात्विक विरासत का क्षेत्र-नवागढ़

✽ शोध छात्रा : श्रीमती अर्पिता रंजन, आरा ✽

भारतीय संस्कृति में सभी कलाओं एवं विधाओं का समावेश है। प्राचीन भारत की प्राकृतिक विशेषता है कि यहाँ ग्रीष्म, वर्षा, शीत के साथ हेमंत, शिशिर एवं वसंत छह ऋतुओं से पर्यावरण हराभरा एवं समृद्धशाली रहता है। इसीलिये भारत के प्रत्येक प्रदेश की लोककला लोक संस्कृति, लोक परम्परायें, लोक संगीत, लोक साहित्य, लोक शिल्प से लोक जीवन विभिन्न आयामों से उत्प्रेरित सृजनशीलता से अपनी पहचान बनाकर भारतीय संस्कृति की विराटता, वैशिष्ट्य से सम्पूर्ण विश्व को चमत्कृत करती है।



विशेषतया बुन्देलखण्ड में सर्वधर्म समभाव, साहित्य, कला, शिल्प स्थापत्य का उद्भव एवं विकास का चर्मोत्कर्ष, समृद्धि, खुशहाली, से जनजीवन सदैव उन्नतशील रहा है। यहाँ के शासकों ने कृषि को मुख्यता प्रदान कर हजारों कूप, बावड़ी तथा सैकड़ों विशाल सरोवरों से भूमि की उर्वरा शक्ति से समृद्धि विकास के साथ आत्मशांति-संतोष हेतु अध्यात्म एवं भक्ति के आयाम भी स्थापित किये हैं। जिनसे जीवन में स्थिरता एवं पारस्परिक मैत्रीभाव विकसित होता रहा है।

इसी समृद्धि एवं धन वैभव के आकर्षण ने राज्य विस्तार, सैन्यबल एवं शक्ति का दुरुपयोग, वैमनस्य-ईर्ष्या ने युद्ध की विभीषिका को भी उद्दीप्त किया है। धन-वैभव की चाहत, काम वासना तथा राज्यलिप्सा ने सैकड़ों समृद्धशाली विशाल नगरों को भी ध्वस्त कराया है। जिसके उदाहरण महोबा, लासपुर, सलक्षणपुर, मदनपुर, दुधही, चांदपुर, सैरौन, नवागढ़, अजयगढ़ एवं खजुराहों हैं।



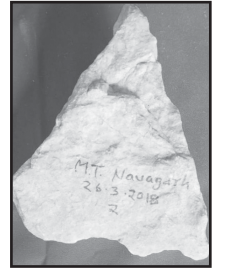
जहां अन्य क्षेत्रों में मूर्ति एवं स्थापत्य के साक्ष्य मिले हैं वहीं नवागढ़ में इनके साथ पुरावैशिष्ट्य विलक्षण है। 10 किमी. विस्तार वाले नवागढ़ में किये गये अन्वेषणों ने इसकी सम्पन्नता, आध्यात्मिक साधना केन्द्र, गुरुकुल परम्परा, महानगरीय संस्कृति के साथ सर्वधर्म समभाव, कला-शिल्प की समृद्धि के रहस्य उद्घाटित किये हैं।



यहाँ लोवर पैलियोलेथिक (2 से 15 लाख वर्ष) मिडिल पैलियोलेथिक (35 हजार से 2 लाख वर्ष) अपर पैलियोलेथिक (12 हजार से 35 हजार वर्ष) प्राचीन पाषाण कालीन सभ्यता, हजारों वर्ष प्राचीन प्राकृतिक साधना शैलाश्रय, पैट्रोलिक कपमार्क, 15 हजार वर्ष प्राचीन मैसोलेथिक रॉक आर्ट, रॉक पेंटिंग जिसमें जैन दर्शन के महत्वपूर्ण गूढ़ रहस्य छिपे हैं। गले में पहनने वाले मिट्टी पाषाण के मनके से लेकर गुप्तकालीन एवं प्रतिहार कालीन मूर्ति शिल्प, चंदेल कालीन बावड़ी-स्थापत्य जिन मंदिरों के समूह जिनमें संवत् 1123, 1188, 1195, 1202, 1203, 1490, 1548, 1586, 1885 से आज तक की मूर्तियाँ अन्वेषित की गयी हैं।

यह पुरातात्विक सम्पदा जैन धर्म की प्राचीनता उद्भव एवं विकास के सशक्त साक्ष्य नवागढ़ को प्रागैतिहासिक धरोहर का विशाल क्षेत्र घोषित करते हैं।

ऐसे प्रागैतिहासिक पुरा सम्पन्न क्षेत्र के टीलों में न जाने कितने रहस्य संरक्षित है जो भारतीय संस्कृति की अमूल्य विरासत को अपने अंदर समेटे हुये है। डॉ. मारुतिनंदन प्रसाद तिवारी, डॉ. गिरिराज कुमार जैसे पुरातत्त्वविद जैन दर्शन के इस नवागढ़ के साक्ष्यों का अन्वेषण करके गौरवान्वित हैं। उनका कहना है हमने कई क्षेत्रों में कार्य किया परन्तु नवागढ़ जैसी पुरा सम्पदा अत्यंत विलक्षण एवं विशिष्ट हैं।



मुझे ऐसी साइट पर कार्य करने का सौभाग्य ब्र. जयकुमार जी निशांत, श्री संजय मंजुल सर एवं मेरे निर्देशक डॉ. प्रकाशराय के सद् प्रयास एवं आशीर्वाद का फल है। शासन-प्रशासन से अनुरोध है ऐसे क्षेत्रों में अन्वेषण कर भारतीय संस्कृति के विशेष आयाम स्थापित करें।

सहायक अधीक्षण पुरातत्त्वविद् संस्कृत अभिलेख पं. दीनदयाल उपाध्याय
पुरातत्त्व संस्थान ग्रेटर नोयडा

जैन विद्या संस्कृति प्रश्न मंच

संशोधन: जैन विद्या संस्कृति प्रश्न मंच के प्रश्न अब हर माह संस्कार सागर में 100 आयेंगे। उनके उत्तर आपको प्रतिमाह की 29 तारीख तक भेजना होंगे प्रश्न मंच की चयनित परीक्षा दिसम्बर माह के अंतिम सप्ताह में होगी।

नियम: संस्कार सागर में प्रतिमाह एक कूपन प्रकाशित होगा उस कूपन का आपको संग्रह करना होगा दसों कूपन को मिलाकर श्री दिगम्बर जैन युवक संघ का प्रतीक चिन्ह बन जायेगा जो आपको एक कागज पर चिपकाकर संस्कार सागर कार्यालय में प्रेषित करना होगा जिसके दसों कूपन पूर्ण होंगे उसे ही पुरस्कार की पात्रता होगी। निर्णायक मण्डल का निर्णय अंतिम और मान्य होगा।

प्रथम, द्वितीय, तृतीय पुरस्कार क्रमशः 1 लाख रूपया नगद एवं स्मृति चिन्ह श्री गजेन्द्र जैन (गिन्नी ग्रुप) इन्दौर, 51000 रूपया नगद एवं स्मृति चिन्ह श्री आजाद मोदी (मोदी प्रिंटर्स) इन्दौर, 31000 नगद एवं स्मृति चिन्ह श्री नीरज जैन (गजेन्द्र पब्लिकेशन) दिल्ली की ओर से दिया जावेगा। समान अंक अधिक लोगों के आने पर ड्रॉ सिस्टम से पुरस्कार पात्रता का निर्णय होगा। उत्तर सीट पर काटा पीटी होने पर उत्तर सीट को अमान्य किया जायेगा। पुरस्कार पात्रता के लिये संस्कार सागर का सदस्य होना अनिवार्य है।

प्रत्येक माह इन ग्रंथों से पूछे जायेंगे 100 प्रश्न - (1). मार्च-छहदाला दर्पण, (2). अप्रैल-तीर्थंकर 108 ज्ञातव्य, (3). मई- विराट स्वरूप विद्यासागर, (4). जून-मेरी जीवन गाथा भाग-2, (5). जुलाई-आदिपुराण भाग-1, (6). अगस्त- लघु जिनचक्र विधान, श्रीपुर पार्श्वनाथ विधान 50-50 प्रश्न, (7). सितम्बर-संस्कार सागर चातुर्मास विशेषांक सितम्बर, (8). अक्टूबर-कहानी संग्रह (एलक सिद्धांतसागर जी द्वारा रचित), (9). नवम्बर-जैन गौरव (श्री हुकुमचंद जी सावला), (10). दिसम्बर-सन्मति तर्क सूत्र।

उपयुक्त ग्रंथ संस्कार सागर कार्यालय में उपलब्ध हैं। आप शीघ्र मंगवायें

खरटि कहीं जीवन को खतरे में न डाल दें

* जिनेंद्र कुमार जैन (इन्दौर) मो. 9977051810 *

सोते समय सांस लेने के साथ तेज आवाज और कंपन होती है उसे खरटि लेना कहते हैं। खरटि मुंह या नाक किसी से भी आ सकते हैं। जब सांस अंदर की ओर लेते हैं तो हवा का बहाव गले की त्वचा में स्थित उत्तकों में कंपन पैदा करता है। देश में औसतन 10 व्यक्ति में 1 व्यक्ति इस समस्या से ग्रसित होकर आज प्रत्येक परिवार में पायी जाती है। महिलाओं की अपेक्षा पुरुषों में अधिक होती है क्योंकि उनकी सांस नली पतली होती है। सामान्यतः 15 साल से अधिक उम्र के बाद बिमारी के शुरुआती लक्षण दिखने लगते हैं। 35 साल के बाद गम्भीर रूप ले सकती है। खरटि किसी भी समय शुरु और बंद भी हो सकते हैं। इसके लक्षण 1. तेज आवाज के साथ सांस लेना और छोड़ना, 2. थोड़ी-थोड़ी देर में कुछ समय के लिये सांस रुकना, 3. धीरे-धीरे सांस रुकने की रफ्तार और समय बढ़ना, 4. सोते समय सांस रुकने पर हड़बड़ाकर जागना, 5. दिन भर सुस्ती और आलस्य से भरे रहना, 6. नींद पूरी होने पर भी दिन भर नींद आना, 7. गले में खरास, एकाग्रता में कभी, स्वभाव में परिवर्तन, रात में पसीना आना, रक्तचाप बढ़ना आदि।

खरटि आने का प्रमुख कारण 1. मोटापा- वजन बढ़ने से गर्दन पर ज्यादा मांस लटकने लगता है जिससे सोते समय सांस नली पर दबाव पड़ने से सांस लेने में दिक्कत होती है, 2. जीभ बड़ी व मोटी होने से गले में संकुचन बढ़ जाता है, 3. शराब व धूम्रपान से अल्कोहल की अधिकता से गले की मांस पेशियाँ फैल जाती हैं उनके शिथिल होने से उनका खिंचाव कम होने से खरटि आने लगते हैं, 4. नीचे के जबड़े का छोटा होना, 5. सोने का गलत तरीका, 6. वात एवं कफ दोष, 7. छोटी गर्दन होना। इसके अतिरिक्त, साइनस, हमेशा सर्दी रहना, नाक का टेढ़ापन, बच्चों से टांसिल बढ़ना, नाक का बंद होने से मुंह से सांस लेना, नींद की गोली लेना सही तकिये व साफ बिस्तर का चुनाव नहीं होने से खरटि से रक्त में ऑक्सीजन की मात्रा घटने से दिमाग का सफेद कोशिकाओं की क्षति होने से स्ट्रोक आने की संभावना हृदय रोग, सुगर, उच्च रक्तचाप, पीठ दर्द, वजन बढ़ना आदि गम्भीर समस्याओं का जन्म दे सकता है।

सावधानियाँ- खरटि की शुरुआत से जीवन शैली में बदलाव से नियंत्रण हो सकता है जिसमें 1. सोते समय पीठ के बल सोने की बजाय पेट के बल या करवट लेकर सोने से जीभ और नरम तालु शिथिल होकर गले में पीछे की तरफ झुकते नहीं हैं, जिससे वायु मार्ग में रुकावट नहीं होती है। 2. शराब, धूम्रपान से बचे, 3. सोने के लिये उचित व साफ तकिये का उपयोग करना, 3. भूख से कम भोजन करना व रात को सोने के दो घंटा पूर्व भोजन करें, 4. पर्याप्त 8 घंटे की नींद लेवें व समय पर सोयें, 5. नियमित योग व व्यायाम अवश्य करना चाहिये।

नियंत्रण उपाय - 1. पिपरमेन्ट आइल की कुछ बूंदों को पानी में डालकर गरारे करना और इसकी कुछ बूंदें रूमाल में रखकर सूघने से गले के मोटे उत्तकों को सिकोड़ने में मदद करता है व नाक के रास्ते को खोलता है। 2. एक कप उबलते पानी में पोदीने की कुछ पत्तियाँ डालकर ठंडा करके छानकर पानी से भी लाभ अवश्य मिलता है। इसके अतिरिक्त हल्दी का दूध, इलायची, उपयोग, स्टीम भाप लेना लाभदायक है। सभी चिकित्सा पद्धति में समय पर इलाज संभव है।

खरटि को अनदेखा करने पर जान लेवा भी हो सकते हैं। कई बार नींद में सांस रुक जाती है, यदि सांस रुकने की अवधि बढ़ जाती है तो जान जा सकती है व देर होने पर गम्भीर स्वास्थ्य समस्याओं का जन्म देती है। खरटि से परिवार व पड़ोसियों की नींद में बाधा पड़ती है। अतः पर्याप्त नींद, चिन्ता तनाव को छोड़कर, जीवन शैली में बदलाव द्वारा तन मन को स्वास्थ्य रखते हुये जीवन को सुरक्षित रख सकते हैं।



हास्य तरंग

1. एक महिला अपनी सहेली से शादी के बाद से आपके पति का रंग धीरे-धीरे निखर रहा है क्या जादू कर दिया है ? सहेली- बात कुछ भी नहीं है शादी के पहिले वे कोयले की दुकान चलाते थे अब आटा पीसने की चक्की चलाते हैं।
 2. सेठी जी लड़की को देखने आये लड़के से पूछते हैं, मैंने सुना है कि कुछ दिन पहिले तुम्हें जेल भेजा गया था उसका कारण क्या हुआ था। लड़का शरमाते हुये जी कुछ भी नहीं मेरा सरकार से काम्पटीशन हो गया था, सेठी जी उत्सुकता से पूछते हैं कैसा काम्पटीशन ? लड़का - नोट छापने का।
 3. पत्नी-अजी सुनते हो घर पर लड़की जवान हो गई हैं पर तुम्हें चिन्ता ही नहीं है। पति- मुझे तुमसे भी ज्यादा चिन्ता है पर कोई होनहार लड़का मिले जब ना, जो भी मिलता एक दम बेकार। पत्नी-अगर मेरे पिता जी भी यही सोचते तो आप अभी तक कुंवारे रहते।
 4. डॉक्टर- तुम इस व्यक्ति को एक घंटा पहिले लाते तो शायद कुछ कहा जा सकता था। दोस्त- पर डॉक्टर साहब एक्सीडेंट अभी 10 मिनट पहिले हुआ है।
 5. भावित- मम्मी जी पापा जी के बाल कितने झड़ गये हैं कि गंजे दिखने लगे हैं। मम्मी- बेटा ये बुद्धिमानी की निशानी हैं। भावित- मम्मी मैं समझ गया कि आपके बाल इतने लम्बे घने और काले हैं।
 6. नेताजी चुनाव का फार्म भर रहे थे। फार्म में लिखा था क्या कभी गिरफ्तार हुये हों ? उन्होंने लिखा नहीं। इसके बाद अगले कॉलम में लिखा था क्यों ? नेता जी ने लिखा-क्योंकि कभी पकड़ा नहीं गया।
- जिनेन्द्र कुमार जैन, गौरीनगर इन्दौर**

संस्कार खेल

शरीर विकास के कुछ खेल

* मूर्ति

खिलाड़ियों की संख्या- 5-30

खेल वर्ग- मंडल गोले का खेल

खेल विधि- 1. सभी खिलाड़ी गोले (मंडल) में खड़े हो जायेंगे। 2. रेडी कहते ही दौड़ने लगेंगे। 3. मूर्ति कहते हुये बिना हिले डुले भगवान जी मूर्ति जैसे खड़े हो जायेंगे। 4. राम कहते हुये दो खिलाड़ी एक-दूसरे के हाथ कंधे में डालकर खड़े हो वीर महावीर सीता आदि महापुरुष तीर्थकर शब्दों की अक्षर संख्यानुसार समूह बनायेंगे। हिलने-डुलने पर अथवा शेष बचने पर खेल से बाहर हो जाते हैं।

जो अंत में अकेला बचता है, वह प्रथम स्थान प्राप्त करता है।

खेल में विकसित होने वाली क्षमतायें- 1. अनुशासन बनाने का खेल। 2. हल्का शारीरिक व्यायाम। 3. अपधान क्षमतायें बढ़ाती है।

* ऐसा करो, वैसा करो

खिलाड़ियों की संख्या- 5-50

खेल वर्ग- मंडल वृत्त बैठने/खड़े होकर खेला जा सकता है।

खेल विधि- 1. शिक्षक जो कार्य ऐसा करो कहता है तो उस कार्य को सभी खिलाड़ी करेंगे और शिक्षक वैसा करो कहेगा तो उस कार्य को किसी खिलाड़ी को नहीं करना।

2. शिक्षक अपनी आज्ञा में ऐसा करो, कहते-कहते बीच में वैसा करो कब कह देगा यह मालूम नहीं चलेगा।

3. जब वेसा करो कहने पर जो शिक्षक का अनुसरण करेगा वह खिलाड़ी बाहर हो जायेगा।

4. अंतिम तीन खिलाड़ियों में प्रथम, द्वितीय, तृतीय का निर्धारण होगा। खेल से विकसित होने वाली क्षमतायें- 1. अपधान ध्यान क्षमता बढ़ेगी। 2. आज्ञा पालन के साथ त्वरित बौद्धिक क्षमता बढ़ेगी।

बाल कहानी

मैं दुर्गा हूँ



सागर जिला में एक तीर्थ आपचंद की गुफा है। प्रकृति की सुन्दरता अद्भुत देखने को यहाँ मिलती है। यहाँ आकर हर व्यक्ति वाह कह बैठता है। हरी भरी पहाड़ी पर गुफा और नदी का मनोरम दृश्य किसे अपनी ओर नहीं खींच लेती है। सनोधा निवासी बलराम सिंह अपनी पत्नी दुर्गा बाई के साथ आपचंद दर्शन के लिये गये हुये थे साथ में उनकी छोटी वाली बेटी रेशू भी थी। रेशू बहुत अधिक सुन्दर तो नहीं थी परन्तु पढ़ने लिखने में होशियार जरूर थी अभी 10 कक्षा पास कर ली थी। अभी 15 जुलाई को रेशू का परीक्षा परिणाम आया था। बलराम सिंह को अपनी बेटी की सफलता पर बहुत खुशी हुई अतः वह आपचंद की गुफा के भगवान की पूजा करने सपरिवार गया।

जब बलराम सिंह सपत्नि भगवान की अर्चना कर रहा था तभी रेशू बाहर अकेली घूम रही थी उस समय एक मनचला युवक रेशू को आकर्षित करने के लिये हरकते कर रहा था। उसकी हरकतों को रेशू ने बहुत देर तक अनदेखा कर दिया किंतु वह आगे ही बढ़ता गया धीरे-धीरे वह अश्लील हरकतों पर उतर आया जिसे दुर्गा बाई ने देख लिया और उसने बलराम सिंह से कहा बलराम सिंह ने उस युवक को घर जाने को कहा, किन्तु वह नहीं माना, तब फिर बलराम सिंह भड़क उठे तब बलराम सिंह ने युवक की थुनाई कर दी लेकिन वह पीटने के बाद भी मुंह चलाता रहा, लिटा-लिटा कर मारा तब वह युवक चिल्लाया मुझे क्या मार रहे हो, तब दुर्गा बाई ने कहा मैं दुर्गा हूँ। तुम जैसे राक्षसों को सबक सिखाया जानती हूँ जो महिला का अपमान करेगा उसकी पिटाई होगी उसका विनाश होगा।

संस्कार गीत

मेरे वतन की भाषा



1.

मेरे वतन की भाषा हिन्दी की जग में शानी
मेरे वतन की भाषा हिन्दी की जग में शानी
इंतजार और थोड़ा है जब होगी जग की रानी

2.

माँ हिन्दी पुत्र मिलके संकल्प आज लेंगे
अंग्रेजी वतन से हम दूर कर दम लेंगे
हिन्दी है मातृ भाषा सद् कर्म शुभ निशानी

3.

निज भाषा में हस्ताक्षर सब काम हो हमारे
वो झिल विदेशी भाषा क्यों देश में हमारे
अंग्रेजी हम न बोले अब छोड़ दे नादानी

बाल कविता

खाओ खुमेनी



खाओ खुमेनी जी भर के
पाओ तंदुस्ती मन भर के
इसमें विटामिन ए.बी.सी
और विटामिन मिले के. भी
इसको जो भी खाता है
मस्त स्वस्थ हो जाता है
क्षमता रोग प्रतिरोधी है
वैज्ञानिक ने शोधी है
खायें रोज खुमेनी दो
रोग भगायें अपने वो

समाचार

दीक्षायें सम्पन्न

दमोह (म.प्र.)- आचार्य निर्भयसागर महाराज जी के करकमलों से सवाई सिंघई हुकुमचंद्र जी को क्षुल्लक दीक्षा दिनांक 6 जनवरी 2021 को दी गई जिनका नाम क्षुल्लकश्री हर्षसागर जी महाराज रखा गया।

दमोह (म.प्र.)- आचार्य निर्भयसागर महाराज जी के करकमलों से क्षुल्लक हर्षदत्तसागर जी को मुनि दीक्षा दिनांक 9 जनवरी 2021 को दी गई जिनका नाम मुनिश्री हर्षसागर जी महाराज रखा गया।

मांगीतुंगी- आचार्यश्री श्रेयसागर महाराज जी के करकमलों से श्री ऋषभ कुमार जैन इन्दौर को क्षुल्लक दीक्षा 1 जनवरी 2021 दी गयी जिनका नाम क्षुल्लक धर्मध्यानसागर जी रखा गया।

मांगीतुंगी- आचार्यश्री श्रेयसागर महाराज जी के करकमलों से क्षुल्लक धर्मध्यान सागर जी को मुनि दीक्षा 14 जनवरी 2021 दी गयी जिनका नाम मुनिश्री धर्मध्यानसागर जी रखा गया।

मवाना (उ.प्र.)- आचार्य श्री भारतभूषण जी महाराज के करकमलों से श्रीमती पद्मश्री जैन को क्षुल्लिका दीक्षा 15 जनवरी 2021 को दी गई जिनका नाम क्षुल्लिका भक्तिभूषणमती माताजी रखा गया।

खांदू कॉलोनी बांसवाड़ा- आचार्यश्री विभवसागर जी महाराज के करकमलों से शाह श्री कन्हैयालाल जी गबीरचंद जी अर्थूना वालों को मुनि दीक्षा 24 जनवरी 2021 को दी गई जिनका नाम मुनि श्री बाहुबली सागर जी महाराज रखा गया।

आगामी दीक्षायें

दमोह-आचार्य श्री निर्भयसागर जी महाराज के करकमलों से पंचकल्याणक के अवसर पर दिनांक 14 फरवरी 2020 को ब्र. दर्पण भैया को जेनेश्वरी दीक्षा दी जावेगी।

परतापुर- आचार्य श्री विभवसागर जी महाराज के करकमलों से ब्र. अभिनंदन भैया टीकमगढ़ को 14 फरवरी 2020 को जेनेश्वरी दीक्षा दी जावेगी।

समाधिमरण

द्रोणगिरि (छतरपुर म.प्र.)- आचार्य श्री पारससागर जी महाराज का समाधिमरण 26 दिसम्बर 2020 को श्री सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि छतरपुर म.प्र. में 12.51 मिनट पर हुआ।

दमोह- मुनिश्री हर्षदत्तसागर महाराज जी का समाधिमरण 9 जनवरी 2021 को प्रातः 9.40 पर आचार्यश्री निर्भयसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में समाधिमरण हुआ।

बोलखेड़ा राजस्थान- आचार्य श्री वसुनंदी महाराज के ससंघ सान्निध्य में उनकी ही शिष्या आर्यिका श्री भव्यनंदिनी माता जी का समाधिमरण 5 जनवरी 2021 को प्रातः 1.12 मिनट पर हुआ।

जबलपुर- आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी की शिष्या आर्यिका श्री सत्यार्थमति माताजी का समाधिमरण 3 जनवरी 2021 को रात्रि 8.30 बजे आर्यिका श्री दृढ़मति माताजी के ससंघ सान्निध्य में हुआ। मुनि श्री प्रमाणसागर जी तथा मुनि श्री अरहसागर महाराज का संघ भी यही विराजमान था।

बेलगाम कर्नाटक- आचार्य वर्धमान सागर जी महाराज के ससंघ सान्निध्य में उनकी शिष्या आर्यिका श्री पूर्वमति माताजी का समाधिमरण 31 दिसम्बर 2020 को प्रातः 8.20 पर हुआ।

मांगीतुंगी- मुनि श्री धर्मध्यानसागर महाराज जी का समाधिमरण 14 जनवरी 2021 को दोप. 3.26 बजे हुआ। इस समय आचार्य श्री ज्ञेयसागर महाराज जी ससंघ विराजमान थे।

दमोह- आचार्यश्री निर्भयसागर महाराज जी के गृहस्थ अवस्था के पिता मुनि श्री हर्षदत्तसागर महाराज का समाधिमरण 9 जनवरी 2021 को ससंघ सान्निध्य में हुआ।

मवाना- आचार्य श्री भारतभूषण महाराज जी की शिष्या क्षुल्लिका भक्तिभूषण माताजी का समाधिमरण 21 जनवरी 2021 को हुआ।

खांदू कॉलोनी बांसवाड़ा- आचार्य श्री विभवसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में उनके ही शिष्य मुनि श्री बाहुबली सागर महाराज का समाधिमरण 24 जनवरी 2021 को दोप. 11.40 पर हुआ।

जैन विद्या संस्कार शिक्षण शिविर सम्पन्न

सागर- श्री महावीर दिगम्बर जैन मंदिर वर्धमान कॉलोनी सागर में एलक श्री सिद्धांत सागर महाराज जी के सान्निध्य में 3 जनवरी से 12 जनवरी तक जैन विद्या संस्कार शिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ। जिसमें संस्कार सागर पत्रिका के प्रधान सम्पादक ब्र. जिनेश मलैया, ब्र. विवेक भैया, ब्र. अजय भैया तथा ब्र. किरण दीदी, ब्र. सुषिमा दीदी, ब्र. सुगन्धी

दीदी, ब्र. मोना दीदी, ब्र. पूजा दीदी आदि ने प्राथमिक प्रथम, छहढाला तथा तत्त्वार्थ सूत्र का अध्ययन कराया। शिविर में दस कक्षाएँ लगायी गयी प्रतिदिन प्रातः पूजन प्रशिक्षण प्रार्थना कक्षा तथा दोपहर में प्रार्थना, संस्कारों पर प्रवचन, कक्षा तथा सांय 6.30 बजे आचार्य भक्ति, संस्कार कक्षा, कक्षा के बाद, सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रतिदिन किये जाते थे। जिसमें प्राथमिक प्रथम मौखिक में क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय-ऋषीका स्वप्निल जैन, प्रकृति संजय जैन, अदिती सतीश जैन। भैयाओं में मौखिक में क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय - भैया उर्व विजय जैन, भैया तेजस नीरज जैन, भैया सर्वज्ञ शरद जैन। प्राथमिक प्रथम लिखित में क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय-बहन सुहानी आशीष जैन, पूर्वी एकान्त जैन, पूर्वी प्रवीण जैन। प्राथमिक प्रथम लिखित में क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय भैया आयुष जैन, भैया वासु जैन, भैया भव्य जैन। छहढाला में क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय - भैया मोहित, भैया अर्पित, भैया प्रिंस। बहन-दिव्या, बहन अशिका, बहन स्वीटी, बहन ईशिका। श्रीमती राजुल, श्रीमती संस्कृति, श्रीमती साधना। श्रीमती जीवन यशा, श्रीमती पुष्पा, श्रीमती वंदना। तत्त्वार्थ सूत्र में क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय - बहन शिक्षा, बहन दीक्षा, बहन रानी। श्रीमती मनीषा, श्रीमती मंजुषा, श्रीमती रेखा जैन ने स्थान प्राप्त किया। मैन ऑफ द शिविर का पुरस्कार-बहन पूर्वी एकान्त जैन, बहन ईशिका अरविन्द शास्त्री, श्रीमती राजुल अनिल जैन को प्राप्त हुआ।

अखिल भारतीय संस्कार सागर परीक्षा माह : फरवरी 2021 रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिये

01. कालजयी है वह मृत्यु को भी जीत लेती है।
02. आत्मा ही अपना..... हैं, उसमें ही रहना चाहिये।
03. आत्म-वैभव के सामने दुनियाँ के वैसे ही हैं, जैसे रत्न के सामने तृण।
04. आत्मा को प्रकाशित करने के लिये अन्य पदार्थ की आवश्यकता नहीं पड़ती, आत्मा स्वयं प्रकाशी है।
05. आत्मा का ज्ञान..... जैसा है, उसे हऊआ मत बनाओ।
06. आत्मतत्त्व रूपी..... को देखने के लिये अन्य दीपक की कोई जरूरत नहीं पड़ती।
07. आत्मतत्त्व की ओर जाते ही संसारगत सारी बातें सी लगने लगती हैं।
08. बाह्य संसार को भूले बिना भीतर आत्मतत्त्व का सही..... नहीं आ सकता। आनंद
09. आत्मा हवा के समान हैं और शरीर गुब्बारा हैं, ... के कारण गुब्बारे में हलन-चलन होती है।
10. में आसक्त व्यक्ति कभी शरीर में आसक्त नहीं हो सकता।
11. आत्मा की शक्ति कर्मों की शक्ति से बलजोर है तो को पुरुषार्थ करना चाहिये।
12. जैसी भावना शरीर के प्रति है वैसी ही आत्मा के प्रति हो जावे तो..... पूर्ण हो जायेगी।
13. आत्मतत्त्व की अनुभूति के लिये..... की आवश्यकता नहीं है। शब्दोच्चारण
14. से वंचित होते हैं तभी हम कषाय करते हैं।
15. विराट स्वरूप सभी में विद्यमान है मात्र..... की आँखें खोलने की आवश्यकता है।
16. स्वयं की चिकित्सा करने वाला ही सही माना जाता है।
17. तत्त्व चिंतन से कभी भी..... पास नहीं आता।
18. जिसका हमें होता है, वहीं अपना है बाकी सब सपना है।
19. आत्मा की बात ही नहीं करते बल्कि आत्मा से बात भी करते हैं।
20. लौटने का नाम..... हैं, भागने का नाम ज्ञान है।
21. अध्यात्म में का काम होता है और दर्शन में मात्र देखने का काम होता है।
22. संसार में सबसे महत्त्वपूर्ण तो आत्म..... है इसी में आनंद का अनुभव होता है।
23. स्व को पहचानने वाला अपना..... कर लेता है।
24. अध्यात्म में सहानुभूति की नहीं बल्कि..... की बात होती है।
25. में आत्म विश्वास महत्त्वपूर्ण है, इसी के आधार पर अंक मिलते हैं।

26. की आराधना में लीन होने वाले को ही आत्मानुभूति होती है।
27. आत्मानुभूति स्मरण और श्रवण का विषय नहीं है, मात्र का विषय है।
29. अध्यात्म में संतोष रहता है क्योंकि वह नहीं होता।
30. संवेदन का प्रदर्शन के माध्यम से नहीं किया जा सकता।
31. बारहवें गुणस्थान तक रखना होता है, उसके बाद आत्मा की अनुभूति होती है, मार्ग में अनुभूति नहीं होती।
32. आत्म साक्षात्कार के बिना जीवन व्यर्थ है।
33. आत्मा के स्वभाव के अनुरूप चलाना ही कहलाता है।
34. को अच्छे ढंग से जानने वाला ही व्यवहार कुशल हो सकता है।
35. के बिना शिष्य और शीशी का भविष्य ही क्या ?
36. आज्ञा देना आज्ञा पालने से भी कार्य है ?
37. परमेश्वर भी आज्ञा सम्यक्त्व होते हैं ।
38. बार-बार उपदेश सुनने के बाद भी यदि आपको नहीं आता है तो समझना चाहिये कि आपके ऊपर आशा-तृष्णा रूपी देवी की कृपा है।
39. आशाओं की पूर्ति के लिये घर बस जाता है और की तरह यह जीव फंस जाता है।
40. चाह के रहते हुये प्राप्त नहीं हो सकता।
41. निर्यापक मुनिश्री समयसागर जी महाराज की पिच्छी किसको प्राप्त हुई।
42. आर्यिका श्री गुणमति माताजी की पिच्छी किसको प्राप्त हुई।
43. आर्यिका श्री दृढमति माताजी की पिच्छी किसको प्राप्त हुई।
44. निर्यापक मुनिश्री योगसागर महाराज जी की पिच्छी किसको प्राप्त हुई।
45. मुनिश्री अक्षयसागर महाराज जी की पिच्छी किसको प्राप्त हुई।
46. मुनिश्री विमलसागर महाराज जी की पिच्छी किसको प्राप्त हुई।
47. शंशाक (शालू भैया) खिमलासा को मुनि दीक्षा कब और कहा हुई और उनका नाम क्या रखा गया।
48. प्रियंका दीदी खरगापुर को आर्यिका दीक्षा कब और कहा हुई और उनका नाम क्या रखा गया।
49. ब्र. अभिनंदन भैया को मुनि दीक्षा कब और कहा दी जायेगी।
50. आचार्य श्री पारससागर महाराज जी का समाधिमरण कब और कहा पर हुआ।

40 प्रश्न मुनि श्री कुंथुसागर जी महाराज द्वारा लिखित परमार्थ देशना के आत्मा, आत्महित, आत्मतत्व, आत्मानुभूति, आत्मानुशासन, आज्ञा, आशा एवं 10 प्रश्न संस्कार सागर जनवरी अंक से लिये गये हैं।

अखिल भारतीय संस्कार सागर परीक्षा: फरवरी 2021 प्रश्न पत्र भरकर भेजने की अंतिम तिथि माह की 25 तारीख रहेगी

नाम स्थान

उम्र सदस्यता क्र.

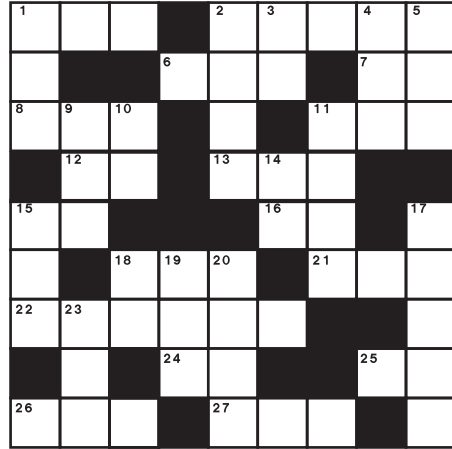
पूर्ण पता

पिन कोड फोन नं. (एस.टी.डी.)

1	2	3	4	5
6	7	8	9	10
11	12	13	14	15
16	17	18	19	20
21	22	23	24	25
26	27	28	29	30
31	32	33	34	35
36	37	38	39	40
41	42	43	44	45
46	47	48	49	50

आपके नगर के संवाददाता का नाम हस्ताक्षर
नियम :- जब तक दूसरा प्रश्न-पत्र भरकर नहीं भेजते तब तक के लिए।

वर्ग पहेली 258



ऊपर से नीचे

1. आचार्य महावीर एक नाम -3
2. आवारा, बेसहारा -4
3. पहर मृत्यु का देवता -2
4. समुद्र, नीर निधि -3
5. दया करूणा (उर्दू) -3
9. काला फल, जम्बू -3
10. भस्म -2
11. वह पत्थर जिससे आग निकलती हो -4
14. विचार, अभिमत -2
15. भवन, इमारत -3
17. सागर के बंजारा झील का एक घाट -5
18. अन्न का टुकड़ा -2
19. श्मशान -3
20. करीण, करीब -4
23. भार -3

बायें से दायें

1. समानता का भाव, बराबरी का भाव -3
2. आचार्य कुंदकुंद देव द्वारा रचित एक ग्रंथ -5
6. विश्राम -3
7. ग्रहण करो का भाव -2
8. चंद्रप्रभ देव का राजस्थानी एक तीर्थ -3
11. अन्तिम आखिरी -3
12. मुँह, प्रधान -2
13. चमक, तेज, प्रकाश -3
15. चित्त, अंतरकरण -2
16. अंधकार, अंधेरा -2
18. जलज, नीरज, सरोजा -3
21. सोने स्वर्ण -3
22. जम्बूद्वीप को घेरने वाला समुद्र -6
24. गगन, आकाश -2
25. एक नक्षत्र नाम -2
26. पति की बहिन -3
27. नभ, आकाश -3

वर्ग पहेली 257 का हल

1 दी	2 न	3 द	4 या	5 ल	6 उ	7 पा	8 ध्या	9 य
7 वा	र		ग		षा		न	म
र		9 अ	म	10 द		10 स		
	12 आ	खं	ड	ल		13 म	14 हि	15 मा
16 भू	मं	ड	ल		17 अ	व	सा	न
18 प	ग			18 ए श		19 स	र	स
20 ति	व		21 अ	व	22 स	र		रो
		23 शा	म		24 ज	ण		व
25 सु	र	न	र		ग		26 ड	र

.....सदस्यता क्र.

पता :

वर्ग पहेली प्रतियोगिताओं के विजेताओं को हरसाहमल सत्येन्द्रकुमार जैन (गोकुल बाजार, रेवाड़ी, हरियाणा) की ओर से पुरस्कृत किया जाएगा। प्रथम पुरस्कार : 101 रु. द्वितीय पुरस्कार 51 रु., तृतीय पुरस्कार 41 रु.) प्रतियोगिता भरकर भेजने की अंतिम तिथि माह की 25 तारीख रहेगी

समस्या पूर्ति
प्रतियोगिता

दाने दाने में



नियम

१. आपको चार से छः पंक्तियों की एक छंदबद्ध या छंदमुक्त तुकांत कविता लिखनी है, जिसके अंत में उपरोक्त शब्द आने चाहिये।
२. समस्या पूर्ति पोस्टकार्ड पर ही लिखकर भेजें।
३. पुरस्कार राशि : प्रथम पुरस्कार १५१ रु., द्वितीय ५१ रु., तृतीय २५ रु.
४. पोस्टकार्ड भेजने की अंतिम तिथि माह की १५ तारीख है।

जैन विद्या संस्कृति प्रश्न मंच
पुरस्कार वितरण समारोह

दिनांक : 10 जनवरी 2021 * सात्रिध्यः एलक श्री सिद्धांतसागर जी महाराज

वर्धमान कॉलोनी, सागर (म.प्र.)

* प्रथम *

* द्वितीय *

* तृतीय *



वैशाली जैन
इन्दौर

1,00,000/-
रुपये तथा शील्ड

गजेन्द्र जैन, गिन्नी गुप
इन्दौर की ओर से

मौली जैन
ललितपुर

51,000/-
रुपये तथा शील्ड

आजाद मोदी, मोदी प्रिंटर्स
इन्दौर की ओर से

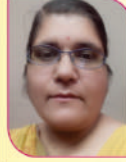
समता जैन
इन्दौर

31,000/-
रुपये तथा शील्ड

नीरज जैन, गजेन्द्र पब्लिकेशन
दिल्ली की ओर से

चयन परीक्षा में 1500 में से 1500 अंक प्राप्त करने वाले पांच प्रतिभागी थे। जिनमें से ड्रॉ के माध्यम से प्रथम द्वितीय तृतीय स्थान का चयन किया गया बाकी दो प्रतिभागियों को सान्त्वना पुरस्कार में शील्ड दी गयी। बाकी सभी प्रतिभागियों को सान्त्वना पुरस्कार दिया गया।

प्रथम



वैशाली जैन, इन्दौर

1,00,000/- रुपये तथा शील्ड

प्रथम पुरस्कार गजेन्द्र जैन, गिझी गुप
इन्दौर की ओर से



द्वितीय



मौली जैन, ललितपुर

51,000/- रुपये तथा शील्ड

द्वितीय पुरस्कार आजाद मोदी, मोदी प्रिंटर्स
इन्दौर की ओर से



तृतीय



समता जैन, इन्दौर

31,000/- रुपये तथा शील्ड

तृतीय पुरस्कार नीरज जैन, गजेन्द्र पब्लिकेशन
दिल्ली की ओर से



सान्त्वना



शिखा जैन, मंडावरा

शील्ड से सम्मानित किया



सान्त्वना



श्रीमती रिमता जैन, ललितपुर

शील्ड से सम्मानित किया



संस्कार सागर वडिप सिर्फ एक **CLICK पर** www.sanskarsagar.org

सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008

प्रिंटिंग दिनांक 29/01/2021, पोस्टिंग दिनांक : 03/02/2021